ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

संधारणीय कृषि और ग्रामीण विकास की चुनौतिया एवं संभावनाएं – एक विश्लेषण

Mk- vkj- d- vkpk;
प्राचार्य, एम.जी.पी.जी. कॉलेज, करेली, अधिष्ठाता, वाणिज्य, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि है। सरकार ने अब मानना शुरू किया है कि देश का आर्थिक विकास ग्रामीण एवं कृषि के वगैर संभव नहीं हैं। इसलिए वर्ष 2022 तक किसान की आय दोगुनी करने का लक्ष्य रखा गया है। कृषि का महत्व आर्थिक कारणों से ही है आज भी देश की कुल जी. डी. पी. में कृषि का 16 प्रतिशत एवं रोजगार में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है। गत् वर्षो में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, राष्ट्रीय कृषि अनुशंधान और कृषि वैज्ञानिकी किसानों की आय बढ़ाने के उपायों पर विचार कर रहे है। प्रकृति पर निर्भरता के कारण खेती सदैव ही एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। भारत कृषि सबृद्धि की अस्थिरता में समय के साथ–साथ काफी कमी आई है। 1960 और 2004 के बीच 6.3 प्रतिशत के मानक विचलन से 2004 में 2.9 प्रतिशत हुई है। इस सबके वाबजूद आज भी कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की केन्द्र बिन्दु व भारतीय जीवन की घुटी है। आर्थिक जीवन का आधार, रोजगार का मुख्य स्त्रोत एवं वैश्विक मुद्दा अर्जन का माध्यम होने के कारण देश की आधारशिला कृषि को कहा जाता है। लेकिन वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में कृषि को व्यवहार्य व्यवसायों में प्रवेश करने एवं निर्माण में सहभागिता के लिए कठिन माना जा रहा है। भूमि और बाजारों तक सीमित पहुंच, हाईपर भूमि मूल्य, मुद्रा स्वीकृति, उच्च इनपुट लागत, तेजी से अप्रत्याशित और अधिक बदलते मौसम की परिस्थितियां और पर्याप्त तकनीकी नेटवर्क की अनुपलब्धता ने कृषि उद्यमियों के सामने अनेकों बाधाएं खड़ी की है।

कृषि की मूल अवधारणा में सूर्य, वायु, मिट्टी, पोषक तत्व और पानी हैं। इनमें पानी, मिट्टी, पोषक तत्व पर किसान का हस्तक्षेप सर्वाधिक रहता है। सूर्य और वायु पर अभी प्रयोग अत्यल्प रूप में है। आने वाले वर्षो में खेती के स्वरूप की वैज्ञानिक पद्धति जिसमें विविधतापूर्ण अर्थ आधारित कृषि, ग्रामीण जीवन स्तर को उच्च स्तर पर ले जाने की सामाजिक संरचना एवं प्रकृति की विद्धमान और आने वाली कठिनाईयों पर विजय पाना तथा रासायनिक एवं भौतिक कृषि के कारण मानवीय संसाधन एवं स्वास्थ्य को सुधार की ओर ले जाना आदि प्रयास गंभीर चुनौतियां है। शारीरिक, आर्थिक, पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक आयामों को पहचानने एवं उनमें स्थिरता तथा संधारणीय कृषि, जो कि पादप एवं जानवरों के उत्पादन की समन्वित प्रणाली को आने वाले दो दशकों में पर्यावरणीय सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर प्रयोग की आवश्यकता है।

भारत सरकार की राष्ट्रीय कृषि में 2020 तक 4 प्रतिशत सालाना कृषि विकास का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें मुख्यतः तीन कारकों प्रौद्योगिकियों, वैश्वीकरण तथा बाजार को केन्द्र में रखा गया है। लेकिन इनको पाने के लिए भविष्य के शोध और शिक्षा को अभी तक कृषि क्षेत्र के लिए तय नहीं किया गया हैं। यह चिन्तनीय है। देश के कृषि उत्पादों की मांग के साथ तालमेल तथा दीर्धकालीन उत्पादन लक्ष्यों को सुनिश्चित करने की आवश्यकता और लाभदायकता महत्वपूर्ण है। कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने खाद्ध सुरक्षा सुनिश्चित करने और उद्योग एवं सेवाक्षेत्रों के विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विकास की यह प्रक्रिया, अन्य बातों के साथ–साथ सकल मूल्य वर्धन (जीबीए) में कृषि के गिरते हिस्से में परिणित होती है, जो भारत में भी देखी जा रही है। कृषि में संरचनागत परिवर्तनों के चलते, उत्पादकता में सुधार लाने और सतत् विकास के अवसरों के लिए कृषि से संबंधित क्रियाकलापों को व्यापक बनाने की कड़ी संभावनाएं हैं।

कृषि और सहबद्ध क्षेत्रों की विकास दरों में उतार चढ़ाव होता रहा है जो 2012–13 में 1.5 प्रतिशत, 2013–14 में 5.6 प्रतिशत, 2014–15 में (–)0.2 प्रतिशत, 2015–16 में 0.7 प्रतिशत और 2016–17 में 4.94 प्रतिशत रहा। इस सबका मूल कारण भारतीय कृषि वर्षा पर आश्रित रहती है। जो उत्पादन जोखिमों को बढ़ा देता है। देश ने 2016–17 में 275.7 बिलियन टन के स्तर पर खाद्यान का रिकार्ड उत्पादन हासिल किया जो 2013–14 में खाद्यान के पिछले रिकार्ड उत्पादन की तुलना में 10.6 मिलियन टन अधिक रहा।

कृषि अनुसंधान और विकास, नवाचार का मुख्य स्त्रोत होता है जो दीर्घावधि में सतत् कृषि उत्पादकता बृद्धि को बनाए रखने के लिए आवश्यक है। डी.ए.आर.आई./आई.सी.ए.आर. का वास्तविक वाय जो 2010–11 में 5393 करोड़ रूपये था, से बढ़ाकर 2017–18 में 6800 करोड़ रूपये (ब.अ.) हुआ है। अर्थात् सरकार के ध्यान में कृषि क्षेत्रों में शोध को बढ़ावा देने के लिए प्रचारकों में बढ़ोत्तरी हुई है। भारत कृषि क्षेत्र, संरचनात्मक परिवर्तनों का अनुभव कर रहा है जो नई चुनौतियों और अवसरों को खोल रहा हैं। सरकार ने कृषि विपणन क्षेत्रों में कई सुधार कार्य किए है। फिर भी कृषि और सम्बद्ध क्षेत्र का रूपान्तरण, मूल्य व्यापार, जलवायु स्मार्ट कृषि का अंगीकरण, छोटे, सीमान्त और महिला किसानों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है तभी भारत में समावेशी आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र, व्यापक आधार वाले विकास का इंजन बन सकेगा जो कि असमानताओं को कम करेगा और खाद्ध सुरक्षा के साथ आर्थिक संबल का मुख्य स्त्रोत बनेगा।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

Hkkjrh; vFk0;oLFkk ij vkfFkd mnkjhdj.k d vudy iHkko

Mk- lt; frokjh
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, नवयुग कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

विश्व के बदलते आर्थिक परिदृश्य के साथ कदमताल करने वाले भारत ने आर्थिक उदारीकरण की शुरूआत 1991 में की। वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण को प्रारंभ हुए डेढ़ दशक से अधिक का समय पूरा हो चुका हे। इस दौरान अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संरचनात्मक बदलाव किए जा चुके हैं। आर्थिक उदारीकरण के प्रारंभ में अर्थव्यवस्था पर सबसे अच्छा प्रभाव तात्कालिक 1991 के खाड़ी युद्ध से उपजे आर्थिक संकट से निपटना रहा। अर्थव्यवस्था के जिन क्षेत्रों में आर्थिक सुधारों को लागू किया गया, उन सभी में इसका प्रभाव स्पष्ट रू से नजर आया। वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण के प्रभावों पर बारीकी से दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि अर्थव्यवस्था का तीव्र विकास उदारीकरण की बड़ी उपलब्धि है। आज भारत की अर्थव्यवस्था की गिनती विश्व में सबसे तेज गति से विकास करने वाली अर्थव्यवस्था में होती है। भारत दुनिया का चौदहवां सबसे अमीर देश है। विश्व के सभी विकसित देश भारत में निवेश भी विश्व के अनेक देशों में तेजी से बढ़ रहा है। ब्रिटेन में भारत दूसरा सबसे बड़ा निवेशक देश है। भारत के उद्योगपति अन्य देशों में बड़ी कंपनियों का अधिग्रहण करने लगे हैं। उदारीकरण की उपलब्धियों के कारण भारत के निकट भविष्य में विकसित देश बनने की संभावना बल पकड़ने लगी है। इन सबके बावजूद आज भी अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्र उपेक्षित हैं। आर्थिक उदारीकरण से लाभान्वित नहीं होने वाले क्षेत्रों में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रमुख है। भारत की अधिकांश जनसंख्या इन्हीं क्षेत्रों पर निर्भर है, किंतु आर्थिक उदारीकरण का इन क्षेत्रों पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ने के कारण इनसे संबंध क्षेत्र और लोग विका की दृष्टि से समृद्ध नहीं हो सके हैं। ग्रामीण परिवेश का समृद्ध क्षेत्र नहीं होना बीता है अभी भी इन क्षेत्रों की ओर ध्यान केंद्रित कर इन्हें उदारीकरण से जोड़ा जा सकता है। दिसम्बर, 2006 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने आर्थिक और क्षेत्रीय विषमता को कम करने की दिशा में पहल की है, यह कार्य तभी संभव है जब देश है कि आर्थिक उदारीकरण से सभी राज्य समान रूप से लाभान्वित नहीं हो सके हैं। मध्यप्रदेश जैसे कई राज्य ऐसे हैं जो आज तक भी उदारीकरण के लाभों के लिए प्रतीक्षारत हैं। सार रूप में देखें तो डेढ़ दशक की समयावधि में अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्र आर्थिक उदारीकरण से प्रभावित हुए हैं। भारत की अर्थव्यवस्था पर आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव इस प्रकार हैं –

vFk0;oLFkk ij mnkjhdj.k d vudy iHkko %&

आर्थिक उदारीकरण के प्रारंभिक वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था चौराहे पर खड़ी थी। उदारीकरण से जिन संभावनाओं की अधिक उम्मीद थी, उनके आसार नजर नहीं आ रहे थे। यह तो मानना पड़ेगा कि भारत विश्व के बड़े बाजारों में एक है। विश्व की अर्थव्यवस्था में इसका प्रमुख स्थान प्राकृतिक और मानव संसाधनों की बहुलता के कारण है। तत्कालीन अमरीकी वाणिज्य मंत्री विलियम डेली के अनुसार इक्कीसवीं शताब्दी में भारत विश्व की एक आर्थिक ताकत बन जाएगा। बिल क्लिंटन प्रशासन ने भारत को दुनिया के दस सबसे बड़े उभरते बाजारों में से एक बताया। भारत इक्कीसवीं शताब्दी में आर्थिक शक्ति बनने की दहलीज पर खड़ा है। बशर्ते वह उचित नीतियों का निर्धारण कर सके।

आर्थिक उदारीकरण लागू किए जाने के बाद उनके बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में प्रवेश कर चुकी हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियां आर्थिक रूप से सुदृढ़ होती है। ये कंपनियां चंद विकसित राष्ट्रों की देन हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियां विकासशील राष्ट्रों का मनमाना शोषण करने से नहीं चूकती हैं। आज भारतीय उद्योगपति बहुराष्ट्रीय कंपनिया से प्रतिस्पर्द्धा करने की स्थिति में नहीं है। इसी कारण कई क्षेत्रो में भारतीय उद्योग धीरे–धीरे बंद हो रहे हैं। जो प्रतिस्पर्द्धा में नहीं टिक पाने के कारण घाटे की समस्या से ग्रसित हैं, वे बहुराष्ट्रीय कंपनियों से समझौता करने के लिए मजबूर है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से भारत की अर्थव्यवस्था कड़ी प्रतिस्पर्द्धा, बेरोजगारी, स्वदेशी उद्योगों के आस्तित्व का संकट, उपभोक्ताओं का शोषण, विदेशों को धन प्रोण, पुरानी तकनीक का हस्तांतरण, क्षेत्रीय असंतुलन आदि समस्याओं से घिर गई है। इन समस्याओं से निपटने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित करना होगा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों को ऐसे क्षेत्रों में ही आमंत्रित करना चाहिए

जिनकी तकनीक भारत में उपलब्ध नहीं हो। उपभोक्ता वस्तु उद्योग के क्षेत्र में कंपनियों के प्रवेश पर रोक लगनी चाहिए।

आर्थिक सुधारों से क्षेत्रीय विषमता की समस्या जोर पकड़ने लगी है। अधिकतर विदेशी पूंजी निवेश महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों तक ही सीमित रहा है। उदारीकरण के दौर में सार्वजनिक निवेश तो सर्वत्र कम होता जा रहा है। देश के कई राज्य स्वयं भी असंतुलित विकास के शिकार हैं। असंतुलित विकास से जन असंतोष की भावना पनपती है। आर्थिक सुधारों से गरीबी दूर करने में मदद नहीं मिली है। उल्टे बेरोजगारी के बढ़ने से गरीबी की समस्या गंभीर हो गई है। गांवों में गरीबी की समस्या अधिक जटिल है। नए फार्मूले के अनुसार वर्ष 1993–94 में 35.97 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन बसर के लिए अभिशप्त थे। आर्थिक सुधारों के दौर में ग्रामीण परिवेश में पूंजी निवेश में वृद्धि नहीं हुई, जबकि बड़ी आबादी आज भी गांवों में ही रहती है। उनकी सुध लिए बिना भारत की खुशहाली संभव नहीं है।

भारत विश्व का बड़ा ऋणी देश है। भारत पर कुल विदेशी ऋण वर्ष 1990 में 75.8 अरब डॉलर था जो बढ़कर 1995 में 99 अरब डॉलर तक जा पहुंचा। आर्थिक उदारीकरण के दौर में भारत की अर्थव्यवस्था राजनीतिक अस्थिरता का भी शिकार हुई। बार–बार केंद्र में सरकारों के बदलने के वित्तीय भार जनता पर पड़ा। राजनीतिक अस्थिरता का अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ा। बीच में आर्थिक सुधारों की गति धीमी पड़ी। पूंजी बाजार मंदी का शिकार हुआ तथा रूप्या डॉलर के मुकाबले टूटा। देश की औद्योगिक विकास दर वर्ष 1995–96 में घटकर केवल 6.7 प्रतिशत रह गई। निर्यात क्षेत्र को भी धक्का लगा। देश का निर्यात 20 प्रतिशत से घटकर 4 प्रतिशत पर आ गया। उपभोक्ता वस्तु उद्योगों की प्रगति दर तेजी से गिर गई। निर्माण क्षेत्र में भी वृद्धि दर धीमी हुई।

भारत की अर्थव्यवस्था वर्ष 1990–91 में ऋणों में वृद्धि से उत्पन्न आर्थिक संकट से चरमरा उठी थी। भारत का विदेशी मुद्रा भण्डार रसातल तक पहुंच गया था। आर्थिक स्थिति इस कदर बिगड़ गई थी कि अनेक महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय स्थगित करने पड़े। भुगतान संतुलन को ठीक करने के लिए हमें मजबूरन संचित स्वर्ण विदेशों में गिरवी रखना पड़ा।

संकट से निपटने के लिए आर्थिक सुधारों को लागू करना आवश्यक हो गया। देश में जुलाई 1991 से आर्थिक सुधारों की शुरूआत की गई। आर्थिक सुधारों को लागू किए डेढ़ दशक से अधिक हो चुका है। आर्थिक सुधारों का महत्वपूर्ण चरण पूरा हो चुका है। आर्थिक सुधारों का दूसरा चरण भी गति पकड़ चुका है। आर्थिक उदारीकरण के प्रारंभ में डॉ. मनमोहन सिंह ने राव सरकार में वित्त मंत्री के रूप में आर्थिक सुधारों के परिचायक बजट लोकसभा में पेश किए बाद की सरकारों ने भी आर्थिक सुधारों को गति दी।

उदारीकरण के वर्षों में भारत ने विषम आर्थिक स्थिति से निपटने के लिए अर्थव्यवस्था में संरचना संबंधी मूलभूत बदलाव किए। जुलाई 1991 में भारतीय रूपये का अवमूल्यन किया गया। रूपये को विश्व की प्रमुख मुद्राओं तथा पौण्ड, स्टर्लिंग, अमरीकी डॉलर, जर्मन मार्क, जापानी येन, फ्रांक के मुकाबले सस्ता किया गया। यह गंभीर कदम विदेशी मुद्रा जुटाने तथा निर्यात बढ़ाने के लिए उठाया गया। इससे पूर्व भारत ने सन 1949 और 1966 में रूपये का अवमूल्यन किया था।

rLdjh ij jkd %& भारत सरकार ने 6 महीने विदेश में रहने के बाद भारत लौटे रहे किसी भी भारतीय नागरिक को अधिकतम 100 किलोग्राम चांदी के आयात पर 500 रूपये प्रति किलोग्राम की दर से विदेशी मुद्रा में सीमा शुल्क का भुगतान करना तय किया। सरकार के इस निर्णय से चांदी की तस्करी कम हुई। अप्रवासी भारतीयों को दी जाने वाली रियायतों में वृद्धि की गई। अप्रवासी भारतीयों की जमा राशि पर ब्याज दर में वृद्धि की गई। भारत में रोजगार के लिए लौटने वाले अप्रवासी भारतीयों को फैरा के तहत विदेशी मुद्रा से अपने खाते या संपत्ति की घोषणा की जरूरत नहीं है। स्थायी रूप से लौटने वाले अप्रवासी भारतीयों को किसी भी बैंक में किसी भी सीमा में विदेशी मुद्रा में खाता खोलने की सुविधा है। वर्ष 1992–93 के केंद्रीय बजट में विदेश से लौट रहे अप्रवासी भारतीयों को प्रति यात्री 5 किलोग्राम सोना लाने की छूट दी गई। इस निर्णय से सोने की तस्करी कम हुई।

औद्योगिक नीति में क्रांतिकारी बदलाव किया गया है। आर्थिक संविधान समझी जाने वाली सन 1956 की औद्योगिक नीति को बड़ी सीमा तक इतिहास के हवाले कर दिया गया है। लाइसेन्स राज समाप्त करने के कदम उठाए गए, जिसने अब ज्यादातर उद्योगों के

लिए लाइसेंस की आवश्यकता नहीं रही। प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश की सीमा में वृद्धि की गई। उच्च प्रौद्योगिकी के निर्धारित क्षेत्रों में शत–प्रतिशत विदेशी इक्विटी का प्रयोग किया जा सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का दायरा सिमट गया है। अब देश के उद्योगों के समक्ष आधुनिक व गतिशील अर्थव्यवस्था की चुनौती की स्थिति बनी है। व्यापार नीति में भी व्यापक बदलाव किया गया है। उदारीकरण के प्रारंभ में पहली बार 1992–97 के लिए दीर्घावधि आयात–निर्यात नीति की घोषणा की गई। इसमें कई वस्तुओं के आयात पर रोक लगा दी गइ। अब निर्यातक निर्यात संवर्द्धन के उद्वेश्य से कतिपय सामानों का ही आयात कर सकते हैं।

पूंजी बाजार में बड़े निवेश को आकर्षित करने के लिए सूचीबद्ध कंपनियों में भारतीय प्रवर्तकों को अंश पूंजी को आम निवेशकों से जुटाया जाएगा। देश के प्राथमिक और द्वितीयक पूंजी बाजार को विदेशी संस्थागत निवेशकों के लिए खोल दिया गया है।

आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत में थोक मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति लगभग नियंत्रण में रही। आर्थिक सुधारों से पूर्व तीव्रता से बढ़ी मुद्रास्फीति से मध्यम वर्ग तक चपेट में आ गया था। आज भारत में मुद्रास्फीति विश्व में तुलनात्मक रूप से कम तो है लेकिन फुटकर मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रास्फीति अधिक बनी हुई है, इसलिए देश के बहुसंख्यक गरीब महंगाई की मार नहीं झेल पा रहे हैं। आर्थिक सुधारों के दौरान राजकोषीय घाटे को सीमित करने का प्रयास किया गया। राजकोषीय घाटा सन 1990–91 में सकल घरेलू उत्पाद का 8.3 प्रतिशत था, जो 1992–93 में 5.7 प्रतिशत रह गया, लेकिन यह 1993–94 में बढ़कर 7.4 प्रतिशत और 1994–95 में 6.1 प्रतिशत रहा।

सकल घरेलू उत्पाद सन 1990–91 में 0. प्रतिशत तक गिर गया था। आर्थिक सुधारों के दौर में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की प्रवृति दृष्टिगोचर हुई। सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि 1992–93 में 5.2 प्रतिशत, 1993–94 में 6 प्रतिशत, 1994–95 में 6.9 प्रतिशत तथा 1995–96 में 7 प्रतिशत रही।

आर्थिक सुधार लागू किए जाने के बाद निर्यातों में वृद्धि तो हुई, लेकिन यह दीर्घजीवी नहीं हो पाई। मुद्रास्फीति के इकाई में बने रहने, विदेशी पूंजी निवेश में वृद्धि, औद्योगिक विकास तथा रूपये की विनिमय दर में लचीलापन लाए जाने से भारतीय वस्तुओं के निर्यात में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ी है। रूपये में निर्यात वृद्धि दर 1991–92 के बाद से दहाईयों में बढ़ रही है लेकिन 1998–99 में निर्यात वृद्धि दर में 7.4 प्रतिशत तक गिरावट आई। यहां तक कि जहां गत कई वर्षों में निर्यातों में वृद्धि से व्यापार घाटे में कमी हुई थी, वहीं व्यापार घाटा 1999–2000 में फिर से बढ़कर 55675 करोड़ रूपये हो गया। इसका कारण आयातों में लगातार तीव्र वृद्धि होना है।

आर्थिक उदारीकरण की सफलता विदेशी विनिमय कोष में वृद्धि के रूप में दृष्टिगोचर हुई सर्वविदित है कि भारत का विदेशी विनिमय कोष 1991–92 गंभीर संकट की स्थिति में पहुंच गया था। दिसंबर 1996–97 में विदेश विनिमय भण्डार 24.11 अरब डॉलर था। इसमें स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार और विदेशी विनिमय सम्मिलित है। 24 अक्टूबर 1997 को भारत का विदेशी विनिमय भण्डार उस समय तक के 30.01 अरब डॉलर की रिकार्ड ऊँचाई तक पहुंच गया।

xHkhj foRrh; ladV dk dkj.k ¼& विदेशी मुद्रा भण्डार अर्थतंत्र की मजबूती की गारंटी नहीं हो सकता। संस्थागत विदेशी निवेशक जब चाहे मुंह फेर लें, अप्रवासी भारतीयों ने जो धन भारत की बैंको में जमा कराया है वह जब चाहे वापस निकाला जा सकता है, और फिर आयात का तेजी से बढ़ना और निर्यात में वृद्धि दर के घटने का विदेशी मुद्रा कोष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

कुछ वर्षों पूर्व मैक्सिकों में बहुत बड़ा संकट पैदा हो गया था। बाद के वर्षों में दक्षिण पूर्व ऐशियाई देश गंभीर संकट की स्थिति में फंस गए थे। दक्षिण कोरिया को दिसम्बर 1997 में मुद्रा का 50 प्रतिशत अवमूल्यन करना पड़ा। ऐसी स्थिति में भारत को आर्थिक उदारीकरण के मार्ग पर फूंक–फूंक कर कदम रखना पड़ा।

भारत को आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास पर भी ध्यान केंद्रित करना होगा। गरीबी और बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए पूंजी निवेश को ग्रामीण परिवेश की ओर मोड़ने की आवश्यकता है। गरीबी उन्मूलन योजनाओं को प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

Hkkjrh; vFk0;oLFkk e: d`f"k dh Hkfedk ,o: v:'knku

vfHk"kd JhokLro
शोधकर्ता, (वरिष्ठलेखापाल शिक्षा मंडल, एवं आंतरिक अंकेक्षक जी.एस.कॉलेज, जबलपुर)

i`Lrkouk %& कृषि को तीन भागों में बांटकर समझा जा सकता है, (1) अनाज, चावल, गन्ना, चाय, कॉफी और विभिन्न खाद्य सामग्री जो कि मिट्टी की खेती के रूप में आता है। (2) पशुधन की देखभाल से संबंधित जिसमें शामिल हैं दूध, मांस एवं अंडों के लिए पोल्ट्री, मानव उपयोग के लिये मछली पालन आदि। (3) घरेलु खपत एवं विपणन के लिये बढ़ते हुये पेड़ और जड़ी बूटियॉ, फल और सब्जियॉ शामिल हैं, जिसमें तम्बाकू, सोयाबीन और विभिन्न प्रकार की जड़ भी सम्मिलित हैं। स्वतंत्रता के पहले कृषि पारंपरिक थी, लेकिन अब विकास युग में पहुंच गयी है। भारत में कृषि में नव–उदार नीति शासन प्रणाली के दो दशकों के दौरान महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। ग्रामीण आजीविका के अनुसार कृषि अभी भी देश की कुल श्रम शक्ति से आधे से अधिक को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान कर रही है। परंतु कुल जी.डी.पी. में योगदान के आधार पर यह निरंतर कमी की ओर अग्रसर है। 1951 में जहॉं यह 52.2 प्रतिशत के उच्च स्तर पर थी, वहीं यह प्रतिवर्ष कम होते – होते 16 प्रतिशत तक आ गई है। स्पष्ट है कि कृषि प्रधान देश में संवृद्वि, कृषि से हटकर गैर–कृषि की ओर चली गई है। इसका प्रमुख कारण है कृषि श्रमिक बल के बहुत बड़े भाग का शिक्षा एवं कुशलता का अभाव एवं ग्रामीण युवको का कृषि से ध्यानभंगता के चलते शहरो की ओर रुख। अतः इस ओर ध्यान देते हुए कुछ कदम उठाये जाना आवश्यक हैं जैसे ग्रामीण आजीविका का संरक्षण, ग्रामीण गरीबी का न्यूनीकरण, आर्थिक स्थिरता बनाए रखना एवं खाद्य एवं पौषणिक सुरक्षाऍ प्रदान करना।

d`f"k dh Hkfedk %& कृषि अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र का गठन करती है। कृषि या उससे संबंधित अन्य व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आय उद्‌भव काल से ही अर्थव्यवस्था की आय का मुख्य भाग है। इसमें काम करने वाले बहुत से लोग अपनी आजीविका कृषि क्षेत्र की गतिविधियों से ही प्राप्त करते हैं। भारत कृषि उत्पादन में दुनिया भर में दूसरे स्थान पर है। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों जैसे वानिकी, लॉगिंग और मछली पकड़ने का सकल घरेलू उत्पाद का 17 प्रतिशत हिस्सा है। इस क्षेत्र ने वर्ष 1951 में 69.5 प्रतिशत एवं वर्ष 2014 में अपने कुल कर्मचारियों की संख्या में 49 प्रतिशत को रोजगार दिया। कृषि ने सकल घरेलू उत्पाद का 23 प्रतिशत हिस्सा लिया, और 2016 में देश के कुल कार्यबल का 59 प्रतिशत कार्यरत था। जैसा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में विभिन्न ओर विकास हुआ है, जीडीपी में कृषि का योगदान 1951 से लगातार घट गया है। 2011 तक, फिर भी यह देश का सबसे बड़ा रोजगार स्रोत है और इसके समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पांच साल की योजनाओं में कृषि पर विशेष जोर देने और सिंचाई, प्रौद्योगिकी, आधुनिक कृषि पद्धतियों के अनुप्रयोग और कृषि ऋण के प्रावधान पर विशेष जोर देने के कारण, 1950 के बाद से सभी फसलों की फसल–उपज–प्रति–इकाई क्षेत्र में वृद्धि हुई है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय तुलनाओं से पता चलता है कि भारत में औसत उपज दुनिया में सबसे अधिक औसत उपज का 30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, पश्चिम बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र भारतीय कृषि में प्रमुख योगदानकर्ता हैं।

भारत में औसत वार्षिक वर्षा 1,208 मिलीमीटर (47.6 इंच) और 4000 बिलियन क्यूबिक मीटर की कुल वार्षिक वर्षा होती है, जिसमें सतह और भूजल सहित कुल उपयोग योग्य जल संसाधन होते हैं, जिनकी मात्रा 1123 बिलियन क्यूबिक मीटर है। 546,820 वर्ग किलोमीटर (211,130 वर्ग मील) भूमि क्षेत्र, या कुल खेती वाले क्षेत्र का लगभग 39 प्रतिशत सिंचित है। भारत के अंतर्देशीय जल संसाधन और समुद्री संसाधन मत्स्य क्षेत्र में लगभग छह मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं। 2010 में, भारत में दुनिया का छठा सबसे बड़ा मछली पकड़ने का उद्योग था।

भारत दूध, जूट और दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है, और 2011 में 170 मिलियन जानवरों के साथ दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी मवेशी आबादी है। यह चावल, गेहूं, गन्ना, कपास और मूंगफली के साथ–साथ दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। दूसरे सबसे बड़े फल और सब्जी उत्पादक, क्रमशः विश्व फल और सब्जी उत्पादन का 10.9 प्रतिशत और 8.6 प्रतिशत है। भारत 2005 में 77,000 टन का उत्पादन करने वाला

दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और रेशम का सबसे बड़ा उपभोक्ता रह चुका है। भारत काजू गुठली और काजू शेल तरल (सी.एन.एस.एल) का सबसे बड़ा निर्यातक है। काजू एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफ इंडिया के आंकड़ों के आधार पर वर्ष 2011–12 के दौरान काजू की गुठली के निर्यात से देश द्वारा अर्जित विदेशी मुद्रा 4,390 करोड़ (43.9 बिलियन) पहुंच गई। वर्ष 2011–12 के दौरान 131,000 टन गुठली का निर्यात किया गया। केरल के कोल्लम में लगभग 600 काजू प्रसंस्करण इकाइयाँ हैं। 2015–16 और 2014–15 के फसल वर्ष (जुलाई–जून) दोनों के दौरान भारत का खाद्यान्न उत्पादन लगभग 252 मिलियन टन रहा। भारत विशेष रूप से मध्य पूर्व, दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों में बासमती चावल, गेहूं, अनाज, मसाले, ताजे फल, सूखे मेवे, कपास, चाय, कॉफी और अन्य नकदी फसलों जैसे कई कृषि उत्पादों का निर्यात करता है। इसकी निर्यात आय का लगभग 10 प्रतिशत इसी व्यापार से आता है। कृषि के माध्यम से खाद्यान्न तो उपलब्ध होता ही है, साथ ही अनेक प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध होता है जैसे सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, चाय उद्योग, सिगरेट उद्योग और तम्बाकू उद्योग, आदि। कृषि राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। 'भारत' द्वारा चाय, कपास, तिलहन, मसाला, तम्बाकू आदि का विश्व–व्यापार होता है। कृषिजन्य उत्पादों के आंतरिक व्यापार से परिवहन कर और अंतरराष्ट्रीय व्यापार से तटकर की आय में वृद्धि होती है, जो अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए नितांत आवश्यक है। "कृषि "संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों को शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है , क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश निर्धन लोग ही कार्यरत हैं और यदि कृषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता भी स्वतः समाप्त हो जायेगी। आज, भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर है, हालांकि बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने का दबाव भी भारत पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय पटल पर, विश्व भारतीय कृषि की ओर दृष्टि किए हुए है, भारत किस प्रकार इन चुनौतियों पर खरा उतरेगा, यह देखा जाना शेष है।

हमारे कृषक आज भी निरंतर कृषि की परम्परागत तकनीक का इस्तेमाल करते हैं और अधिकतर जीवन निर्वाह भी कृषि से ही करते हैं। वित्तीय बाधाएं छोटे कृषकों को उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु खेती की आधुनिक पद्धति को अपनाने से रोकती है। भारत में कृषि अभी भी व्यापक रूप से सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर करती है। लगभग 60 से 70 प्रतिशत कृषि क्षेत्र निरंतर सिंचाई की अपेक्षा वर्षा के जल पर निर्भर रहता है। विपणन एवं भण्डारण व्यवस्था की कमी भी भारतीय कृषि की समस्याओं का बखान करती हैं।

fuEu mRikndrk d dkj.k %– भारतीय कृषि की उत्पादकता शेष विश्व के सापेक्ष निम्न रही है। निम्न उत्पादकता के कारण भूमि, श्रम व अन्य साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। निम्न उत्पादकता के निम्नलिखित कारण हैं–

1- HkkLokfeRo iFkd ,oa okLrfod d`"kd iFkd % ऐसी स्थिति में वास्तविक कृषक में अधिक उत्पादन हेतु प्रेरणा का अभाव हो जाता है।

2- [ksrksa dk NksVk vkdkj % कृषि क्षेत्र में 2 हैक्टेयर से कम आकार वाले खेतों की बाहुल्यता है। ऐसे खेतों पर आधुनिक कृषि पद्धति के माध्यम से कृषि नहीं की जा सकती है। दूसरे, सहकारी कृषि के माध्यम से छोटे खेतों को वृहत् आकार प्रदान करने एवं कृषि की आधुनिक पद्धति अपना कर उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों को पूर्ण उत्साह के साथ लागू नहीं किया गया। ऐसे खेतों पर कृषि मात्र जीवन निर्वाह के लिए की जाती है।

3- vYi iwath vkèkkj% अधिकांश कृषकों के पास पूंजी का अभाव है, जिसके कारण वे आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभों को नहीं उठा पाते हैं। अल्प पूंजी के कारण वे न तो सिंचाई सुविधाओं में निवेश कर पाते हैं और न ही फार्म–मशीनीकरण की दिशा में कदम उठा पाते हैं।

4- Hkkjrh; df"k dh ekulwu ij fuHkZjrk% भारतीय कृषि उत्पादन मानसून के प्रति अतिसंवेदनशील है। सही समय पर मानसून आने का अर्थ अच्छी फसल का होना है। यदि मानसून सही समय पर नहीं आता है तो फसल उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है।

5- vf/kd tula[;k ncko% आजादी के बाद भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है। साथ ही भूमि पर जनसंख्या के दबाव में निरंतर वृद्धि हुई है। आजादी के पश्चात कृषि के अधीन नवीन भूमि लाने के बावजूद विगत वर्षों में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि घटी है।

6. vk/kfud कृf"k lfoèkkvk dk vHkko% भारत में अल्प कृषि उत्पादकता की पृष्ठभूमि में कृषि सुविधाओं का अभाव भी महत्वपूर्ण कारण है।

भूतकाल में झाँकने पर हमें ज्ञात होता है कि 2004 के आँकड़ों पर आधारित योजना आयोग की एक समिति ने जो रिपोर्ट दी थी, उसके मुताबिक देश में दुनिया के स्तर के मुताबिक 26 करोड़ 90 लाख लोग ऐसे हैं, जिनके पास दो हजार रुपए या उससे ज्यादा रोजाना खर्च करने की हैसियत है। यही लोग भारत के अब महान उपभोक्ता हैं।

सांसद और पूर्व मंत्री श्री मणिशंकर अय्यर कहते हैं कि भारत में आई आर्थिक तरक्की ने इस विशाल मध्य या उच्च मध्यवर्ग को जन्म दिया है और आज अर्थव्यवस्था में इस वर्ग का बेहतरीन योगदान है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि योजना आयोग की इसी अर्जुन सेन गुप्ता कमेटी इस निष्कर्ष पर पहुँची थी कि इस विशाल खाओ–पियो मध्य वर्ग के बावजूद 83 करोड़ 70 लाख लोग ऐसे भी हैं, जिन्हें रोजाना बमुश्किल बीस रुपए या उससे कम पर गुजारा करना पड़ता है। श्री मणिशंकर अय्यर का अनुमान है कि यह संख्या अब तक नब्बे करोड़ तक जा पहुँची होगी। जाहिर है कि हमारा आर्थिक विकास तो हुआ है, लेकिन वह विकास बेमेल है। इसीलिये हम सफल होकर भी असफल हैं। हालांकि सरकार का दावा है कि अगले वित्त वर्ष में हमारी विकास दर साढ़े आठ प्रतिशत तक हो जाएगी, जबकि अभी यह 7.2 प्रतिशत ही है। लेकिन जिस ढर्रे पर हम आगे बढ़ रहे हैं, तय है इससे यह असमान विकास में खास अन्तर नहीं आने वाला है। इसलिये हमें चाहिए कि ऐसी योजनाएँ बनाएँ और उन्हें लागू कर सकें, जिनके चलते विकास की यह असमानता दूर हो।

आजादी मिलते वक्त तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद यानी जीडीपी में खेती की हिस्सेदारी आधी से ज्यादा थी। लेकिन विकास के तेज पहिए ने अब कृषि की हिस्सेदारी घटा दी है। पिछले साल तक जीडीपी में सबसे ज्यादा हिस्सेदारी देने वाली कृषि इस साल पिछड़ गई है।

संसद में वित्त मंत्रालय द्वारा पेश आँकड़ों के मुताबिक पहली बार ऐसा हुआ है कि देश के जीडीपी में कृषि क्षेत्र का योगदान मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर से कम है। इस आँकड़े के मुताबिक 2009–10 के जीडीपी में मैन्यूफैक्चरिंग का योगदान 7,19,975 करोड़ रुपए यानी करीब 16.1 प्रतिशत है, जबकि कृषि, वानिकी व फिशिंग का योगदान 6,51,901 करोड़ रुपए यानी 14.6 प्रतिशत है।

आर्थिक सर्वे में साल 2018–19 में देश की आर्थिक वृद्धि दर 7 से 7.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है।कृषि सम्बन्धी आँकड़ों का अवलोकन करें तो कृषि विकास दर वर्ष 2016–17 में 4.9 प्रतिशत थी। वर्ष 2016–17 के आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 17.8 प्रतिशत योगदान है। किसी समय में आयात पर निर्भर रहने वाला भारत आज 27.568 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर रहा है। भारत गेहूँ, धान, दलहन, गन्ना और कपास जैसी अनेक फसलों के चोटी के उत्पादकों में शामिल है। भारत इस समय दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सब्जी और फल उत्पादक देश बन गया है।

देश में 2.37 करोड़ हेक्टेयर में बागवानी फसलों की खेती की जाती है जिससे वर्ष 2016–17 में कुल 30.5 करोड़ टन बागवानी फसलों का उत्पादन हुआ है। भारत विश्व में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक है। भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत 16.5 करोड़ टन के साथ विश्व दुग्ध उत्पादन में 19 प्रतिशत का योगदान देता है। कुक्कुट पालन में भारत विश्व में सातवें स्थान पर है। अण्डा उत्पादन में भारत का चीन और अमेरिका के बाद विश्व में तीसरा स्थान है। देश में 6 लाख टन माँस का कुक्कुट उद्योग उत्पादन करता है।

मुर्गी पालन बेरोजगारी घटाने के साथ देश की पौष्टिकता बढ़ाने का भी बेहतर विकल्प है। मौजूदा तौर पर भारत दुनिया का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। वर्तमान स्थिति की बात करें तो मछली पालन की देश के सकल घरेलू उत्पादन में करीब एक प्रतिशत की हिस्सेदारी है। वर्ष 2015–16 में मछलियों का कुल उत्पादन 1.08 करोड़ टन था। भारत में खेती–किसानी आज भी जोखिम भरा व्यवसाय है जिसमें सालाना आमदनी मौसम पर निर्भर करती है। खेती में बढ़ती उत्पादन लागत व घटते मुनाफे के कारण युवाओं का झुकाव भी खेती की तरफ कम होता जा रहा है।

दुनिया के किसी और देश में उद्योग और सेवा क्षेत्र बढ़ता है तो वहाँ रोजगार के साधन भी बढ़ते हैं। लेकिन भारत में उल्टा है। देश में करीब 58 करोड़ लोगों की रोजी सीधे कृषि से ही जुड़ी हुई है। यानी आम किसानों की हालत अभी भी दूसरे सेक्टर की तुलना में खराब है।

कृषि मामलों के जानकार देविंदर शर्मा का कहना है कि हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए। वैसे भी हमारी जनसंख्या हर साल डेढ़ प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। यानी हर साल करीब दो करोड़ खाने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। इन्हें खिलाने के लिये हमें जमीन भी ज्यादा चाहिए। लेकिन आँकड़े बताते हैं कि कृषि योग्य भूमि में 17 प्रतिशत तक की कमी आ गई है। यानी पहले की तुलना में कम जमीन पर ज्यादा लोगों को खिलाने का दायित्व बढ़ गया है।

इसीलिये हरित क्रान्ति के सूत्रधारों में से एक रहे कृषि वैज्ञानिक एम एस स्वामिनाथन अब दूसरी हरित क्रान्ति की वकालत कर रहे हैं। कृषि पर ज्यादा जनसंख्या की निर्भरता कम करने के साथ ही उद्योग और सेवा क्षेत्र में ज्यादा लोगों को रोजगार मुहैया कराकर ही भावी भारत को सबल बनाया जा सकेगा।

120 n'kk dh vFk0;oLFkk dk lrqyu çnku djrh gS Hkkjrh; कृf"k % भारत के कृषि उत्पादकों का निर्यात अधिकतर विकासशील और कम विकसित देशों को किया जाता है। भारतीय कृषि के बागवानी और संसाधित खाद्य पदार्थ 120 से अधिक देशों को निर्यात किया जाता है। यह मुख्यतः मध्य पूर्व एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, सार्क देशों, यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका में अपना निर्यात करती है।यह सभी देशों की अर्थव्यवस्था को संतुलन प्रदान करने में बड़ी महत्यपूर्ण भूमिका निभाती है।

vizy 23] 2018] uÃ fnYyh@Vhe fMftVyA भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर श्री उर्जित पटेल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने वित्त वर्ष 2017–18 में मजबूत प्रदर्शन किया और चालू वित्त वर्ष में आर्थिक वृद्धि और तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। रिजर्व बैंक के गवनर ने चालू वित्त वर्ष देश की विकास दर 7.4 प्रतिशत रहने का अनुमान जताया है।

श्री पटेल ने कल यहां अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक एवं वित्त समिति की बैठक में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था को विनिर्माण क्षेत्र में तेजी, बिक्री में वृद्धि, सेवा क्षेत्र के मजबूत प्रदर्शन और कृषि फसल के रिकॉर्ड स्तर पर रहने से बल मिला।

उन्होंने कहा कि यद्यपि वर्ष 2017–18 में वास्तविक जीडीपी की वृद्धि एक साल पहले के 7.1 प्रतिशत से कुछ हल्की होकर 6.6 प्रतिशत पर आ गई लेकिन निवेश की मांग बढ़ने से दूसरी छमाही में रफ्तार में मजबूती लौट आई। उन्होने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने 2017–18 में मजबूत प्रदर्शन किया। विनिर्माण क्षेत्र में तेजी, बिक्री में वृद्धि, क्षमता उपयोग में बढ़ोतरी, सेवा क्षेत्र की मजबूत गतिविधियां और **रिकॉर्ड** Qly mRiknu ने प्रदर्शन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

केन्द्रीय सांख्यकीय कार्यालय (सीएसओ) ने 2017–18 जीडीपी के अस्थायी आंकड़े प्रकाशित किए हैं। यह डेटा निम्न प्रकार हैः– सेक्टर के आधार पर जीडीपी का ब्रेकअप 1) कृषिः 17 प्रतिशत 2) उद्योगः 29 प्रतिशत 3) सेवाः 30 प्रतिशत। सेक्टर आधारित जीडीपी ब्रेकअप भारत की अर्थव्यवस्था के प्रति चिंता जाहिर करता है। कृषि क्षेत्र जिसमें 50 प्रतिशत जनसंख्या लगी हुई है उसका जीडीपी केवल 17 प्रतिशत ही है। राष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्राथमिकता बढ़ाने के लिए कृषि क्षेत्र में सुधारों की आवश्यकता है।

ऐतिहासिक साक्ष्य और अध्ययन दिखाते हैं कि विकास की प्रारंभिक अवस्था में कृषि ने जी.डी.पी. में आधे से अधिक का योगदान दिया है। जैसे –जैसे अर्थव्यवस्था बढी, यह और अधिक औद्योगिक हो गई। जी.डी.पी. में कृषि क्षेत्र का अंश कम होने लगा और गैर कृषि क्षेत्र का अंश बढ़ने लगा। कुल जी.डी.पी. में कृषि का प्रतिशत कम होने का अर्थ यह नहीं है कि कृषि प्रगति नहीं कर रही है। बल्कि इस दौरान कृषि का उत्पाद भी पहले की अपेक्षा बढ़ा है, परन्तु गैर कृषि उत्पादों का प्रतिशत और अधिक तेजी से बढ़ा है, इस कारण कृषि का प्रतिशत जी.डी.पी. मे कम होता दिखाई देता है। किन्तु चिन्ता यह है कर्मचारियों का प्रतिशत एवं जीडीपी का प्रतिशत मेल नहीं खाता है।

उक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कृषि निम्नलिखित क्षेत्रों में योगदान देकर अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती है :–

1 सकल घरेलू उत्पाद में योगदान
2 निर्यात संवर्धन में योगदान

3 रोजगार प्रदान करने में योगदान
4 खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में योगदान
5 गरीबी उन्मूलन में योगदान
6 आर्थिक स्थिरता लाने में योगदान
7 बायो गैस एवं बायो ईधन के चलते उर्जा सुरक्षा में योगदान
8 पर्यावरण संरक्षण में योगदान
9 प्रदूषण अवशोषण में योगदान
10 गैर–कृषि रोजगारों में कच्ची सामग्री उपलब्ध कराने में योगदान
11 बीमा, यातायात, भंडारण गतिविधियों को बढ़ावा देने में योगदान
12 ग्रामीण बुनयादी ढ़ाचे के विकास में योगदान

उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि जिस तरह से कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान देती है, अतः इसके उत्थान हेतु निम्नलिखित सुझाव हैं :–

1 df"k dk vk/kfudhdj.k :– वैज्ञानिकों को कृषि हेतु उच्च वैज्ञानिक साधनों पर कार्य करना चाहिए। और आवश्यकता होने पर कृषि के आधुनिकीकरण हेतु विदेशों में प्रयोग की जा रही वैज्ञानिक प्रक्रिया का भी अध्ययन एवं प्रयोग किया जाना चाहिए।

2 d"kd dk df"k f'k{kk inku djuk :– कृषक को कृषि शिक्षा (प्रयोग सहित) प्रदान करने हेतु प्रयासों में तेजी लाने की आवश्यकता है।

3 Qly dk foØ; eY; dk fu/kkj.k dk le; eY;oku le; ,o Je dk Hkh /;ku j[kk tkuk :– कृषक को मिलने वाले मूल लागत से फसल के विक्रय मूल्य के अंतर को ही ध्यान में न रखा जावे, बल्कि उसके द्वारा लगाये जाने वाले समय एवं मूल्यवान श्रम को भी ध्यान में रखकर विक्रय मूल्य का निर्धारण किया जाना चाहिए। वर्तमान में मूल लागत से विक्रय मूल्य की तुलना की जाती है, जबकि उसके द्वारा लगाये जाने वाले मूल्यवान समय एवं श्रम की लागत को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

4 d"kd dk mfpr ,o lEekutud thou inku djus gr i;kl e of} :– कृषक को उचित एवं सम्मानजनक जीवन प्रदान करने हेतु जो भी प्रयास वर्तमान में किये जा रहे हैं वो पर्याप्त नहीं हैं। इस ओर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

5 'kkldh; ;kstukvk dk ckj e tkudkjh gr d"kd rd lh/kh igp :– कृषक को शासकीय योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु सीधे कृषक तक योजनाओं की जानकारी मुहैया कराई जानी चाहिए। टी.वी. – रेडियों के साथ साथ , विभिन्न ग्राम पंचायतों, नुक्कड़ नाटक, समारोह, काउन्टर प्रणाली, शिविरों एवं ग्राम सहायकों की सहायता से उक्त योजनाओं की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

6 Qly foØ; d le; fcpkfy;k dk Qk;nk u igpkdj lh/k d"kd dk Qk;nk :–प्रशासन को ये सुनिश्चित करना चाहिए कि फसल विक्रय के समय बिचौलियों को फायदा न पहुँचाकर सीधे कृषक को फायदा पहुंचे।

7 cMs fuos'k gr dne mBkuk :–भारतीय कृषि को सिंचाई परियोजनाओं, बिजली परियोजनाओं, दुग्ध पालन तकनीक, फसल अनुसंधान, बुनियादी आधारभूत सुविधाओं और वर्षा संचयन के लिये आधुनिक तकनीक पर तत्काल बड़े निवेश की आवश्यकता है।

8 xkeh.k fodkl :– कृषक कृषि कार्य छोड़कर शहर की ओर अग्रसर न हों इस हेतु ग्रामीण विकास की आवश्यकता है। सभी सुविधाओं के साथ ही मनोरंजन एवं उच्च शिक्षा जो कि शहरों में उपलब्ध होती है, ग्राम विकास योजना के अंतर्गत उपलब्ध कराई जानी चाहिए। वर्तमान में ज्यादातर गांवों में केवल प्राथमिक स्कूल शिक्षा ही है।

lkr %&

1 लेख – हेमन्त सिंह, मार्च 2018
2 लेख – उमेश चतुर्वेदी, जुलाई 2016
3 लेख– डॉ. वीरेन्द्र कुमार, कुरूक्षेत्र अप्रेल 2018
4 लेख– रवि उपाध्याय, नमामि भारत दिल्ली जनवरी 2018
5 लेख – टीम डिजीटल, नई दिल्ली, 23 अप्रेल 2018
6 आंकड़े – पी.आई.बी. दिल्ली , 31 मई 2018
7 बिजनेस न्यूज
8 विकीपीडिया – भारतीय अर्थव्यवस्था

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

LkEik"; df"k fodkl & volj ,o pqukSfr;k

Mk- iwfrek cSl
विभागाध्यक्ष / सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), डॉ सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
jkds'k dqekj xqIrk
शोध छात्र (अर्थशास्त्र), डॉ सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
Lkkuky h eS=h
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), डॉ सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :– भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि को समस्त उद्योगों की जननी, मानव जीवन की पोषक, प्रगति की सूचक तथा संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। तीव्र आर्थिक विकास की ओर उन्मुख वर्तमान गतिशील विश्व के समस्त विकसित एवं विकासशील देश अपने उपलब्ध संसाधनों का अपनी परिस्थितियों एवं क्षमताओं के अनुरूप यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर कृषि उत्पादों में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक सुधार तथा प्रगतिशील एवं व्यवसायिक कृषि के विकास हेतु सचेत एवं सतत् प्रयासरत है। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा स्त्रोत, रोज़गार एवं जीवन यापन का प्रमुख साधन, औद्योगिक विकास, वाणिज्य एवं व्यापार का आधार है। भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के लिए कृषि विकास पर इसलिए ध्यान दिया जाता है, क्योंकि कृषि क्षेत्र में पूंजी उत्पाद अनुपात अधिक ऊँचा नहीं है तथा कृषि विकास के लिए विदेशी पूँजी की उतनी आवश्यकता नहीं पड़ती जितनी की औद्योगिक विकास के लिए पड़ती है।

भारतीय कृषि का उसके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है, वर्ष 1950–51 में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का योगदान 56.46 प्रतिशत था जो वर्ष 2011–12 में घटकर 19.93 प्रतिशत हो गया है। भारत में कृषि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अधिकांश जनसंख्या के जीवन यापन का साधन है। वर्तमान में देश की 52 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से कृषि व्यवसाय में लगी है। विदेशी व्यापार की दृष्टि से भी भारत में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के कुल निर्यात का लगभग 9.9 प्रतिशत भाग कृषि पदार्थों तथा कृषि से संबंधित पदार्थों का होता है। (स्त्रोत– आर्थिक समीक्षा 2011–12, pp. A-88-89) इसी प्रकार भारत में कुल भूमि का 52 प्रतिशत हिस्सा कृषि योग्य है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय कृषि को शीर्ष स्थान प्रदान करता है। भारत का मूंगफली तथा चाय के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है जबकि चांवल, कपास, गन्ना तथा जूट में द्वितीय स्थान तम्बाकू के उत्पादन में तीसरा स्थान तथा प्राकृतिक रबर के उत्पादन में पाँचवा स्थान है। भारत का लाख के उत्पादन में विश्व में एकाधिकार है। इस प्रकार भारत में कृषि रोज़गार में योगदान, खाद्यान्न व चारे की आपूर्ति, उद्योगों का आधार, परिवहन के साधनों की आय का स्त्रोत, विदेशी व्यापार में कृषि की भूमिका, भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि के लिए, राजस्व में योगदान, अंतर्राष्ट्रीय महत्व, सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व जैसे कई अवसर उपलब्ध कराती है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां के लोगों का कृषि से सदियों पुराना संबंध है फिर भी यहाँ कृषि के पिछड़ेपन की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। यद्यपि आयोजनकाल में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप दीर्घकालीन गतिहीनता की स्थिति समाप्त हुई है एवं कई फसलों की उपज बढाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। भारतीय कृषि के अंतर्गत खाद्यान्नों के क्षेत्र में लगभग आत्मनिर्भरता की स्थिति है फिर भी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि अन्य विकसित देशों की अपेक्षा अभी भी बहुत पिछड़ी है। क्योंकि आज भी कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण, दोषपूर्ण सामाजिक ढ़ांचा, जनसंख्या का कृषि पर अधिक भार, किसानो की निर्धनता तथा ऋणग्रस्तता, कृषि में दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था एवं कृषि अनुसंधान का परिणाम कृषकों तक नहीं पहुंच पाना प्रमुख है। आज भी कृषि में जोतों का आकार छोटा एवं भूमि व्यवस्था का ढ़ांचा कृषि को पश्चगामी कर रहा है। एक ओर हम नवीन हरितक्रांति की बात करते है जबकि अधिकांश भागों में उत्पादन की पुरानी तकनीक, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं साथ ही उन्नतशील बीजों कीटनाशकों तथा रासायनिक खादों का न्यून प्रयोग किया जाना है। सम्प्रति भारत में प्रति हेक्टेयर रासायनिक खादों का प्रयोग 144.14 कि.ग्रा. है जो अन्य विकसित देशों

जापान (306.6 कि.ग्राम), फ्रांस (221 कि.ग्रा.) इत्यादि की तुलना में बहुत कम है इसके अतिरिक्त मिट्टी की गुणवत्ता में कमी, भूमि कटाव, जल भराव, बाढ़ की समस्या तथा कृषि एवं उद्योग के बीच परस्पर समन्वय का अभाव आदि ऐसी बातें हैं जो भारत में कृषि के उत्पादन को प्रभावित करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत में कृषि की दशा अत्यंत शोचनीय थी, किंतु वर्तमान में कृषि अनुसंधान एवं विकास हेतु कृषि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं की स्थापना से भारतीय कृषि में उल्लेखनीय कार्य हो रहा हैं। कृषि में प्रति एकड़ उच्च उत्पादकता के लिए उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग किया जा रहा है। इसके लिए राष्ट्रीय बीज निगम तथा बड़े बड़े कृशि फार्मों की स्थापना की गई है। वर्तमान पंचवर्षीय योजनाओं तक सिंचाई की सुविधाओं में पर्याप्त विस्तार हुआ है। भारत की अंतिम सिंचाईं क्षमता का आकलन 140 मिलियन किया गया है। कृषकों के छोटे–छोटे और बिखरे खेतों को एक स्थान पर करने के लिए चकबन्दी कार्यक्रम लागू किया गया है। देश के विभिन्न स्थानों पर रासायनिक खाद बनाने के कारखाने स्थापित किए गये है तथा उर्वरकों के पर्याप्त मात्रा में आयात की व्यवस्था की गई है। भारत सरकार द्वारा उर्वरकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में सब्सिडी दी जा रही है। जिसका प्रभाव यह हुआ कि देश में रासायनिक उर्वरकों (N,P,K) की खपत वर्ष 1960–61 के 0.2 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2010.11 में 28.12 मिलियन टन हो गई है। फसलों को कीटाणुओं एवं रोगों से बचाने के लिए केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के द्वारा संचालित समन्वित कीट प्रबंध योजनाओं के अंतर्गत समन्वित कीट प्रबंध तकनीक के विभिन्न पहलुओं के बारे में लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कृषि मूल्यों मे स्थायित्व लाने के लिए कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की स्थापना की गई है। किसानों को वित्त एवं साख की सुविधा प्रदान किए जाने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की शाखाएं खोली जा रही है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन एवं विपणन के नेटवर्क में काफ़ी विस्तार हुआ है। इन सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि अब सुनहरे पथ पर चलने के लिए अग्रसर हो गई है।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला : कृ"k

Mk- vlye [kku
संविदा शाला शिक्षक वर्ग II, शास.पू.मा.विद्यालय अकोरी रीवा

भारत गांवों का देश है। भारत की लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है क्योंकि गांवों में रहने वाले लगभग 90% आबादी का प्रमुख व्यवसाय कृषि ही है। कृषि के द्वारा ग्रामीण आज भी उदर पोषण के खाद्यान्न के उत्पादन के साथ लघु व कुटीर उद्योग के लिये कच्चे माल की पूर्ति व कृषि पर आधारित लघु, मध्यम एवं बृहत उद्योगों के लिये कच्चे माल की प्राप्ति कृषि क्षेत्र से प्राप्त कर रहा है।

चूंकि भारतीय कृषि मानसून का जुआ है। क्योंकि कृषि पद्धति परम्परागत साधनों द्वारा उत्पादन प्रक्रिया के साथ तो जुड़ी हुई है पर मौसम की निर्भरता के आधार पर कई विषय विशेषज्ञों ने यहाँ तक कह डाला कि मौसम की अनुकूलता में भारतीय किसान राजा तथा मौसम की प्रतिकूलता पर भारतीय कृषक रंक होता है। यह उक्ति वर्तमान परिवेश में पूर्ण रूपेण सही भी चरितार्थ होती है क्योंकि हम देखते हैं कि भारतीय कृषि लगभग सभी क्षेत्रों का विकास का आधार है। चाहे वह उद्योग हो या व्यापार लगभग सभी क्षेत्रों को भारतीय कृषि की अनिश्चित उत्पादन से प्रभावित होना पड़ता है। कृषि क्षेत्र में बढ़ते दवाव के कारण आज इसकी स्थिति चिंतनीय लग रही है। यही कारण है कि आजकल सभी आर्थिक मुद्दों की परिचर्चा में इसके विषय की प्रासंगगिकता अधिक महत्वपूर्ण नज़र आती है। इसकी वर्ष विशेष में मौसम की अनुकूलता व उत्पादकता की कुल मात्रा व प्रति हेक्टेयर उत्पादन मात्रा के कारण बाजार में रौनक आ जाती है। रहन–सहन में चार चांद तो लग ही जाते हैं साथ ही साथ प्रत्येक क्षेत्र में विकास की चाबी भरने से प्रत्येक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की विकास रूपी गाड़ी तीव्र गति से चलने लगती है, जो कि सही भी दृष्टिगोचर हो रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था जनसंख्या के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र का योगदान अधिक था लेकिन मौसम की निर्भरता व बढ़ते दबाव के कारण इसका योगदान GDP में कम होता जा रहा है। 1950–51 में GDPमें 55.40 % था जो 2013–14 में (देश के कुल GVA में) 18.3% तथा वर्ष 2014–15 में सकल घरेलू उत्पाद (2011–12 की कीमत पर) का 17.4% रहने का अनुमान है।[1]

विगत कुछ वर्षों में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र का कुल GVAमें अंश निम्न है–

वर्ष	GVA में कृषि अंश % में
2011–12	18.5
2012–13	18.2
2013–14	18.3
2014–15	17.4

वर्ष 2011–12 के आधार मूल्य पर
स्त्रोत– ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)

उपर्युक्त विगत वर्षों के आधार वर्ष 2011–12 के आधार पर निकले नतीजों पर हम नज़र डालें तो निश्चित ही हम पाते हैं कि वर्ष 2011–12 जहां GVA18.5% वहीं वर्ष 2014–15 में घटकर 17.4% रह गया। जो कृषि के GVAमें घटते % को दृष्टिगोचर कर रहा है जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर को प्रभावित करने वाली प्रमुख कारण बनी हुई है।

रोजगार की नज़र से कृषि को देखें तो आर्थिक समीक्षा 2015–16 के अनुसार कुल रोजगार में कृषि तथा सम्बद्ध व्यवसाय का हिस्सा (2011–12 में) 48.9% था।[2] जो कि निजी क्षेत्र का यह अकेला ऐंसा व्यवसाय था जो श्रमिकों को उपर्युक्त प्रतिशत् में रोजगार उपलब्ध करा रहा है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र में मौसमी तथा छिपी हुई बेरोजगारी पाई जाती है। इनकी मौजूदगी में आज भारतीय कृषि दयनीय स्थिति में बनी हुई है। हम भारतीय अर्थव्यवस्था के औद्योगिक क्षेत्र का अध्ययन करते हैं तो हमें एक नई स्थिति नज़र आती है। इतने अधिक महत्वपूर्ण वाले क्षेत्र कृषि के द्वारा भारतीय लघु व कुटीर उद्योगों के

अतिरिक्त वृहत व मध्यम उद्योगों के लिये कच्चे माल की प्राप्ति कृषि उत्पादों के द्वारा ही होती है जो कि औद्योगिक क्षेत्र के लगे श्रमिकों को रोजी रोटी दे रहें हैं। छठी आर्थिक जनगणना 2013 के अंतरिम आंकड़े 30 जुलाई 2014 को सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियांवयन मंत्रालय द्वारा जारी किये जिसके अनुसार देश में कुल 58470 प्रतिष्ठान थे जिसमें से 35023 (59.9%) प्रतिष्ठान ग्रामीण इलाके में थे। देश में मौजूद कुल उपक्रमों में 85% गैर कृषि कार्य में तथा शेष 15.3% कृषि कार्य (फसल उत्पादन व वृक्षारोपण को छोड़कर) में संलग्न थे।[3] उक्त स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि देश की लगभग 68% जनसंख्या के लिये मात्र 15.3% उपक्रमों में रोजगार प्राप्त कर अपना उदर पोषण कर रहे हैं। जो ये आंकड़े अपने आप में कृषि अर्थव्यवस्था की घायल स्थिति को दृष्टिगोचर कर रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में कृषि का महत्व अधिक है। कृषि उत्पादों व कृषि उत्पादों के द्वारा निर्मित माल का आयात–निर्यात कर देश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से प्रगतिशील हो रहा है। वर्ष 2014–15 में देश के निर्यात में कृषि एवं संबद्ध वस्तुओं का अनुपात 12.7 % था जबकि इसके पूर्व वर्ष में यह भाग 13.7% था।[4] जो कि अनियमित उछाल को दृष्टिगोचर कर रहा है।

ध्यातव्य है कि विगत वर्ष की तुलना में वर्ष 2014–15 कृषिगत निर्यात में 8.7% की कमी दर्ज की गई थी। जो वास्तव में भारतीय अर्थव्यवस्था की घायल स्थिति कृषि को दृष्टिगोचर कर रही है। हम अन्य वर्षों में देखें तो मौसम की प्रतिकूलता व कृषि पर बढते दबाव के कारण इसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सहभागिता अनियमित रही है। वर्ष 2014–15 के दौरान कृषिगत आयात देश के कुल आयात का 3.9% तथा 2013–14 में 3.3% था। W.T.O.द्वारा प्रकाशित विश्व व्यापार सांख्यिकी के अनुसार (2014 में व्यापार के आधार पर) कृषि और खाद्य उत्पादों के वैश्विक निर्यात और आयात क्रमशः 1.66 और 1.82 मिनियन अमेरिका डॉलर था। इसमें भारत हिस्सा, निर्यात में 2.46% तथा आयात में 1.46% था। [5]जो कि आकड़े कृषि क्षेत्र में कृषि की वर्तमान वर्षों की स्थिति को दिखला रहे हैं। वर्ष 2014–15 के अनुसार भारत के समग्र निर्यात में कृषि क्षेत्र की भागीदारी 12.7%थी जबकि इसके पूर्व वाले वर्ष में कृषि क्षेत्र का अंश 13.7 %था। इसकी वर्तमान वर्षों की स्थिति निम्न है–

वर्ष	निर्यात (मिलियन डॉलर में)	कृषि निर्यात
2014–15	310147	39357(12.7%)
2013–14	314405	43133(13.7%)

स्त्रोत ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 22 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)

सारणी का अवलोकन करें तो हमें कृषि की घायल अवस्था का अनुभव हो जायेगा। क्योंकि हम पाते हैं वर्ष 2013–14 के देश के कुल निर्यात 314405 मि. डॉलर में कृषि निर्यात 43133 मि.डॉलर रहा जो 13. 7% रहा वहीं 2014–15 में देश का कुल निर्यात 310147 मि. डॉलर में 39357 मि. डॉलर कृषि निर्यात हुआ जो कुल निर्यात का 12.7% रहा। इस प्रकार कुल निर्यात में कृषि की सहभागिता के घटते प्रतिशत् से इसकी स्थिति चिंतनीय नज़र आ रही है। यदि हम कृषि निर्यात मदों की दृष्टि से भारतीय कृषि को देखें तो हम पाते हैं कि 2014–15 में भारत के 04 शीर्ष निर्यात मदों में अनाज का 3.1% , सामुद्रिक उत्पाद का 1.8%, मसाले का 0.8%, तथा कपास का 0.6%, योगदान है।[6] वहीं हम कृषि आयात पर नज़र डालें तो हमें आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2014–15 के अनुसार कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र मुं आयात का अंश 3.9%, था। इसके सहभागी प्रतिशत् में खाद्यतेल 2.4% , दालें 0.6%, काजू 0.2%, का स्थान प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहा। [7]इस प्रकार आंकड़ें रूपी आयने ने हमें भारतीय अर्थव्यवस्था की कृषि पर निर्भरता के व्यापार की वास्तविक स्थिति को दिखाने में मदद की है।

सकल मूल्यवर्धन (GVA) के अनुपात के रूप में कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों में सकल पूंजीनिर्माण 2011–12 के वर्तमान कीमतों पर 2013–14 में 17. 0%,से कम होकर 2014–15 में 15.8%, हो गया। यह आँकड़े एक नकारात्मक प्रवृत्ति को दिखा रहे हैं। यह नकारात्मक प्रगति भले मौसम की प्रतिकूलता व घटते प्रतिहेक्टयर उत्पादन से हो पर अन्ततः प्रगति की दर नकारात्मक ही कही जायेगी।

देश की कृषि की स्थिति का विगत कुछ वर्षों में कुल GCF (Total Gross CapitalFormation) की दृष्टि को निम्न तालिका से स्पष्ट कर सकते हैं :–

कुलGCF% में कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों के GCF का हिस्सा

(2011–12 कीमतों पर) सत्र	कृषि की सहभागिता % में
2011–12	8.6
2012–13	7.8
2013–14	8.6
2014–15	7.7

स्त्रोत – ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 23 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन पर हम कह सकते हैं कि 2011–12 से सत्र 2014–15 में कुल सकल पूंजी निर्माण (GCF) में कृषि क्षेत्र की सहभागिता अनियमित रही है।

भूमि– उपयोग में भी भारतीय अर्थव्यवस्था में विसंगति है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में 46% भाग शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल के अन्तर्गत आता है। इसमें भी खाद्यान खेती के अंतर्गत आने वाली भूमि 65.6% है। वर्ष 1950–51 में खाद्यान फसलों के अंतर्गत 76.7% बंजर भूमि थी। [8] भारतीय अर्थव्यवस्था में कुल भूमि का लगभग 15 % भाग बंजर भूमि का है। योजना खर्च में कृषि का हिस्सा देखें तो प्रथम योजना में सकल योजना व्यय 960 करोड़ रूपये में से कृषि पर वास्तविक खर्च 724 करोड़ रूपये जो कुल का 37% था वहीं यह व्यय नौवी योजना में 813998 करोड़ रूपये में से 161791 करोड़ रू कृषि पर वास्तविक खर्च जो 19.5 % एवं दसवीं योजना में 616700 करोड़ सकल योजना व्यय में से 101525 करोड़ कृषि पर वास्तविक खर्च जो 16. 5% था।[9] उपर्युक्त विभिन्न योजनाओं में किये गये व्यय के उपरांत भी कृषि क्षेत्र की प्रगति अनियमित ही रही है।

यदि हम खाद्यानों को आर्थिक लागत की दृष्टि से देखें तो वित्त वर्ष 1999–2000 से वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई हे। वित्त वर्ष 2009–10 में चावल की आर्थिक लागत का बजट अनुमान वर्ष 2008–09 के संशोधित अनुमान से –5.81% था। इसका मुख्य कारण वितरण लागत में अधिक वृद्धि माना गया था। वर्ष 2012–13 में गेंहूँ एवं चावल की आर्थिक लागत बढ़कर क्रमशः 22 रूपये एवं 24 रूपये हो चुके थी।

[10]विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि में औसत उपलब्धि (%) में विभिन्नता लिये हुये निम्न हैः–

पंचवर्षीय योजना	कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर % में
1	2.71
2	3.15
3	–0.73
4	2.57
5	3.28
6	2.52
7	3.47
8	4.68
9	2.06
10	2.40
11	4.10

स्त्रोत – सिंह मनोज कुमार, भारतीय अर्थव्यवस्था 2016 P98 केरियर क्लासेस प्रकाशक मुखर्जी नगर नई दिल्ली

उपर्युक्त पंचवर्षीय योजनाओं में हम पाते हैं कि 8वी योजना में ही 4.68% व 11वी योजना में 4. 10% के अलावा शेष सभी पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर अनियमित रही। तीसरी योजना में तो वृद्धि दर –0.73% ऋणात्मक रही है।[11]

कृषि उत्पाद में अस्थिरता भी विगत वर्षों में देखनें को मिलती है। वर्ष 2014–15 में देश में कृषिगत उत्पादन के चतुर्थ अग्रिम अनुमान 17 अगस्त 2015 को जारी किये गये थे। ताजा आंकलन में 2014–15 में देश में खाद्यानों का कुल उत्पादन 252.7 मि.टन अनुमानित किया गया था। विभिन्न फसलों के तहत प्रतिहेक्टेयर क्षेत्रफल में चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार 2013–14 की तुलना में 2014–15 में अत्याधिक गिरावट आई।[12]

भारतीय अर्थव्यवस्था में खाद्यान्न उत्पादन की विसंगति भी दृष्टिगोचर हो रही है। इतनी अधिक विविधता होने पर हमारी सरकार शांत नहीं बैठी। सरकार ने विभिन्न पंचवर्षीय योजना में कृषि कोष के माध्यम से पैसे खर्च कर इतने महत्वपूर्ण क्षेत्र को सुधारने का प्रयास किया है। कई योजनाओं का श्रीगणेश किया व उनकी महत्वता को बताने के लिये आम नागरिकों को जागरूक भी किया। इन योजनाओं में प्रमुख – नयी फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि

बीमा योजना (नवीन), पायलट मौसम आधारित फसल बीमा योजना, कृषि आय बीमा योजना, वर्षा बीमा योजना, मौसम आधारित फसल बीमा योजना, बायो ईधन वृक्ष/पेड़ का बीमा योजना, मूल्य स्थिरीकरण कोष एवं विभिन्न कृषि फसलों की स्थापना कर देश की कृषि व्यवस्था को सुधारने का प्रयास कर रही है। पर यह हृदय विदारक समाचार होता है कि आये दिन मौसम की प्रतिकूलता से कृषक आत्महत्या कर रहा है। आये दिन न्यूज चैनलों में कृषक आत्महत्या विषय पर डिवेट होते देखे गये और समाचार की मुख्य खबर बनकर समाचार पत्रों ने सुर्खियां लूटीं हैं। पर सरकार की योजनाओं में अपेक्षानुरूप वास्तविक लाभ कृषकों को नहीं मिला है और कृषि जैसे जीवन दायिनी क्षेत्र में आत्महत्याओं की बढ़ती संख्या से दाग लगते जा रहे हैं। जोकि हमारे सामने प्रश्न चिन्ह है, जिनके उत्तर सभी विषय विशेषज्ञ अपने–अपने विचारों के माध्यम से देने में लगे हैं। यह क्षेत्र उत्पादन की विभिन्नता से ग्रषित है। वास्तविकता से देखने पर आंकड़ों के माध्यम से हम कहें तो GDP का 17.4% भाग यही क्षेत्र देता है जबकि इसमें देश की 54.6% कार्यकारी जनसंख्या एवं 15.3% उपक्रम में लगी है।[13]

इस प्रकार अर्थव्यवस्था की रीढ़ कही जाने वाली कृषि मौसम की बढ़ती प्रतिकूलता , उच्च तकनीक का कुशल प्रयोग न होने , शासन की नीतियों के उचित क्रियान्वयन न होने व कृषक जागरूकता की कमी के कारण जिस दर से कृषि क्षेत्र का विकास होना चाहिये अपेक्षा अनुरूप नहीं हो पा रहा है यही कारण है कि हमारी अर्थव्यवस्था की जान कही जाने वाली अर्थव्यवस्था घायल कही जा सकती है। अतः हम आम जन नागरिकों को इसकी घायल अवस्था में सुधार अर्थात कृषि विकास हेतु सार्थक कदम उठाने की अपील करते हैं ताकि इसकी स्थिति में सुधार कर इसकी घायलता पर मल्हम लगाया जा सके, जो कि देश के आर्थिक विकास के लिये अपेक्षित है।

L=kr :–

1 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
2 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
3 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
4 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
5 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 15 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
6 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 22 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
7 ओझा शिवकुमार, कृषि एवं प्रौद्योगिकी पेज नं. 23 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
8 वर्णवाल महेश कुमार, भारतीय अर्थव्यवस्था– (जु.2017) Cosmos Publication दिल्ली P 211–12
9 कृष्णा आर0, भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व के संदर्भ में – P 95 K.B.C. NANO Publication Delhi
10 सिंह रमेश. भारतीय अर्थव्यवस्था 6वां संस्करण – Mc Graw Hill Education (India) P 6.13 Private Limited - New Delhi
11 सिंह मनोज कुमार ,भारतीय अर्थव्यवस्था 2016 P98 केरियर क्लासेस प्रकाशक मुखर्जी नगर नई दिल्ली
12 ओझा शिवकुमार कृषि एवं प्रौद्योगिकी, पेज नं. 24 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)
13 ओझा शिवकुमार कृषि एवं प्रौद्योगिकी, पेज नं. 16 (बौद्धिक प्रकाशन इलाहाबाद 2016)

ekfydrk dk izek.k&i= %& मैं प्रमाणित करता हूं कि यह मेरा मौलिक शोध पत्र हे जिसके निर्माण में विभिन्न पत्र पत्रिकाओं व उपर्युक्त स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। जो कि संदर्भित सूची में उल्लेखित है।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

वैश्विक परिपेक्ष्य में कृ"k की अवधारणा (भारत के विशे"k lUnHkZ esa½

Mk- ch-,y- vkekZ
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत शासकीय मानकुंवरबाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व अनादिकाल से रहा है। भारत के विदेशी व्यापार का अधिकांश भाग कृषि से ही जुड़ा हुआ है। वर्ष 2004–2005 में देश के निर्यात में कृषि वस्तुओं का अनुपात 14.7 प्रतिशत और कृषि से बनी हुई वस्तुओं यथा निर्मित पटसन एवं कपडा का अनुपात भी लगभग 25 प्रतिशत है। इस प्रकार भारत के कुल निर्यातों में कृषि और उससे संबंधित वस्तुओं का अनुपात लगभग 40 प्रतिशत है। संसार के प्रत्येक देश में अनुसंधान से ही वहां की परम्परागत खेती में सुधार हुआ है। सन् 1834 में एलसेस नामक स्थान पर जे.वी. बोसिंगाल्ट कृषि वैज्ञानिक द्वारा प्रथम अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया। सन् 1908 में अमरीकन सोसाइटी ऑफ एग्रोनोमी की स्थापना से वहॉ कृषि विकास में तेजी आई जबकि भारत देश में ठीक 50 वर्ष बाद इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रोनोमी स्थापित हुई।

वैशाखे वपनं श्रेष्ठं ज्येष्ठे तु मध्यमं स्मृतम् ।
आषाढे चाधमं प्रोक्तं श्रावणे चाधमाधमम् ।।[1]
रोपणार्थ त बीजानां शुचौ वपनमुत्तमम् ।
श्रावणे चाधमं प्रोक्तं भाद्रे चैवाधमाधमम् ।।[2]
वृषान्ते मिथुनादा च वीण्यहानि रजस्वला ।
बीजं न वापयेत्तत्र जनः पापद्विनश्यति ।।[3]

Sowing In Vaishaka (May) Is Stated To Be The Best : In Jyesht Ha (June) Mediocrke And In Ashadha (July) Bad In Shravana (August) The Worest It Is Excellent To Sow Seeds In Hot Season (April-May) For Transplantation. Sowing In Shravana Is Said To Be Bad And Bhadrapada (September) The Worst.

The End Of Jyeshtha And Beginning Of Ashadha Is The Menstruation Period Seeds Must Not Be Sown During This Period. This Saves The Farmer From Regret.

निष्पन्नमपि यद्धान्यं न कृतं तृणवर्जितम् ।
न सम्यक् फलमाप्नोति तृणक्षीणा कृषिर्भवेत् ।।[4]
कुलीरभाद्रयोर्मध्ये यद्धान्यं निस्तृणं भवेत् ।
तृणैरपि तु सम्पूर्ण तद्धान्यं द्विगुणं भवेत् ।।[5]

Even a well-grown crop does not yield full returns if grass is not weeded out. Crop from which grass is weeded out in Shravan (August) and Bhadrapada (September) doubles itself later.

आषाढे श्रावणे मासि धान्यमाकट्टयेद्बुधः ।
अनाकट्टं तु यद्धान्यं यथा बीजं तथैव हि ।।[6]
कर्कटे कट्ठयेद्धान्यमवृष्टौ कृषितत्परः !
भाद्रे चार्द्धफलप्राप्तिः फलाशा नैव चाश्विने ।।[7]
न निम्नभूमौ धान्यस्य कुर्यात्कट्टनरोपणे ।
न च सारप्रदानं तु तृणमात्रं तु शोधयेत् ।।[8]

In Ashaada (July) or Shravana (August) the wise farmers construct small bunds for retaining water. If this is not done the seed will not germinate.

If rains are scanty, an attentive farmer constructs these bunds in sign of cancer (June) itself. If it is done in Bhadrapada (September) the crop is reduced to half the quantity. If done in Ashwina (October) there is no hope of returns whatsoever.

At lawlands, transplantation and manuring should not be done. Only weeding of grass is to be done.

फलत्यवेक्षिता स्वर्ण दैन्यं सैवानवेक्षिता।
कृषिः कृषिपुराणज्ञ इत्युवाच पराशरः ।।[9]
पितुरन्तः पुरं दद्यान्मातुर्दद्यान्महानसम् ।
गोशु चात्मसमं दद्यात् स्वयमेव कृषि व्रजेत् ।।[10]
मोहितः क्षेत्रगामी व कालज्ञो बीजतत्परः ।
वितन्द्रः सर्वशस्याढयः कृषको नावन्सीदति ।।[11]

"Farms yield Gold if properly managed but lead to poverty if neglected" said Parasara, the sage well versed in the sacred science of Agriculture.

And so did the other SAGES :"Management of one's Harem may be entrusted to one's father, that of the kitchen to one's mother; cattle to someone equal in status. But farms should be never left to the care of any one other than oneself.

Agriculture, cattle, business, women and Royal families, if left unattended even for a short while, perish in no time.

An agriculturist who looks after the welfare of his cattle, visits his farm daily, has the knowledge of the seasons. Is careful about the seeds, and is industrious is rewarded with the Harvest of all kinds and never perishes.

अतृणे सतृणा यस्मिन् सतृणे तृणवर्जिता मही यत्र ।
तस्मिन् शिरा प्रदिष्टा वक्तव्यं वा धनं चास्मिन् ।।[12]

If in grassless place a patch of ground is seen covered with grass or in a grassy plot, a patch is seen devoid of it, a vein of water or a treasure is to be declared to exist there.

स्निग्धाः प्रलम्बशाखा वामविकटद्रुमाः समीपजलाः ।
सुषिरा जर्जरपत्राः रूक्षाश्च जलने सन्त्यक्ताः ।।[13]

The trees which are short and wide with long hanging branches and glossy leaves indicate the presence of underground water nearby, whereas trees which are hollow and dry with pale leaves indicate non existence of underground water nearby.

माघे वा फाल्गुने मासि सर्वबीजानि संहरेत् ।
'शोषयेदातपे सम्यक् नैवाधो विनिधापयेत् ।।[14]

All sorts of seeds should be procured in Magha (February)) or Phalguna (March) and should then be dried well in the sun do not sow them directly.

मधुयष्टिसिताकुष्ठं मधुपु''पविनिर्मितैः ।
गोदकरछादिते मूले निरस्थि स्यात् फलं तरोः ।।[15]

A paste prepared out of Madhuyashti, Sugar, Kushtam, Madhupushpam together applied to the root of a tree produces seedless fruits.

कुष्माण्डवार्ताकपटोलकादि बीजं वसाभावितमुप्तसिक्तम् ।
विरोधितायां भुविसर्वकालं फलान्यनस्थीनि महान्ति धत्ते।।[16]

If the seed of gourd, bringal, patola and such other plants be treated with animal fat and then sown in purified (prepared) ground and water be sprinkled over them, the fruits that grow out of them become big and seedless.

करंजार्मवधारिष्ट – सप्तपर्णात्वचा कृतः ।
उपचार : कृमिहरो मूत्र–मुस्त–विडङ्.गवान् ।।[17]

Worms are destroyed by the application of the following substances made into a paste with the urine of cow with Vidanga and musta

(1) The bark of Karanja
(2) The bark of Armavadha
(3) The bark of Arishta
(4) The bark of Saptaparna

हिरण्यकेशो रजसो विसारे हिधुनिर्वात् इव ध्रजीमान् ।
शुचिभ्राजा उषसो न वेदा यशस्वतीरपरस्युवो न सत्याः ।।[18]

The twigs of punarnava are offered in the ahavaniya fire and the resulting smoke is consecrated with the mantra, hiranya kesho rajaso it means that the smoke of punarnava bellowing out along with the golden flames reaches the golden flames reaches the clouds quickly and produces such a heavy rain that even the sun rise will not be visible due to the dense coverage of black clouds.

lanHk&xzUFk %&

1. कृषि पराशरः 168, 169, 175, 189, 190, 186–188, 79–81, 83 पराशर मुनि विरचितः चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी।
2. बृहत्संहिता 54, 52, 54, 49 वराहमिहिरविरचिता चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी।
3. कृषि पराशरः 175 वराहमिहिरविरचिता चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी।
4. उपवन विनोदः तेरहवी ई. सदी 184, शाङ्रधर पद्धति। The Indian Research Institute 55 Upper Chitpore Road, Calcutta 1935.
5. तैत्तिरीय संहिताा 3-1-11-14 श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जिला सतारा महाराष्ट्र।

Hkkjrh; vFkZ0;oLFkk esa d`f"k dh Hkwfedk ,oa ;ksxnku dk ,d fo'ys"k.kkRed v/;;u

fot; dqekj vfgjokj
शोधार्थी, अर्थशास्त्र का स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (म.प्र.)

lkjka'k :– कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिंदु है। देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका है। आज देश में कृषि कार्य के साथ–साथ पशु पालन, बागवानी, मुर्गी पालन, मछली पालन, वानिकी, रेशम कीट पालन व बत्तख पालन भी आमदनी बढ़ाने का एक बड़ा हिस्सा बनता जा रहा है। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से ही प्राप्त हो रहा है आज देश के कुल निर्यात में 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से ही प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रम शक्ति कृषि एवं इससे संबंधित क्षेत्रों में ही लगी हुई है। वर्ष 2017–18 के आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 16 प्रतिशत का योगदान है। आज भी खेती से इतर क्षेत्र में काम आने वाली अधिकतर उपभोक्ता वस्तुएॅ कृषि से ही प्राप्त होती है और उद्योग क्षेत्र के लिए अधिकतर कच्चा माल कृषि ही सृजित करती है। खेती अपने अनुषंगी क्षेत्रों के साथ, भारत में विशेष रूप से विस्तृत ग्रामीण भू–भागों में निर्विवाद रूप से सबसे बड़ी रोजगार प्रदाता है। आज ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े स्तर पर युवाओं का शहरों की ओर पलायन हो रहा है। ऐसे में कृषि आधारित व्यवसायों को रोजगार के विकल्प के रूप में भी अपनाया जा सकता है। अन्ततः इन समस्त आर्थिक एवं मानवीय क्षेत्रों की संरचनाओं का आधार कृषि ही है। जिसका राष्ट्र की समग्र अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है।

izeq[k 'kCnkoyh :– भारतीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, आय, विकास, उत्पादन, कृषि, खेती–किसानी, तकनीकी।

izLrkouk :– मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ से ही कृषि आजीविका का प्रमुख साधन रही है। आज भी कृषि विश्व की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय तथा आय का मुख्य स्त्रोत है। आदिकाल से भारत कृषि प्रधान देश रहा है। औद्योगिकरण और उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी अर्थात् सुपर–कम्प्यूटर के युग में भी भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि ही है, जिस कारण से कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। भारत में लोगों के जीविकोपार्जन का सबसे बड़ा साधन और व्यवसाय कृषि ही है। देश में औद्योगीकरण के विकास में भी कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि एवं आर्थिक विकास का अटूट सम्बंध है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उद्योग–व्यापार भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं, किन्तु भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या को रोजगार एवं आजीविका प्रदान नहीं कर सकते। आज भी भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही आश्रित है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के अंतर्राष्ट्रीय मापदण्ड देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की दृष्टि से भारत में भले ही कृषि का योगदान अनुपात में कम होता जा रहा है किंतु देशवासियों को आजीविका व रोजगार प्रदान करने से लेकर सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से कृषि ही सबसे सुदृढ़ व स्थायी आधार है। यही कारण है कि वैश्विक मंदी जैसी भीषण त्रासदी से तथाकथित बड़े और विकसित देशों की अर्थव्यवस्थाएॅ लड़खड़ा गई किन्तु भारतीय अर्थ व्यवस्था न केवल अक्षुण्ण है अपितु उत्तरोत्तर और अधिक प्रगति कर रही है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान होने के साथ ही, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी कृषि भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में मात्र जीवन–यापन का साधन या उद्योग–धंधा ही नहीं है, वरन् इसे अर्थव्यवस्था की धुरी में व्यापार, व्यवसाय, उद्योग–धंधा विदेशी मुद्रा की प्राप्ति, राजनैतिक स्थायित्व एवं विभिन्न योजनाओं की संकल्पना कृषि पर ही निर्भर है। आज यदि कृषि असफल रहती है, तो राष्ट्र एवं राष्ट्र की अर्थव्यवस्था दोनों ही असफल रहते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने एवं ग्रामीणों के उत्थान के लिए कृषि की उन्नति करना नितांत आवश्यक है।

iou lkfgR; dh leh{kk :– प्रस्तुत शोध पत्र से संबंधित शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है जिनमें से कुछ निम्न है–

'kdjko lkfcj ½2016½ [12]ने अपने अध्ययन ''उज्बेकिस्तान के आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका'' में बताया है कि उज्बेकिस्तान का मुख्य आर्थिक विकास कृषि पर आधारित है। यहॉ का मुख्यतः आर्थिक विकास कृषि पर आधारित है। यहॉ कृषि आर्थिक विकास में अपनी एक विशिष्ट भूमिका निभाती है। वर्तमान में 27 प्रतिशत जनसंख्या कृषि और संबंधित क्षेत्र में कार्यरत है, और जीडीपी में इसका 17 प्रतिशत योगदान है। यहॉ कृषि के क्षेत्र में रोजगार के अनेकों अवसर यहॉ की जनसंख्या को इससे प्राप्त होते है, तथा औद्योगिक विकास के लिए कृषि से कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है जो औद्योगिक विकास का आधार है, अतः इस अध्ययन में यह पाया गया कि आर्थिक विकास का कृषि के साथ सकारात्मक संबंध है।

lDlsuk txnhi ½2018½ ने, विकास कल्याण और कृषि विकास से नए भारत का निर्माण'' में बताया है कि भारत सरकार की नए भारत के विकास की रणनीति में किसानों और कृषि को अहम् स्थान दिया गया है और 'सक्षम किसान– समृद्ध भारत' की कल्पना की गई है। भारत की सामाजिक, आर्थिक दशा को देखते हुए यह एक तर्कसंगत और प्रभावी सोच है, क्योंकि देश की लगभग आधी आबादी आज भी खाद्य सुरक्षा और रोजगार के अवसरों के लिए कृषि पर निर्भर है। इसलिए कृषि को अधिक कुशल, अधिक लाभदायक और सतत् बनाने के लिए बाजार में भी कई प्रभावी कदम उठाए गए हैं। जिससे कृषि विकास के साथ–साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को भी विकसित किया जा सके।

dekj ohjUnz ½2018½[3] ने अपने अध्ययन ''कृषि संबद्ध क्षेत्र : किसानों की आय बढ़ाने में मददगार' में बताया है कि देश के विकास और प्रगति में कृषि का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका है। देश के कुल निर्यात में 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में ही लगी हुई है। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है। यह न केवल देश की दो–तिहाई आबादी की रोजी–रोटी एवं आजीविका, सभ्यता और जीवनशैली का आईना भी है। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से ही प्राप्त होता है। अतः इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृषि से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त आय का भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक अहम् भूमिका निभाती है।

LokehukFk ,e-,l- ½2019½ [4]ने अपने अध्ययन, ''कृषि में नये प्रौद्योगिकी नवाचार से किसान कल्याण'' में बतलाया है कि नई प्रौद्योगिकी, उत्पादकता सुधार के लिए मूल कच्चा माल है। नई प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से अग्रिम अनुसंधान के लिए पर्याप्त अवसर हैं। कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में हमारे किसानों की प्रगति का प्रमाण यह है कि 2018 में देश का गेहूँ उत्पादन 100 मिलियन टन से ज्यादा हो गया जो कि 1947 में 7 मिलियन टन था। इस तरह की प्रभावशाली प्रगति प्रौद्योगिकी और लोक नीति के बीच पारस्परिक क्रिया से संभव हुई है। नई प्रौद्योगिकी उत्पादकता सुधार के लिए मूल कच्चा माल है। हमें किसानों के कल्याण और खेती की लाभप्रदता सुनिश्चित करने के लिए इन अवसरों का लाभ उठाना चाहिए जिससे कृषि को विकसित किया जा सके।

mnns'; :– इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1. कृषि से भारतीय अर्थव्यवस्था को होने वाले लाभ का अध्ययन।
2. भारतीय कृषि विकास में आने वाली समस्याओं का अध्ययन एवं उनका समाधान प्रस्तुत करना।

[1] Sobir shukurav (2016), " The Role of Agricuture in Economic Development of Uzbekistan" Profiles for this publication at: https://www.research-ate.net/publication/316169915.

[2] डॉ. जगदीप सक्सेना (2018), ''कुरूक्षेत्र'' किसान कल्याण और कृषि विकास से नए भारत का निर्माण' प्रकाशक– सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, सी.जी.ओ, काम्पलेक्स लोधी मार्ग, नई दिल्ली, पृ.क.10–14 माह मार्च।

[3] डॉ.वीरेन्द्र कुमार (2018), कुरू क्षेत्र, 'कृषि संबद्ध क्षेत्रः किसानों की आय बढ़ाने में मददगार'' प्रकाशक सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन नई दिल्ली पृ.क.5–9, माह– अप्रेल,

[4] ,एम.एस.स्वामीनाथन (2019), योजना ''कृषि क्षेत्र में नये प्रौद्योगिकी नवाचार से किसान कल्याण'' प्रकाशन विभाग– सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली, ISSN- 0971-8397 , पृ.क.12–16 माह जनवरी

'kks/k ifof/k :– प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित है। जिसमें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं एवं शासकीय रिपोर्टों, बेबसाईटों से प्राप्त ऑकड़ों को एकत्रित किया गया है, साथ ही विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन कर जानकारियां प्राप्त की गई हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण में विभिन्न चार्ट एवं आंकड़ों को विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जो कृषि क्षेत्र एवं भारतीय अर्थव्यवस्था के बीच प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष संबंध प्रदर्शित करते हैं।

Hkkjrh; vFkZ;oLFkk esa df"k dh Hkfedk :– भारत वासियों के अस्तित्व एवं विकास का सम्बंध कृषि क्षेत्र से आदिकाल से जुड़ा हुआ है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों से प्रतीत होता है कि अति प्राचीनकाल से ही कृषि भारतीय निवासियों की आजीविका का आधार रही है। 3000 से 5000 वर्ष ईसा पूर्व सिन्धु घाटी की सभ्यता में कृषि कार्य सम्बंधी अनेक प्रमाण प्राप्त हुए हैं। भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है जिसकी लगभग 60–65 प्रतिशत जनता खेती करके अपना जीवन निर्वाह करती है। कृषि को अगर भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ कहा जाए तो गलत नहीं होगा। कृषि की भूमिका को इससे ही समझा जा सकता है कि वर्तमान में देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 16 प्रतिशत होने के साथ हीं 49 प्रतिशत लोगों को रोजगार इस क्षेत्र से प्राप्त हो रहा है। आज देश सभी क्षेत्रों में विकास कर रहा है, इसके बाद भी कृषि का महत्व किसी भी सूरत में कम नहीं हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका बहुत ही अहम है जिसको हम यहॉ विभिन्न क्षेत्रों के आधारों में देख सकते हैं।

1- jk"Vªh; vk; dk izeq[k L=kr :– भारत में कृषि राष्ट्रीय आय प्राप्त करने का प्रमुख स्त्रोत है। सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संबंध

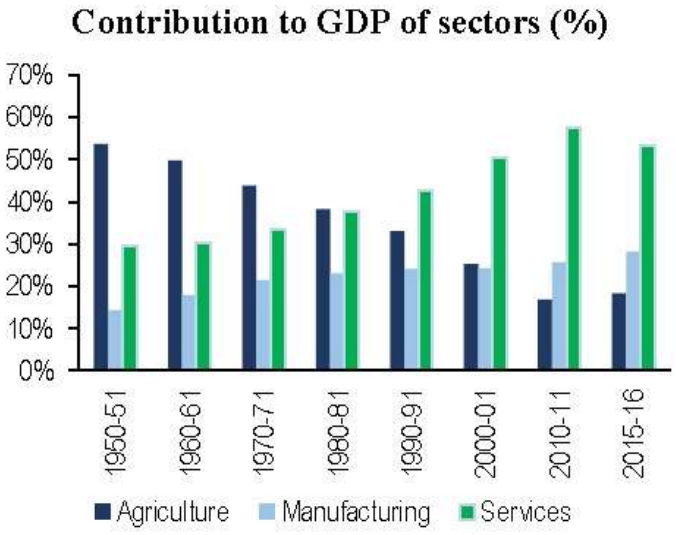

Sources: Ministry of Statistics and Programme Implementation; PRS.

व्यवसायों का हिस्सा वर्ष 1950–51 में 54.4 प्रतिशत था जो कम होते होते 1960–61 में 52 प्रतिशत, 1981–82 में 37.6 प्रतिशत 2000–01 में 26.2 प्रतिशत तथा 2011–12 में 18.3 प्रतिशत तथा 2004–05 की कीमतों पर 2013–14 में घटकर 14.8 प्रतिशत हो गया था लेकिन कुछ सुधारों के बाद उत्पादन में वृद्धि होने पर 2011–12 की कीमतों पर 2017–'18 में यह बढ़कर 16 प्रतिशत हो गया है। राष्ट्रीय आय सम्बंधी अनुमानों से दो बातें स्पष्ट होती है,एक राष्ट्रीय आय में कृषि तथा सम्बंधित व्यवसायों का हिस्सा अधिक है, दूसरी राष्ट्रीय आय में कृषि का हिस्सा धीर–धीरे कम होता जा रहा है, जो आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है? इन दोनों बातों से स्पष्ट होता है कि देश में कृषि की प्रधानता है और वह आर्थिक विकास की ओर अग्रसित है।

2- jkstxkj nku esa lgk;d :– रोजगार की दृष्टि से कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कृषि, मनुष्यों को दो प्रकार से रोजगार देती है, एक ओर तो उन मनुष्यों को जो प्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादन में लगे हुए हैं जैसे कृषक एवं श्रमिक तथा

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019

A Monthly Journal of Multidisciplinary

International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

दूसरी ओर ऐसे व्यक्तियों को जो अप्रत्यक्ष रूप से इस पर आश्रित हैं, जैसे ग्रमीण कारीगर, छोटे तथा गृह उद्योग धन्धों वाले कृषि उपज का व्यापार करने वाले, कृषि से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग करने वाले तथा ग्रामीण सेवक इत्यादि। भारत में की गयी दस वर्षीय जनगणनाओं से यह पता चलता है कि वर्ष 1901 से अब तक कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता 74.8 प्रतिशत से 57 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित है।

3- vk|kfxd fodkl e: df"k dh Hkfedk :– कृषि से देश के बहुत से उद्योग–धंघों के लिये कच्चे पदार्थ प्राप्त होती। सूती और पटसन वस्त्र उद्योग, चीनी, जूट, कपास, वनस्पति तथा बागान आदि सीधे कृषि पर निर्भर है। भारत में वे उद्योग जिनके लिए देश में कृषि से कच्चा माल उत्पन्न नहीं किया जाता वे अधिक विकसित नहीं हो सके हैं।स्पष्ट है कि देश की औद्योगिक उन्नति कृषि की उपज द्वारा ही सम्भव है।

4- [kk|kUu lkexh dh ifr: :– भोजन मानव की प्रथम आवश्यकता है जिसके बगैर मानव जीवित नहीं रह सकता। खाद्यान्न आपूर्ति न होने पर देश में अस्थिरता पैदा हो सकती है। खाद्यान्न के अभाव से युद्ध के परिप्रेक्ष्य में हलचल, गड़बड़ी और बैचेनी पैदा होती है। भारत में जनसंख्या का अधिकांश भाग शाकाहारी है जो कि अपने उदर पूर्ति के लिए मुख्यतः कृषि उपजों पर ही निर्भर करता है।

5- mnkj 0;kikj dh lgk;d :– कृषि एक उदार व्यापार है जो ऐसे मनुष्यों को भी सहारा देता है जो कि उद्योग और सेवाओं के लिए योग्य नहीं होते हैं। इसमें प्रत्येक प्रकार के लोगों को कुछ न कुछ काम मिल ही जाता है।

6- iwth fuek.k dk egRoiw.k {k= :– देश की सर्वाधिक पूँजी कृषि क्षेत्र में नियोजित है। स्थायी पूँजी की दृष्टि से कृषि क्षेत्रों का स्थान सबसे अधिक है। कृषि–क्षेत्रों में करोड़ों रूपयों का निवेश सिंचाई के साधनों, पशुओं कृषि यन्त्रों व उपकरणों आदि में लगा हुआ है।

7- df"k vkfFkd fodkl dh e[;vk/kkjf'kyk :– देश के आर्थिक विकास की योजनाओं में कृषि की विशेष भूमिका है। यही कारण है कि हमारे देश में प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि को सर्वोच्च स्थान दिया गया था ताकि हमारे विभिन्न क्षेत्रों के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। द्वितीय एवं तृतीय योजना में कृषि की कुछ उपेक्षा की गई परिणामस्वरूप देश को भीषण खाद्य संकट का सामना करना पड़ा। वार्षिक योजनाओं एवं चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में कृषि को पुनः सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी।

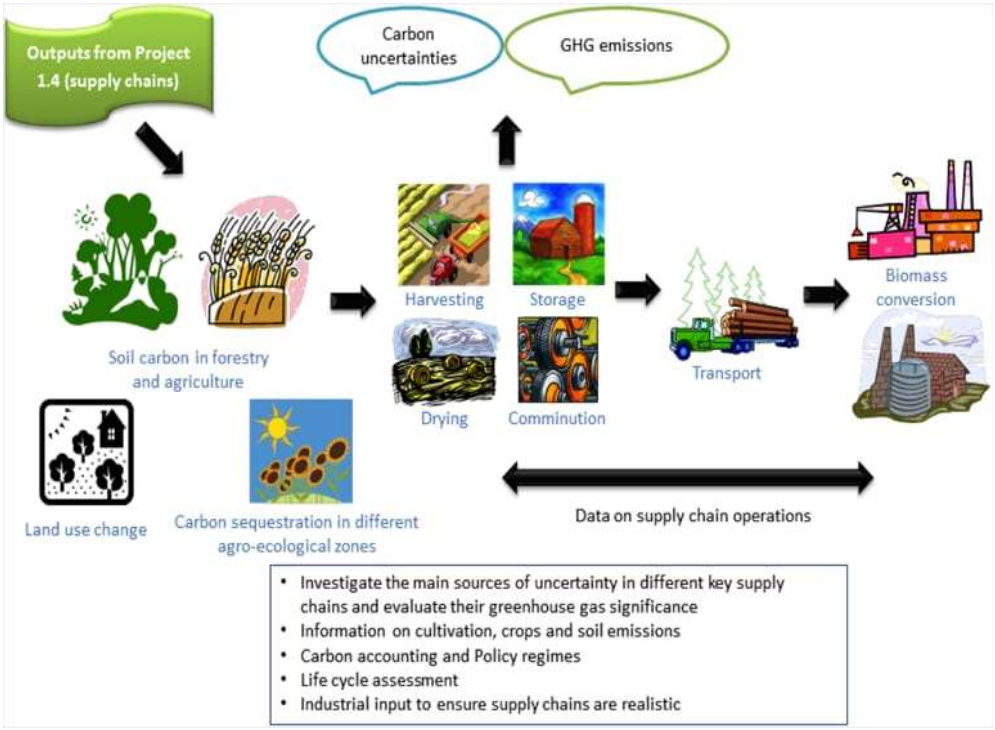

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019

A Monthly Journal of Multidisciplinary

International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

फलतः आशातीत सफलता प्राप्त हुई। चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में औद्योगिक क्षेत्र में असफलता के बावजूद जो सफलता प्राप्त हुई उसका सारा श्रेय कृषि को ही है। इसी कारण अन्य सभी पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि एवं ग्रामीण विकास को उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह भारत का आधारभूत व्यवसाय है। देश का समस्त व्यापार, वाणिज्य परिवहन, देश के उद्योग देश की समृद्धि सभी इस पर निर्भर करते हैं। इसलिए हम यह भी कह सकते हैं कि ''कृषि वह धुरी है जिसके चारों ओर भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था चक्कर लगाती है।

8- thou fuokg dk fy, d`f"k dh Hkfedk :– भारत में कृषकों द्वारा कृषि को व्यवसाय के रूप में न अपनाकर जीवन–निर्वाह के रूप में अपनाया जाता है। कृषि क्षेत्र पर देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अपरोक्ष रूप से जीवन निर्वाह के लिए देश के स्वतंत्रता के समय निर्भर थी। वर्तमान में 49 प्रतिशत जनसंख्या कृषि क्षेत्र पर जीवन निर्वाह के लिए निर्भर है।

9- vFkZ;oLFkk ds vU; {ks=ksa ds fodkl esa d`f"k {ks= dk LFkku :– कृषि इन क्षेत्रों के अलावा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान रखती है। जिसमें आंतरिक व्यापार, संचार, परिवहन, पशुपालन का मुख्य आधार, विदेशी व्यापार का स्त्रोत, राष्ट्रीय सेवा में योगदान, बैंकिंग, बीमा तथा वित्तीय संस्थानों एवं अन्य सहायक क्षेत्रों के विकास में कृषि क्षेत्र महत्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि इन क्षेत्रों का व्यवसाय मुख्यतया कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है।

Hkkjrh; vFkZ;oLFkk esa d`f"k dk ;ksxnku :– देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका है। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला है, यह न केवल देश की दो–तिहाई आबादी की रोजी–रोटी एवं आजीविका का प्रमुख साधन है बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन शैली का आईना भी है। देश में खेतीबाड़ी के साथ पशुपालन, बागवानी, मुर्गीपालन, मछली पालन, वानिकी, रेशम कीट पालन, कुक्कुट पालन व बत्तख पालन आमदनी बढ़ाने का एक अहम हिस्सा बनता जा रहा है। देश की राष्ट्री आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से प्राप्त होता है। देश के कुल निर्यात में 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रम शक्ति कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में ही लगी हुई है। आर्थिक सर्वे में साल 2018–19 में देश की आर्थिक वृद्धि दर 7 से 7.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। कृषि संबंधी आंकड़ों का अवलोकन करें तो कृषि विकास दर वर्ष 2016–17 में 4. 9 प्रतिशत थी। वर्ष 2016–17 के आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 7.8 प्रतिशत योगदान है। किसी समय में आयात पर निर्भर रहने वाला भारत आज 27.568 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर रहा है। भारत गेहूँ, धान, दलहन, गन्ना और कपास जैसी अनेक फसलों के चोटी के उत्पादकों में शामिल है। भारत इस समय दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सब्जी और फल उत्पादक देश बन गया है। देश में 2.37 करोड हैक्टेयर में बागवानी फसलों की खेती की जाती है जिससे वर्ष 2016–17 में कुल 30.5 करोड़ टन बागवानी फसलों का उत्पादन हुआ है। भारत विश्व में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक है। भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत 16.5 करोड़ टन के साथ विश्व दुग्ध उत्पादन में 19 प्रतिशत का योगदान देता है। कुक्कुट पालन में भारत विश्व में सातवें स्थान पर है। अंडा उत्पादन में भारत का चीन और अमेरिका के बाद विश्व में तीसरा स्थान है। देश में 6 लाख टन मांस का कुक्कुट उद्योग उत्पादन करता है। मुर्गी पालन बेरोजगारी घटाने के साथ देश की पौष्टिकता बढ़ाने का भी बेहतर विकल्प है। मौजूदा तौर पर भारत दुनिया का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। वर्तमान स्थिति की बात करें तो मछली पालन की देश के सकल घरेलू उत्पाद में करीब एक प्रतिशत की हिस्सेदारी है। वर्ष 2015–16 में मछलियों का कुल उत्पादन 1.08 करोड़ टन था। कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में हमारे किसानों की प्रगति का प्रमाण यह है, कि वर्श 2018 में देश का गेहूँ उत्पादन 100 मिलियन टन से ज्यादा हो गया जो कि 1947 में 7 मिलियन टन था। इस तरह की प्रभावशाली प्रगति प्रौद्योगिकी और लोक नीति के बीच पारस्परिक क्रिया से संभव हुई है। भारत में खेती किसानी आज भी जोखिक भरा व्यवसाय है

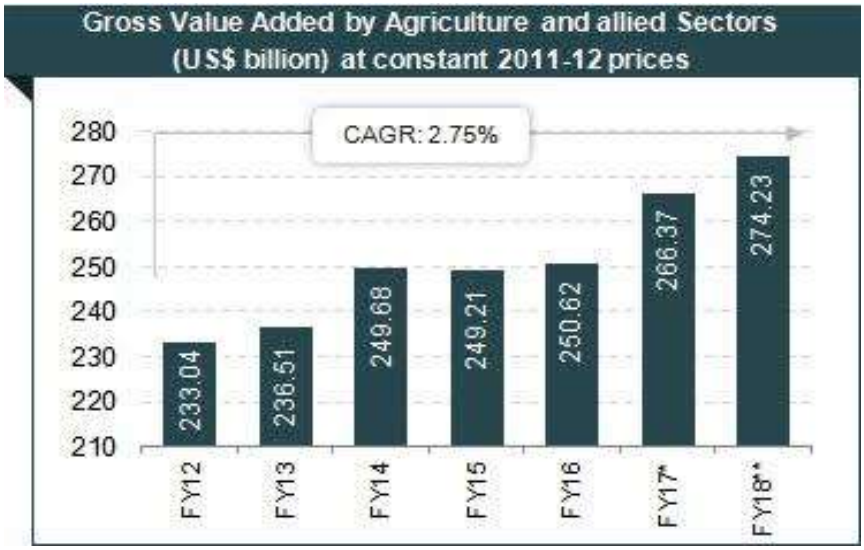

जिसमें सालाना आमदनी मौसम पर निर्भर करती है। खेती मे बढ़ती उत्पादन लागत व घटते मुनाफे के कारण युवाओं का झुकाव भी खेती की तरफ कम होता जा रहा है। जिस कारण से बड़े स्तर पर युवाओं का शहरों की ओर पलायन हो रहा है। जिससे कृषि श्रमिकों व युवा कृषकों की भी कमी होती जा रही है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी व कम आमदनी की वजह से रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं। ऐसे में कृषि–आधारित व्यवसायों को रोजगार के विकल्प के रूप में अपनाया जा सकता है। इन क्षेत्रों के अलावा मुधमक्खी पालन, बकरी पालन इत्यादि कृषि से संबद्ध ऐसी गतिविधियां हैं, जिनसे न केवल देश की अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर को सहारा मिलता है बल्कि किसानों को भी आर्थिक मजबूती मिलती है।

Hkkjrh; df"k fodkl e vku okyh leL;k,a :– भारतीय कृषि जो देश को आर्थिक स्थिरता, औद्योगिक प्रगति, रोजगार के असंख्य अवसर एवं देश की संस्कृति को आधार प्रदान करती है, स्वयं अनेक समस्याओं से पीड़ित है। प्राकृतिक परिस्थितियों की भिन्नता के कारण कृषि से संबंधित समस्याओं में भी विविधता पायी जाती है। वस्तुतः भारतीय कृषि की समस्याएँ मूलतः प्राकृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक कारणों से सम्बंधित है, जिनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है–

1. Hkfe dh moZjk 'kfDr e gkl dh leL;k :– उत्पादकता में बाधक प्रथम तत्व भूमि की उर्वरा शक्ति में निरंतर ह्रास का होना है। कृषकों द्वारा भूमि पर निरंतर फसलों के उत्पादन करने के कारण उपयोगिता होने वाले भोजन तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का उपयोग नहीं करने से भूमि की उर्वरा शक्ति निरंतर कम होती जा रही है। इसके साथ ही देश में भू–क्षरण तथा जल रिसाव से भी उर्वरा शक्ति का ह्रास हो रहा है।

2- izkd`frd izdksi :– सामान्यतः देश के किसी न किसी भाग में सदैव ही प्राकृतिक प्रकोप बना ही रहता है। जिसमें मुख्यतः सूखा, बाढ़ व अनियंत्रित वर्षा का होना साथ कीड़े–मकौड़े रोग, बीमारी, आंधी, तूफान आदि से प्रतिवर्ष कृषि को भारी हानि उठानी पड़ती है।

3- mfpr df"k fu;kstu dk vHkko :– कृषि सुधार की जो लम्बी–लम्बी योजनाएँ बनाई गई हैं, उनके कार्यान्वयन के लिये जिन व्यापक संगठनात्मक तथा संरचनात्मक परिवर्तनों की आवश्यकता है और जिनकी उपेक्षा की गई है। सिंचाई उर्वरक, बीज आदि के क्षेत्र में जो प्रगति होनी चाहिए थी वह नहीं हो सकी तथा उनका कार्यान्वयन नहीं हो सका है, जिससे किसानों की आर्थिक हालत में वांछित सुधार नहीं हो पा रहे हैं।

4- fl apkbZ ,oa fo|qrhdj.k dh leL;k :– भारत में वर्षा स्थिति अत्यन्त अनिश्चित एवं अनियमित है तथा वर्ष में केवल कुछ महिनों में ही वर्षा होती है। निरंतर प्रयासों के बावजूद सिंचाई के साधनों का अभी भी पर्याप्त विस्तार नहीं हो सका है। ऐसी स्थिति में ही भारतीय कृषि अनिश्चित हो जाती है। इसके साथ ही विद्युतीकरण की अपर्याप्त सुविधा भी एक प्रकरण समस्या है जिसका गांवों में विकास न होना एवं समय

पर विद्युत सुविधा उपलब्ध नहीं होना भी भारतीय कृषि की समस्याएँ हैं।

5- foi.ku ,o dherk lEc/kh leL;k, :– कृषि उत्पादन में वृद्धि होते हुए भी कृषकों को कृषि व्यवसाय से प्राप्त उत्पादों की उचित विपणन व्यवस्था व कीमत–नीति के अभाव में अनुकूलतम लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। कृषि उत्पादों की कीमतों में अत्यधिक उतार–चढ़ाव मण्डी में विपणन मध्यस्थों की अधिकता खाद्यान्नों के विपणन में विपणन लागत की अधिकता, विपणन कुरीतियॉं नियन्त्रित मण्डियों का अभाव, कृषकों की कीमत ज्ञान की अज्ञानता, संग्रहण के लिए गोदामों का अभाव आदि, समस्याओं के कारण कृषकों को उत्पाद के विक्रय से उचित कीमत प्राप्त नहीं होती है।

6- df"k lc/kh vU; leL;k, :– भारतीय कृषि के विकास में उपरोक्त समस्याओं के अलावा भी अनेकों समस्याएँ भारतीय कृषि के क्षेत्र में विद्यमान है, जिनमें ठोस व सही कृषि नीति का अभाव शीत ग्रह एवं भण्डारग्रहों का अभाव, कार्यगत पूँजी का अभाव, कृषि अनुसंधानों की कमी, उत्तम बीजों एवं खाद व उर्वरकों का अभाव एवं कृषकों में शिक्षा का अभाव जैसी प्रमुख समस्याएँ आज भी भारतीय कृषि के विकास में पर्याप्त रूप से देखी जा सकती है।

df"k {k= e vku okyh leL;kvk dk lek/kku :– भारतीय कृषि से संबंधित समस्याओं को हल करने के लिए विस्तृत पैमाने पर संगठित एवं समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। विश्व यह विचित्र तमाशा देख रहा है कि अमेरिका जो औद्योगिक दृष्टि से सबसे विकसित देश है, भारत जैसे कृषि प्रधान देश को खाद्यान्न दे रहा है, जहॉं कृषि के अन्तर्गत आये क्षेत्रफल के 75 प्रतिशत भाग पर खाद्यान्न की पैदावार होती है और जहॉं श्रमिक बल में से 49 प्रतिशत लोग केवल खाद्यान्न की खेती में लगे हैं। जैसे–जैसे समय बीतता जायेगा, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में खाद्य निर्यात करने वाले देश खाद्य–पदाथों को आयात करने वाले देशों के विरूद्ध इसे एक राजनीतिक अस्त्र के तौर से इस्तेमाल करेंगे। इसलिए यदि भारत को जिन्दा रहना है और प्रगति करनी है तो उसे कृषि को सर्व प्रमुखता प्रदान करनी होगी इस प्रकार उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए कृषि की समस्याओं के समाधान हेतु निम्न प्रयास किये जा सकते हैं –

1- u;h rduhdh lk/kuk d i;kx :– देश की कृषि के विकास के लिए आवश्यक उपाय कृषि के संबंध में नई तकनीकी प्राप्त करने व उसे किसानों तक पहुॅंचाने की व्यवस्था करना। जिसमें तकनीकी यंत्रीकरण का आधुनिकरण के साथ विभिन्न यांत्रिक साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिससे कृषि में उत्पादकता को बढ़ाया जा सके, यातायात के माध्यम से समय व श्रम को बचाया जा सके। सिंचाई के साधनों में आधुनिक यंत्रों जैसे, नोजल, पंप, पाईप व मशीन का उपयोग कर, कम पानी का प्रयोग कर सही व जरूरत के अनुसार सिंचाई कर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

2- Qly pdh;dj.k dh ifd;k dk viukuk :– भारतीय कृषि की पद्धतियों में यह देखा जाता है कि प्रायः किसान एक या दो फसलों का उपयोग करते हैं। जिस कारण से उत्पादकता में वृद्धि नहीं होती है इन समस्याओं के समाधान के लिए फसल चक्रीयकरण को अपनाया जाना चाहिए ताकि उस फसल को रोग व बीमारियों से भी बचाया जा सके एवं उत्पादन को भी बढ़ाया जा सकता है।

3- ugj] ck/k ,o unh tkM ifj;kstuk, dk fuek.k djuk – भारत की कृषि मौसमी कृषि है अर्थात् मानसून आधारित कृषि है। जिससे केवल मानसून के आधार पर खेती की जाती है, और बाकी समय में खाली खेती पड़ी रहती है, क्योंकि यहॉं सिंचाई की आधुनिक एवं पर्याप्त सिंचाई सुविधा नही पाई जाती है। इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए भारत की कृषि को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि सिंचाई की पर्याप्त सुविधा की जाए, जो इन नहरों व बॉंधों के निर्माण के साथ ही नदियों को जोड़कर पर्याप्त पानी की उपलब्धता करनी होगी, साथ ही हर गॉंव में तालाब निर्माण की व्यवस्था भी करनी होगी, जिससे कृषि सिंचाई के लिए पर्याप्त जल की पूर्ति हो सके ताकि हर मौसम में खेती को किया जा सके।

4- mfpr df"k uhfr;k dk fuek.k :– भारतीय कृषि को विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि पर्याप्त व किसान हित में उचित व सरल नीतियों का निर्माण किया जाए, ताकि किसानों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने और कृषि क्षेत्र को नया रूप देने के साथ–साथ कृषि को समय के साथ विकसित किया जा सके।

5- mfpr df"k eY; dh 0;oLFkk :– कृषि उपज का स्तर निर्धारित करने में कृषि मूल्यों की भूमिका महत्वपूर्ण है। कृषि के उपज का उचित मूल्य मिलना चाहिए, ताकि किसान कृषि को लगन एवं आत्मविश्वास के साथ कर सके, क्योंकि बढ़ती हुई कीमतें किसानों को प्रोत्साहन देती है, लेकिन किन्हीं कारणों से कृषि उपज मूल्य में अनुचित गिरावट किसानों को हतोत्साहित कर देती है। इसलिए फसल के पूर्व समर्थित मूल्य के निर्धारण की अत्यन्त आवश्यकता है। किसानों को इससे अनिश्चितता का सामना नहीं करना होगा। उन्हें भविष्य में कीमत के उच्चावचनों के बावजूद यह जानकारी होगी कि वस्तु की कीमत निर्धारित मूल्य से नीचे नहीं आ सकती और वे अपने विनियोग निर्णय को तद्नुसार व्यवस्थित कर सकेंगे।

6- df"k _.k dh i;kIr lfo/kk :– भारतीय कृषि मानसूनी निर्भरता होने के साथ–साथ अधिक लागत की कृषि भी है। जिस कारण से यहॉ के किसान पर्याप्त मात्रा में बीज, खाद व कीटनाशकों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं। इसलिए भारतीय कृषि को विकसित करने के लिए किसानों को पर्याप्त ऋण संबंधी सुविधा भी दी जानी चाहिए, ताकि अधिक आधुनिकीकरण व संसाधनों का प्रयोग कर कृषि को एक व्यवसाय के रूप में कर सकें एवं अपने कृषि के कार्यों को आधुनिक तरीकों से कर सकें।

7- df"k dk;ks e yx ykxk dk if'k{k.k dh 0;oLFkk :– यह भी भारतीय कृषि की एक प्रमुख समस्या है कि यहॉ के किसान अनपढ़ एवं अशिक्षित हैं, जो कृषि की नई–नई विधियों व तरीकों को सही तरीके से करने में असमर्थ है। आधुनिक व वैज्ञानिक तरीके से कृषि कार्यों को करने में भारतीय किसान अन्य देशों के किसानों की अपेक्षा कम जानते हैं। इसलिए इन्हें सक्षम व कृषि संबंधी जानकारियों से अवगत कराने के लिए इन्हें, शिक्षण व प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि यहॉ के किसान यंत्रीकरण व वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग कर अधिक से अधिक कृषि में उत्पादन का कार्य कर सकें।

8- df"k vuqla/kkuk dh lfo/kk :– इन सभी सुविधाओं के साथ ही कृषि के क्षेत्र में शोध संबंधी नये–नये कार्यक्रम करना आवश्यक है जिससे नये–नये तरीकों व वैज्ञानिक पद्धतियों का पता लगाया जा सके, एवं कम साधन व लागत में अधिक उत्पादन किया जा सके साथ ही कृषि शिक्षा को भी बढ़ाया जा सके।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कृषि को निर्वाहमयी व्यवसाय से लाभपूर्ण व्यवसाय में बदलने के लिए कृषि पर आश्रित जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार हेतु और देश के प्रमुख व्यवसाय कृषि को विविधीकृत करने के लिए संस्थागत और तकनीकी सुधारों की आवश्यकता है।

'kks/k ikflr ;k :– भारतीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण हेतु कृषि क्षेत्र को भी सुदृढ़ होना आवश्यक है, जिसके हेतु :–

1. कृषि क्षेत्र में नवाचार एवं नवीन तकनीक का समावेश होना चाहिए,जिससे कृषि क्षेत्र की उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाया जा सके।
2. कृषि क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों एवं कृषकों को उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करें, ताकि कृषकों के जीवन स्तर में वृद्धि हो सके।

fu"d"k :– कृषि क्षेत्र भारत ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे प्राचीन व्यवसाय है और आज भी संपूर्ण विश्व की जनसंख्या का लगभग दो तिहाई भाग पूर्ण रूप से कृषि पर आश्रित है, जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में रीढ़ की हड्डी का महत्व है ठीक वैसे ही भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व है। कृषि हमारे देश की लगभग 49 प्रतिशत लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर आजीविका का प्रमुख साधन है। कृषि देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि औद्योगीकरण मूल रूप से कृषि विकास की ही देन है। जो पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध करानी है। भारत जनसंख्या बाहुल्य राष्ट्र होने के कारण कृषि पर निर्भरता अत्यधिक रूप से बढ़ जाती है, क्योंकि यह लोगों को रोजगार देने के साथ–साथ, जीवन–निर्वाह का भी प्रमुख आधार है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की धुरी है, जिसके चारों ओर विकास का चक्र चलता है।, चाहे वह व्यापार हो, उद्योग हो, रोजगार के अनेकों साधन, सामाजिक या राजनैतिक एवं समस्त आर्थिक गतिविधियॉ कृषि के विकास के साथ सम्पन्न होती जाती है। क्योंकि सभी क्षेत्र मानव से लगे हुए हैं, और मानव कृषि के उत्पादों से। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित करने में सभी मानवीय प्राकृतिक संसाधनों, तथा अन्य क्षेत्रों के विकास में कृषि की उपयोगिता सर्वोपरी है। अन्तः इन सभी क्षेत्रों के विकास में ही भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास हो सकता है जो कि कृषि की उपेक्षा करने पर संभव नहीं है।

आज भारतीय कृषि के क्षेत्र में अनेकों समस्याएँ हैं, लेकिन इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और कृषि को विकसित कर भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व पटल पर ले जाया जा सकता है। अन्त में इस अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि कृषि क्षेत्र व इससे संबंधित संसाधनों को प्राथमिकता दिये बगैर या अन्य देशों के समतुल्य विकसित किये बिना ही, भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित करने की बात करना एक पूर्णतः बेईमानी होगी।

lanHk xzFk :–

- अग्रवाल एन.एल. (2015) भारतीय कृषि का अर्थतंत्र' 'भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि'' प्रकाशक– राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, ISBN-978-93-5131-108-9, पृ.क्र. 12–13.
- कुमार वीरेन्द्र (2018) कुरूक्षेत्र 'कृषि संबद्ध क्षेत्र : किसानों की आय बढ़ाने में मददगार' प्रकाशक– सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन लोधी रोड, नई दिल्ली ISBN-971-8451, पृ.क्र. 5–9 माह–अप्रैल.
- सिंह डॉ.विक्रांत (2016) कृषि अर्थशास्त्र, भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका, प्रकाशक– भारती भण्डार, 6 सुनील कॉम्पलेक्स, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ–250002, ISBN-978-81-930185-4-5, पृ.क्र. 51–60.
- सक्सेना डॉ.जगदीप (2018) कुरूक्षेत्र, ''किसान कल्याण और कृषि विकास से नए भारत का निर्माण'' प्रकाशक– सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन लोधी रोड, नई दिल्ली, ISBN-971-8451 पृ.क्र. 10–14, माह– मार्च.
- स्वामीनाथन एम.एस. (2019), ''योजना, ''कृषि क्षेत्र में नये प्रौद्योगिकीय नवाचार से किसान कल्याण'' प्रकाशक विभाग – कमरा सं.56, भूतल, सूचना भवन, सीजीओ परिसर, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003 ISBN-971-8397, पृ.क्र. 12–16 माह– जनवरी.
- मिश्र प्रो.जे.एन.(2017) भारतीय अर्थव्यवस्था, ''राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि'' प्रकाशक– किताब महल, 18–बी, न्याय मार्ग, अशोक नगर इलाहाबाद, ISBN-81-225-0348-9, पृ.क्र. 315–326
- दलवई, डॉ.अशोक (2017) ''कुरूक्षेत्र', कृषि विकास और किसान कल्याण से किसानों की आय दोगुनी करने की कवायद, प्रकाशन विभाग– सूचना ओर प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली, ISBN-971-8451, पृ.क्र. 5–10.
- www.agricoop.nic.in.
- www.agriculture.gov.in.
- https://farmer.gov.in.

df"k ,o df"k vk/kkfjr m|e&,d v/;;u

Mk- uk,y nku
विभागाध्यक्ष, शास. मानकुँवर बाई महाविद्यालय, जबलपुर

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे अभिन्न अंग 50 प्रतिशत से अधिक आबादी के लिये कृषि रोजगार का एक स्रोत है। इस क्षेत्र का सरल घरेलू उत्पाद में लगभग 13.9 प्रतिशत योगदान है। एक अनुमान के अनुसार 2014–15 में कुल उत्पादन 251.12 मिलियन रहा।

भारत में कृषि का इतिहास अत्यंत प्राचीन भारत में 9000 ईसा पूर्व तक पौधे उगाने, फसल उगाने तथा पशुपालन विशिष्ट उद्यम के रूप में पाया जाता रहा। प्राचीन भारत में कृषि संबंधी अनेक ग्रन्थ लिखे गये।

कृषि पराशर, कृषि संग्रह, पराशर तंत्र, वृक्षायुर्वेद मलयालम भाषा में कृषि गीता, फारसी में दारा शिकोह रचित नुश्क दर पन्नी फलहत तथा कश्यप द्वारा रचित कश्यपीय कृषि सूक्त आदि विभिन्न ग्रन्थ लिखे गये।

भारत में कृषि में 1960 तक पारम्परिक बीजों का प्रयोग किया जाता रहा जिनसे उपज कम प्राप्त होती थी। 1960 के बाद कृषि के क्षेत्र में हरित क्रान्ति का दौर आया। 1960 के बाद उच्च उपज बीज (HYV) का प्रयोग शुरू हुआ इससे सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ गया तथा अधिक सिंचाई की आवश्यकता पड़ने लगी। इसके साथ ही गेहूँ ओर चावल के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई। पंजाब हरियाणा जैसे राज्यों में इस हरित क्रांति का अधिक प्रभाव पड़ा लेकिन देश के अन्य राज्यों में इस हरित क्रान्ति का प्रभाव नगण्य रहा। किसानों की गरीबी, सिंचाई का अभाव तथा साहूकारों के प्रभाव ने किसानों की स्थिति पर विपरीत प्रभाव डाला। वही कृषि आधारित उद्यम उत्तरोत्तर वृद्धि करते गये।

बीज, कृषि उपकरण तथा उर्वरक का व्यवसाय करने वाले उद्यम धनी होते गये जबकि कृषकों की स्थिति में कोई सुधार नही हुआ। कृषि आधारित सैकड़ों हजारों उद्यम भारत में क्रियाशील है जिनके कुछ निम्न है –

कृषि आधारित शीर्ष कम्पनिया :–

(1) M;ikUV bf.M;k & यह भारत की सबसे पुरानी कृशि कम्पनियों में से एक है जिसकी स्थापना 1802 में हुई थी इसका 90 से अधिक देशो में परिचालन है। इसका प्रधान कार्यालय गुड़गॉव में रिक्त है। यह कम्पनी एग्रो वेस्ड प्रोडक्ट जिसमें बीज कीटनाशक आदि में डील करती है।

(2) jfy;k bf.M;k & टाटा ग्रुप्स, रैलीज इंडिया लिमिटेड की सहायक कम्पनी की स्थापना 1815 में की गयी थी और यह सबसे महत्वपूर्ण एग्रो केमिकल कंपनियों में से एक है। यह उर्वरकों और कीटनाशकों से लेकर बीज आदि से संबंधित है यह उपचारित बीजों का विक्रय करती है इसका एक शोध विंग बैंगलोर में है।

(3) uft ohMk cht fyfeVM & यह कृषि बीज का सौदा करने वाली प्रमुख कंपनी है। भारत में बी टी कपास के बीज था सबसे बड़ा उत्पादक है इसकी स्थापना 1973 में हुई। इसका मुख्यालय हैदराबाद, तेलंगाना है। यह कम्पनी कपास, सूरजमुखी, सब्जी, ज्वार बाजरा आदि फसलों के लिये विस्तृत श्रृंखला के बीज प्रदान करती है। एन.एस.एल.समूह इसी कम्पनी का हिस्सा है।

4. yedu bf.M;k ,xk bfDoleUV l ikboV fyfeVM & लेमकेन इंडिया का प्रारंभ 2010 में किया गया इसका मुख्यालय नागपुर है। यह मिट्टी की बुवाई पौधो की सुरक्षा हेतु आवश्यक मशीनरी का निर्माता है वि व के 45 देशों में इसका कारोबार है। लेमकेन इंडिया हल कल्टीवेटर, पावर हैरो तथा अन्य कृषि उपकरणों के उत्पादन में अग्रणी है ।

5. ,MoUrk fyfeVM ¼Advanta½ & यह बीज उत्पादन में सक्रिय कम्पनी है जिसकी स्थापना 1994 में हुई। इसका कार्पोरेट कार्यालय एवं मुख्यालय हैदराबाद में है। एडवेन्ता का कारोबार छह महाद्वीपों में प्रमुख है जहॉ तक अनाज और अनाज का संबंध है, यह एन.एस.ई.और बी.एस.ई.

इण्डेक्स में सूचीबद्ध है। यह प्लांट जेनेटिक्स कम्पनी है ।

6. eku lUVk bfM;k & यह अमेरिकी कम्पनी की भारत में सहायक कंपनी है जिसकी स्थापना 1901 में अमेरिका के शहर मिसौरी में हुई थी इसका प्रमुख व्यवसाय कीटनाशकों और बीजों से संबंधित है। इसका मुख्यालय मुम्बई में है।

7- **Poabs** dkcfud link & पोआब्स तिरूवल्ला केरल में स्थित है। पोआब्स आर्गेनिक स्टेट 1889 में स्थापित हुआ यह एक बहु फसल रोपड़ कम्पनी है। जहॉ तक कॉफी चाय सफेद मिर्च और काली मिर्च का संबंध है यह पूरे बाजार पर अपना अधिपत्य रखती है ।

8- jk"Vh; df"k m|kx & यह 1970 में स्थापित हुई इसका प्रमुख केन्द्र लुधियाना पंजाब है। यह कृषि उपकरण निर्माण में भारत के बाजार में काफी हिस्सेदारी रखता है। कम्पनी के प्रमुख उत्पादों में रिज प्लान्टर, क्रॉप प्लैटर, धान अनाज प्लान्टर, सीड ड्रिल मक्का रोलर तथा वेजिटेबल सीड एक्सट्रैक्टर शामिल है।

9- xknjst ,xkoV fyfeVM & गोदरेज समूह की यह सहायक कम्पनी 1990 में अस्तित्व में आई। यह कृषि आधारित उत्पादों का कारोबार करती है। इस कम्पनी को पक्षी चारा, पशु चारा, कृषि रसायन, पोल्ट्री आधारित उत्पाद और ताड़ के तेल के बागान प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

10- jklh cht & रासी सीड्स कम्पनी बीज उत्पादन की कम्पनी है। यह भारत की सर्वश्रेष्ठ कम्पनियों में से एक है । सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले बीज हेतु यह प्रसिद्ध है।

2017 में भारत कृषि उत्पादको में नौवॉ सबसे बड़ा निर्यातक था।

राष्ट्रीय रबर नीति का वाणिज्य मंत्री ने अनावरण किया प्रधानमंत्री के प्रमुख कार्यक्रम ई–एन ए एम ने ई–भुगतान का उपयोग करके मंडियों के बीच अन्तर राज्य व्यापार शुरू करके एक और उपलब्धि हासिल की।

भारतीय चीनी उद्योग दक्षिण कोरिया की निर्यात करने की योजना बना रहा है।

एग्री–टेक फर्म निनकन्टार्ट ने एक्सेला यू एस सिजेन्टा से 35 मिलियन डालर जुटाये।

देश की खाद्यान्न आव यकता की पूर्ति हेतु हमें 57 से अधिक विकास दर की आवश्यकता है जबकि हम काफी पीछे चल रहे हैं। कृषि विशेषज्ञो का अनुमान है कि आने वाले 20 वर्षों में खाद्यान्न संकट बढ़ सकता है। अतः हमें अपनी निर्भरता के केवल कृषि ही नहीं वरन् दुग्ध, फल, मॉस जैसे उद्योगों पर भी रखनी होगी। आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट में यह बताया गया कि कृषि योग्य भूमि में 28 लाख हेक्टेयर की कमी हो चुकी है।

विभिन्न कृषि संबंधी अनुसंधान केन्द्र कार्य कर रहे है। जिन्होंने कृषि उत्पादन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन फिर भी स्थिति उतनी अच्छी नही है जितना कि विदेशों में है। कृषि आधारित उद्योगों ने विदेशी सहायता से उत्तरोत्तर प्रगति की है लेकिन कृषि क्षेत्र में अभी तक ऐसा अभिनव प्रयोग संभव नही हो पाया है। आवश्यकता इस बात की है कि कृषि हेतु पारम्परिक पद्धतियों को त्याग कर नई तकनीकों का प्रयोग किया जाये, तथा इन तकनीकों को सरकारी सहायता से देश के अंतिम गॉव तक पहुँचाया जाये। इस्रायल जैसे बंजर देश से हमें सबक सीखना चाहिये जहॉ उन्होंने बंजर भूमि को हरियाली में बदल दिया, समुद्र के खारे पानी को मीठे पानी में बदल दिया है। अभी भी वक्त है कि हम कृषि से राजनीति को अलग कर सामूहिक प्रयासों से स्थिति में सुधार लाये। कृषि क्षेत्र में विदेशी निवेश आज की आवश्यकता है। अगर अभी भी हम नही चेते तो हमारे आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कृषि की स्थिति सुधारने के लिये उसे पुनर्भाषित करने की आवश्यकता है।

सुनील अमर अपने लेख में लिखते है कि एक ऐसे समय में जब कृषि योग्य भूमि लगातार घट रही हो तथा उस पर निर्भर रहने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है तो यह जरूरी हो जाता है कि कृषि की ढॉंचागत व्यवस्था को नये सिरे से परिभाषित किया जाये। भारत में विभिन्न ऋतुओं की उपस्थिति विभिन्न प्रकार की मिट्टियॉं यह सभी कृषि हेतु उपयोगी है पर हमारी कृषि में पारम्परिक विधियों पर निर्भरता ही हमारी समस्या की जड़ है। कम आबादी हेतु पारम्परिक विधियॉं उचित थी लेकिन जितनी तेजी से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उतनी गति से कृषि में नवीन तकनीको

का उपयोग नही हो रहा है जिस प्रकार हमने जीवन के अन्य क्षेत्रों में विदेशी कोलेबोरेशन हिस्सेदारी की नीति अपनाई वैसे ही कृषि में भी विदेशी तकनीकों को अपनाना आवश्यक है। वाहन उद्योग जनसंख्या वृद्धि की मॉग पूरी कर रहा है अन्य उद्योग भी प्रतिस्पर्धा के मार्ग पर चल रहे है। केवल कृषि ही इस दृष्टि से पीछे है। यदि हम विदेशी हिस्सेदारी जैसे प्रत्ययों को कृषि के क्षेत्र में भी लागू कर सके तो निश्चित ही कृषि की स्थिति में भी गुणात्मक एवं मात्रात्मक वृद्धि संभव हो सकती है।

lnHk xFk lph %&

1. Agrarian crisis in India : edited by D. Narsimha Reddy and Srijit Misra.
2. A.K. Vyas Rishiraj : Introduction to Agriculture, Publisher- Jain Brothers.
3. R.L. Arya, Sonali Arya, Renu Arya, Janardhan Kumar : Fundamentals of Agriculture
4. Alagh Bhalla, Performance of Indian Agricultural , Sterling publishers New Delhi
5. Indian Agriculture, Yesterday & Tomorrow, Ed. Ramesh B.Thakre, Kushal Publication and Distributors.

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

कृf"k dh c<+rh mRiknu ls कृ"kdk dk thou Lrj ij izHkko ¼fM.Mkjh ftyk dk lUnHkZ e½

izlUu onu ejdke
शोधार्थी, भूगोल विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर
Mk- **भुनेश्वर टेम्भरे**
प्राध्यापक, रानी दुर्गावती शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डला (म.प्र.)

सारांश :– विकासशील मानव अपने दैनिक आवश्यकताओं को निरन्तर बढ़ाते ही जा रहा है पृथ्वी में केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो कभी अपने आप में सन्तुष्ट अनुभव नहीं करता है अपनी आवश्यक्ताओं के लिए संसाधनों का तेजी से दोहन करता चला जा रहा है जिससे कुछ हद तक मानव स्वास्थ्य में पड़ने वाले प्रभाव को देखा जा सकता है। मानव अगर संसाधनों को अपने आवश्यकता पूरा करने के लिए थोड़ा कम कर दे तो अपनी स्वास्थ्य की रक्षा एवं नई पीढ़ी के लिऐ भी देख–रेख करते हुए अपनी आवश्यकताओं को पूरा करनी चाहिए है जिससे आने वाली पीढ़ी के लिए बच सकता है कृषि के क्षेत्र में उत्पादन पूर्व की अपेक्षा बढ़ रही है जिससे कृषक जीवन पर प्रभाव पड़ रहा है उनके रहन – सहन आर्थिक स्थिति एवं संस्कृति पर प्रभाव पड़ रहा है। अभी भी हमारे बजाग विकासखण्ड, करंजिया विकासखण्ड, डिण्डौरी के कुछ क्षेत्र, समनापुर विकासखण्ड एवं मेंहदवानी विकासखण्डों में कोदों, कुटकी की खेती की जाती है और कई वर्षों तक रखे रहते है परन्तु अभी भी उस बीज में घुन एवं कीड़े नहीं लगते हैं। और दिल्ली के लोग इस क्षेत्र से खरीद करके ले जाते हैं। पूछने पर कहते हैं कि इसका दवाईयाँ बनाई जाती हैं। कोदों का कोदई निकाल करके पक्का के खाया जाता है सुगर के बिमारी वाले, कुटकी का दूध में पक्का के खीर बनाया जाता है यह खीर अत्याधिक स्वादिष्ठ होता है।

iLrkouk ½& भारत में रहने वाली जनसंख्या अधिकतर कृषि कार्य पर निर्भर है इसलिए कृषि भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है भारत में 64 प्रतिशत आय कृषि से होती है जैसे–जैस कृषि का उत्पादन बढ़ता है उसी प्रकार कृषकों को अच्छी आमदानी प्राप्त होती है जिससे उनकी आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति मजबूत हो रही है।

डिण्डौरी जिले की जलवायु कृषि के अनुकूल है यहाँ सभी मौसम में कृषि कार्य संभव है रवि की प्रमुख फसलें गेंहु ,चना, मटर, मसूर, बटरी, तिवरा, अलसी, आदि हैं खरीफ मौसम की प्रमुख फसल धान, अरहर, कोदो, कुटकी, कागुन, मड़िया, तिली, उड़द, मक्का आदि हैं। जायद की फसलों मे सिंचाई द्वारा सब्जियाँ तरबूज, खरबूज, ककडी, खीरा, कद्दू, बरबटी, भिण्डी, आदि की कृषि की जाती है इस प्रकार की खेती से कृषक की आय में वृद्धि होती है कृषक के जीवन स्तर में सुधार होता है।

अध्ययन क्षेत्र डिण्डौरी की मृदा एवं जलवायु कृषि के लिए अनुकूल है इसलिए यहाँ का मुख्य व्यवसाय कृषि है परन्तु यह क्षेत्र पहाड़ी होने के कारण कृषकों को अधिक दिकतों का सामना करना पड़ता है, मेंढ़ बंधान योजनाओं से काफी फैयदा हो रहा है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 704218 है। जिसमें कुल कृष्कों की संख्या 322341 पुरूष कृषक 165103 है एवं महिला कृषक 157238 हैं जिले में खेतीहर मजदूर पुरूष 25532 एवं खेती हर मजदूर महिला 26432 कुल 51964 खेती हर मजदूर हैं। यहाँ की प्रमुख फसलें गेंहू, धान, बटरी, अरहर, मसूर, चना, कोदों, कुटकी, मक्का आदि है।

डिण्डौरी जिलें में कुछ लोग कृषि कार्य तो करते हैं परन्तु उनके पास भूमि नहीं होने के कारण वे केवल दूसरों के खेतों में मजदूरी करते हैं, या फसल के उत्पादन का आधा हिस्से वाली खेती करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में अधिया कहते हैं।

कृषि जिले के आर्थिक विकास का मुख्य आधार कृषि है। जिले में प्राचीन समय से कृषि क्रियाऐं की जाती रही हैं। जिले की लगभग 95 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवासरत है। इनका मुख्य व्यवसाय खेती करना है। यहाँ पर की जानी वाली कृषि का ढ़ग परम्पारागत है। आज भी यहाँ खेती में गोबर खाद् का प्रयोग बहुतायत होता है। जिले में होने वाली कृषि पूर्णतः प्राकृतिक वर्षा पर निर्भर है। क्योंकि जिले में सिंचाई सुविधाओं का पूर्णतः अभाव है। यहाँ पर की जानी वाली कृषि में आधुनिक उन्नत बीज एवं उपकरणों का प्रयोग नहीं होता है।

मेंहदवानी, अमरपुर एवं शहपुरा विकास खण्डों का अधिकांश भाग पत्थरीला पहाड़ी एवं उबड़ – खाबड़ है। जिसके कारण इन क्षेत्रों में कोदो, कुटकी, मक्का, ज्वार, उड़द आदि की फसलें ज्यादा उगाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में वनों को काट कर जिसे खार कहते हैं, पर खेती की जाती है। इस प्रकार के खेत ढ़ाल युक्त असमतल होते हैं। जहाँ पर परम्परागत फसलों का ही उत्पादन होता है। यहाँ पर इस जिले में खेती के साथ–साथ पशुपालन भी किया जाता है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन का बड़ा महत्व है, कारण की यहाँ की कृषि परम्पागत हानम के कारण कृषि कार्य में हल बैल आदि का उपयोग होता है। साथ ही खाद् के रूप में गोबर का प्रयोग किया जाता है। यातायात की सुविधाओं की अभाव होने के कारण इन पशुओं का उपयोग बोझा आदि ढ़ोने में भी किया जाता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन पशुओं का क्रय–विक्रय भी कर लिया जाता है। इस प्रकार जिले में कृषि के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के पशुओं जैसे – गाय, बैल, भैस, बकरी, गाड़र, घोड़े आदि पशुओं को पाला जाता है। इन पशुओं के रहने के लिऐ अपने घर के पास ही अलग से गौ–शाला का प्रबंध किया जाता है। इन पशुओं से कृषक दूध, दही, मक्खन, घी, बाल, वा खाद् आदि प्राप्त करते हैं। और इनका दैनिक जीवन में उपयोग किया जाता है।

v/;;u {k= %& भारत के हृदय स्थल मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में स्थित जिला डिण्डौरी का अक्षांशीय विस्तार भूमध्य रेखा से $22^{0}00^{'}$ से $23^{0}22^{'}$ उत्तरी अक्षांश तथा $80^{0}85^{'}$ से $80^{0}58^{'}$ पूर्वी देशांतर में स्थित है। जिला डिण्डौरी के चारों ओर क्रमशः उत्तर में उमरिया, उत्तर पश्चिम में जबलपुर, दक्षिण–पयिश्चम में मण्डला तथा पूर्व में बिलासपुर कवर्धा तथा अनूपपुर जिले स्थित हैं। जिला डिण्डौरी का कुल क्षेत्रफल 6128 वर्ग किलोमीटर है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. अध्ययन क्षेत्र डिण्डौरी जिला में कृषि उत्पादन का अध्ययन करना।
2. कृषकों की आय एवं जीवन स्तर सांस्कृति आदि का अध्ययन करना।
3. कृषि क्षेत्र में नवाचार के कारण कृष्कों के उत्पादन में वृद्धि।

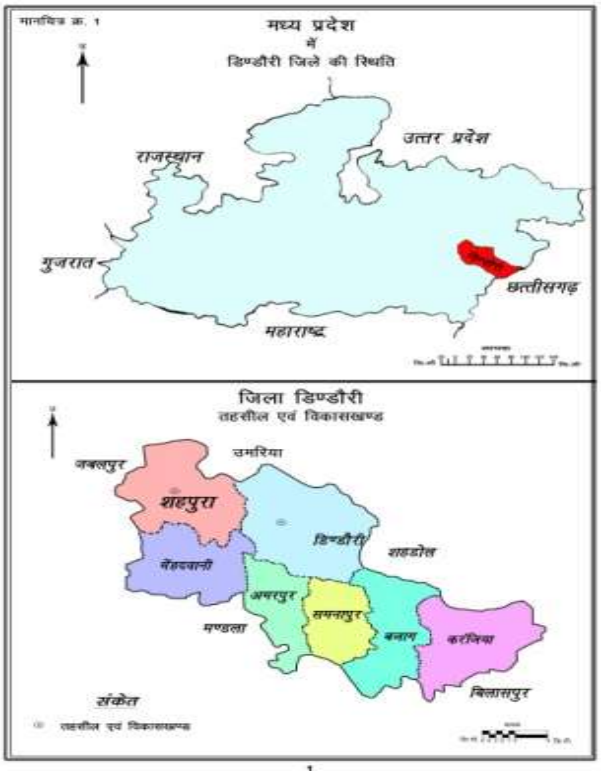

midYiuk %&

1. डिण्डौरी जिला में कृषि से उत्पादन बढ़ रहा है
2. कृषि के उत्पादन बढ़ने से कृषक का जीवन स्तर में सुधार हो रहा है।
3. जिला डिण्डौरी में सरकारी योजनाओं से कृषकों के खेतों का समतली करण एवं मेढ़ बंधान से खेतों में पहले के अपेक्षा अधिक पैदावार हो रहा है।

'kks/k i)fof/k :– प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक आँकड़े अवलोकन एवं साक्षातकार द्वारा आँकड़े अर्जित किये गये हैं एवं द्वितीयक आँकड़े को प्राप्त करने लिए डिण्डौरी जिला की जिला सांख्यिकीय पुस्तिका जिला गजेटियर शोध पत्रों का अध्ययन किया गया है इस प्रकार अर्जित आँकड़ों को सारणीयन विश्लेषण एवं चित्रमय प्रस्तुत किया गया है।

fM.Mkjh ftyk कृf"k mRiknu %& यहाँ का प्रमुख फसलें गेंहु, चावल, गन्ना, तुअर, मक्का, चना है उपरोक्त सारणी में इन फसलों के उत्पादन को दर्शाया गया है–

lkj.kh Øekd 1-1

fM.Mkjh ftyk e: ie[k Qlyk dk mRiknu ¼gDV;j e½ 1991&2016

जिला / तहसील / विकास खण्ड	अनाज						दालें				
	गेहू	धान	ज्वार	मक्का	अन्य अनाज	योग अनाज	चना	चना,तुअर	उड़द	अन्य दालें	योग दालें
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1991	45229	71213	151	17683	51515	185791	6898	12861	5085	8242	33086
2000–2001	32682	73146	118	17928	48681	172555	5223	10052	3979	6961	26215
2010–2011	28978	78694	64	18121	40607	166464	8637	6085	3574	48614	66960
2011–2012	28978	78694	64	18121	40607	166464	8637	6135	3574	66960	233424
2012–2013	30298	81710	79	18225	39684	170015	9349	5842	00	53372	68563
2013–2014	32144	81182	77	18314	170005	170005	9409	5567	3781	48589	67346
2014–2015	32275	81444	22	18778	38701	171220	9576	6144	3981	47769	67470
2015–2016	31656	81876	29	18335	36208	168104	9609	7457	4416	46715	67997

vkjs[k Ø- 1-1

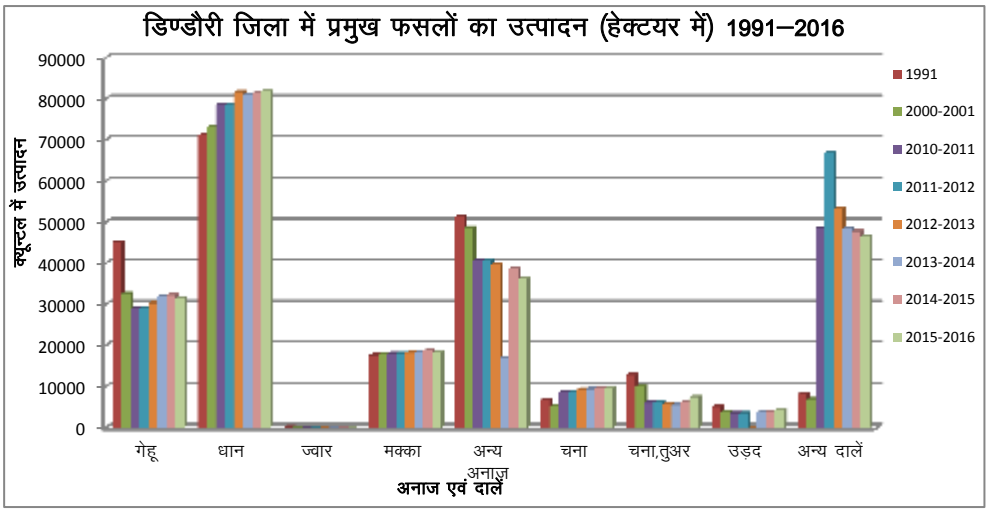

उपरोक्त सारणी के अनुसार डिण्डौरी जिला में प्रमुख फसलों का उत्पादन हेक्टेयर में दर्शाया गया है वर्ष 1991 से वर्ष 2016 तक के आँकड़ों में गेंहूँ 45229 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 71213 हेक्टेयर, ज्वार 151 हेक्टेयर, मक्का 17683 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 51515 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 6898 हेक्टेयर, चना, तुअर 12861 हेक्टेयर, उड़द 5085 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 8242 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है। वर्ष 2000–2001 में गेंहूँ 32682 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 73146 हेक्टेयर, ज्वार 118 हेक्टेयर, मक्का 17928 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 48681 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 5223 हेक्टेयर, चना, तुअर 10052 हेक्टेयर, उड़द 3979 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 6961 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2010–2011 में गेंहूँ 28978 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 78694 हेक्टेयर, ज्वार 64 हेक्टेयर, मक्का 18121 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 40607 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 8637 हेक्टेयर, चना, तुअर 6085 हेक्टेयर, उड़द

3574 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 48614 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2011–2012 में गेंहूँ 28978 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 78694 हेक्टेयर, ज्वार 64 हेक्टेयर, मक्का 18121 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 40607 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 8637 हेक्टेयर, चना, तुअर 6135 हेक्टेयर, उड़द 3574 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 66960 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2012–2013 में गेंहूँ 30298 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 81710 हेक्टेयर, ज्वार 79 हेक्टेयर, मक्का 18225 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 39684 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 9349 हेक्टेयर, चना, तुअर 5842 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 53372 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2013–2014 में गेंहूँ 32144 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 81182 हेक्टेयर, ज्वार 77 हेक्टेयर, मक्का 18314 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 170005 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 9409 हेक्टेयर, चना, तुअर 5567 हेक्टेयर, उड़द 3781 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 48589 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2014–2015 में गेंहूँ 32275 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 81444 हेक्टेयर, ज्वार 22 हेक्टेयर, मक्का 18778 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 38701 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 9576 हेक्टेयर, चना, तुअर 6144 हेक्टेयर, उड़द 3981 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 47769 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

वर्ष 2015–2016 में गेंहूँ 31656 हेक्टेयर में उत्पादन दर्शाया गया है, धान 81876 हेक्टेयर, ज्वार 29 हेक्टेयर, मक्का 18335 हेक्टेयर एवं अन्य अनाज 36208 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन किया गया था, दालों में चना 9609 हेक्टेयर, चना, तुअर 7457 हेक्टेयर, उड़द 4416 हेक्टेयर एवं अन्य दालें 46715 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उत्पादन दर्शाया गया है।

lkj.kh Ø- 1-3

fM.Mksjh dk [kjhQ rFkk jch Qlyksa dk vUrxZr {ks=Qy ¼gsDV;j esa½

ftyk@ rglhy@ fodkl [k.M	[kjhQ			jch			;ksx [kjhQ $ jch
	[kk|kUu	v[kk|	;ksx	[kk|kUu	v[kk|	;ksx	
1	2	3	4	5	6	7	8
1991	147879	32441	180320	71548	24919	96469	276789
2000&2001	146122	31038	177160	53088	22158	75246	252406
2010&2011	147232	32689	179921	86735	21657	108392	288313
2011&2012	147232	32689	179921	86735	21657	108392	288313
2012&2013	149556	29483	156512	89657	21979	111636	290675
2013&2014	147248	29494	176742	90890	21826	112716	289458
2014&2015	149108	28440	177548	90454	22504	112958	290506
2015&2016	138226	28044	176270	88721	22096	110617	287087

vkj[k Ø- 1-3

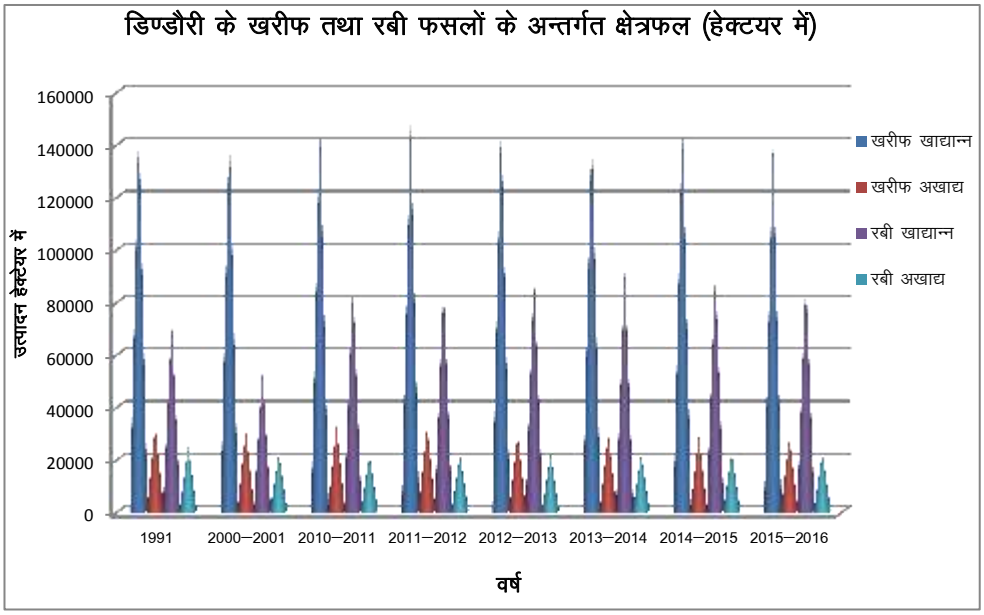

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी के खरीफ तथा रबी फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में) सन् 1991 से 2016 तक के आँकड़ों का समावेश किया गया है सन् 1991 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 147879 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 32441 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 71548 हेक्टेयर, अखाद्य 24919 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2000–2001 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 146122 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 31038 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 53088 हेक्टेयर, अखाद्य 22158 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2010–2011 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 147232 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 32689 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 86735 हेक्टेयर, अखाद्य 21657 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2011–2012 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 147232 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 32689 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 86735 हेक्टेयर, अखाद्य 21657 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2012–2013 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 149556 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 29483 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 89657 हेक्टेयर, अखाद्य 21979 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2013–2014 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 147248 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य

29494 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 90890 हेक्टेयर, अखाद्य 21826 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2014–2015 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 149108 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 28440 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 90454 हेक्टेयर, अखाद्य 22504 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

सन् 2015–2016 में खरीफ फसलों का खाद्यान्न 138226 हेक्टेयर क्षेत्रफल रहा है एवं अखाद्य 28044 हेक्टेयर क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इसके बाद रबी के फसल खाद्यान्न 88721 हेक्टेयर, अखाद्य 22096 हेक्टेयर क्षेत्रफल दर्शाया गया है।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

fM.Mkjh esa mUur cht ,oa jklk;fud [kkn dk iz;ksx
lkj.kh Ø- 1-5
fM.Mkjh esa mUur cht ,oa jklk;fud [kkn dk iz;ksx o"kZokj 1991&2016

वर्षवार	mUur cht		jklk;fud [kkn		ikS/k laj{k.k		chtksipkj	
	{ks= Qy	ek=k ¼fd-xzke½	{ks= Qy	ek=k ¼fd-xzke½	{ks= Qy	ek=k ¼fd-xzke½	{ks= Qy	ek=k ¼fd-xzke½
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1991	00	00	00	00	00	00	00	00
2000&2001	3382	3381.93	3897	336000	337	250.00	2967	356.00
2010&2011	348000	6381	3776	37330	960	5500	1742	60.94
2011&2012	170000	21000	4265	12300	958	72	1521	29
2012&2013	170000	24800	9212	9600	112	87	898	77
2013&2014	619	30000	1080	11500	14.00	128	649	38000
2014&2015	619	30000	1080	11500	14.00	128	649	38000
2015&2016	192370	13864.97	62119.4	6211.94	2107	2107	32200	164199

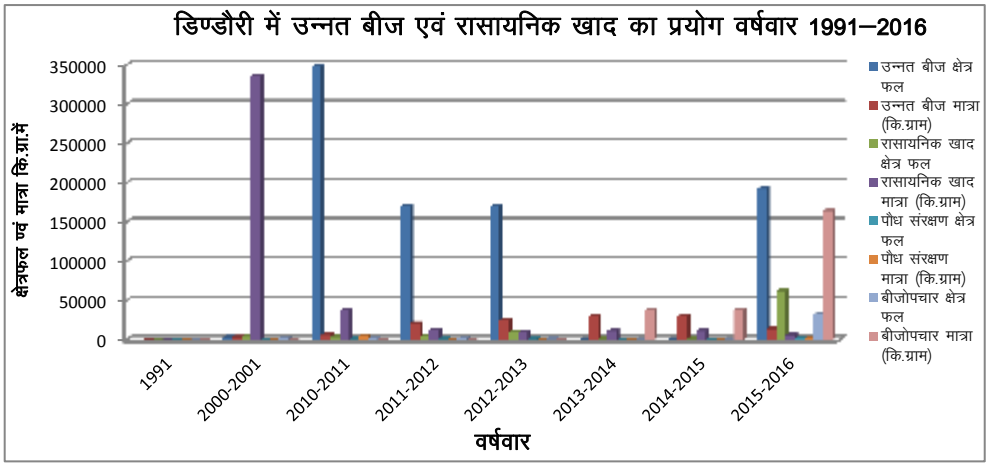

vkjs[k Ø- 1-5

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में उन्नत बीज, रासायनिक खाद, पौध संरक्षण एवं बीजोपचार का प्रयोग किया गया वर्षवार सन् 1991 से 2016 के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 2000–2001 में उन्नत बीज 3382 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 3381.93 कि. ग्रा. दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 3897 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 336000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 337 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 2250.00 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 2967 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 356.00 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2010–2011 में उन्नत बीज 348000 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 6381 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 3776 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 37330 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 960 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 5500 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार

1742 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 60.94 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2011–2012 में उन्नत बीज 170000 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 21000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 4265 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 12300 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 958 हेक्टेयर

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

क्षेत्रफल, 72 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 1521 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 29 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2012–2013 में उन्नत बीज 170000 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 24800 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 9212 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 9600 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 1012 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 87 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 898 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 77 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2013–2014 में उन्नत बीज 619 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 30000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 1080 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 11500 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 14.00 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 128 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 649 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 38000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2014–2015 में उन्नत बीज 619 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 30000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 1080 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 11500 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 14.00 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 128 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 649 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 38000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

सन् 2015–2016 में उन्नत बीज 192370 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 13864.97 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 62119.4 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 6211. 94 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 2107 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 2107 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 32200 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 164199 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है।

lkj.kh Ø- 1-7
fM.Mkjh esa tSfod ,oa jklk;fud [kknksa dk iz;ksx

ftyk fM.Mkjh o"kZ	jklk;fud [kkn		tSfod [kkn	
	Fkk;je@ ckfoLVu	dkcksZMk;ftu	VªkbdksMekZ	lwMkseksukl
2011	00	16.30	48.80	00
2012	00	26.58	79.30	00
2013	00	30.00	41.30	00
2014	00	30.00	41.26	00
2015	00	32.00	42.00	00
;ksx	00	134-88	251	00

vkjs[k Ø- 1-7

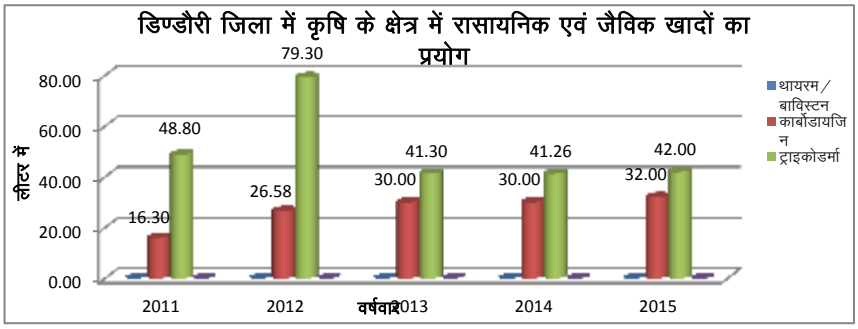

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में रासायनिक एवं जैविक खादों का प्रयोग किया गया वर्षवार सन् 2011 से 2015 के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 2011 में रासायनिक खाद में कार्बोडायजिन 16.30 लीटर एवं जैविक खाद में ट्राइकोडर्मा 48.80 लीटर उपयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2012 में रासायनिक खाद में कार्बोडायजिन 26.58 लीटर एवं जैविक खाद में ट्राइकोडर्मा 79.30 लीटर उपयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2013 में रासायनिक खाद में कार्बोडायजिन 30.00 लीटर एवं जैविक खाद में ट्राइकोडर्मा 41.30 लीटर उपयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2014 में रासायनिक खाद में कार्बोडायजिन 30.00 लीटर एवं जैविक खाद में ट्राइकोडर्मा 41.26 लीटर उपयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2015 में रासायनिक खाद में कार्बोडायजिन 32.00 लीटर एवं जैविक खाद में ट्राइकोडर्मा 42.00 लीटर उपयोग किया गया दर्शाया गया है।

Ikj.kh Øekd 1-8

fM.Mkjh ftyk e! कृषि पर कीटनाशकों का प्रयोग

जिला डिण्डौरी वर्ष	कीटनाशक		कल्चर (पैकैट में)
	पाउडर (कि.ग्रा.)	तरल (लीटर)	
2011	100	1150	55000
2012	106	1165	50250
2013	0	3250	50250
2014	0	3000	44000
2015	150	1250	54000
;kx	**356**	**9815**	**253500**

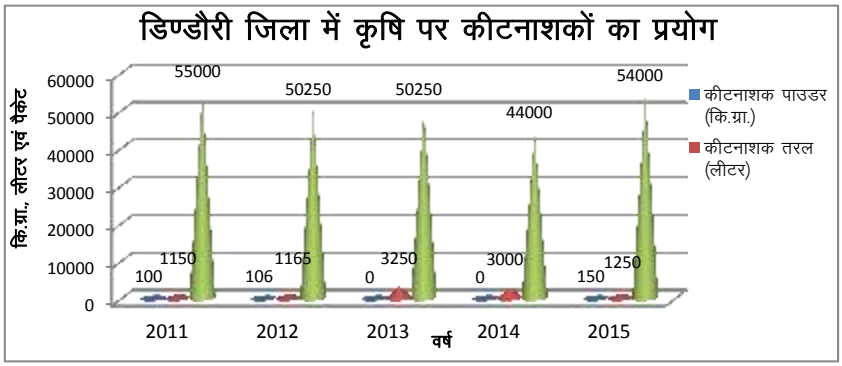

vkj[k Ø- 1-8

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में कृषि पर कीटनाशको का प्रयोग किया गया है वर्षवार 2011 से 2015 तक के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 2011 में कीटनाशक पाउडर 100 कि.ग्रा., तरल 1150 लीटर एवं कल्चर 55000 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2012 में कीटनाशक पाउडर 106 कि.ग्रा., तरल 1165 लीटर एवं कल्चर 50250 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2013 में कीटनाशक तरल 3250 लीटर एवं कल्चर 50250 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2014 में कीटनाशक तरल 3000 लीटर एवं कल्चर 44000 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

सन् 2015 में कीटनाशक पाउडर 150 कि.ग्रा., तरल 1250 लीटर एवं कल्चर 54000 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

lkj.kh Ø- 1-9
fM.Mkjh ftyk e: i'k/ku o"kokj 1991&2016

ftyk@ rglhy@ fodkl [k.M	गौ वंशीय (मीन वर्ष से vf/kd me: d½		cNM: rFkk cfN;k	योग गौ वंशीय	HkSal वंशीय (मीन वर्ष से vf/kd me: d½		iM: ,o ifM;k	;kx Hkl वंशीय
	uj	ekknk,			uj	ekknk,		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1991	122647	79909	63425	265981	16059	13162	18788	48009
2000–2001	110971	66209	61268	238448	14482	12965	18326	45773
2010–2011	207814	66036	77286	352036	18943	14075	17976	50994
2011–2012	207814	66036	77286	352036	18943	14075	17976	50994
2012–2013	212730	30508	77664	357062	50567	15698	20242	56507
2013–2014	217377	77301	88924	383602	20419	15738	20301	56458
2014–2015	219300	75480	68947	363727	20857	15526	21252	57634
2015–2016	**203959**	**70757**	**86552**	**361268**	**19164**	**10750**	**20951**	**50865**

vkj[k Ø- 1-9

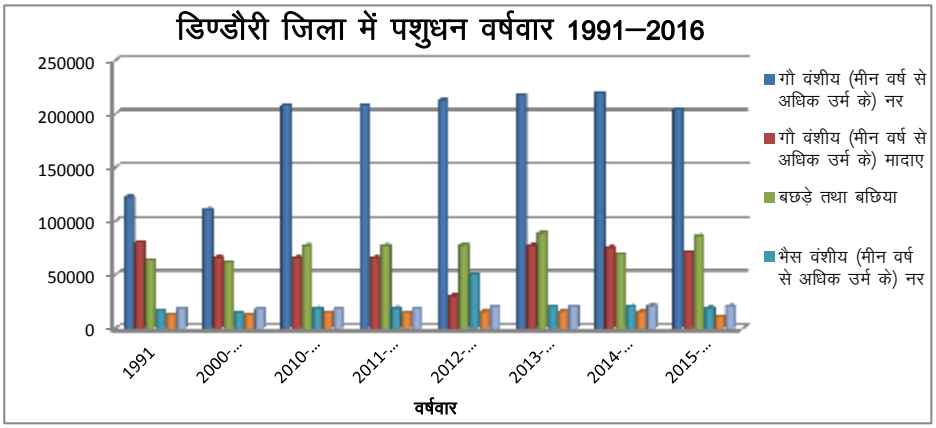

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में पशुधन वर्षवार सन् 1991 से 2016 के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 1991 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 122647 एवं मादाए 79909, बछड़े तथा बछिया 63425, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 16059, मादाए 13162 एवं पडे व पडिया 18788 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2000–2001 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 110971 एवं मादाए 66209, बछड़े तथा बछिया 61268, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 14482, मादाए 12965 एवं पडे व पडिया 18326 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2010–2011 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 207814 एवं मादाए 66036, बछड़े तथा बछिया 77286, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 18943, मादाए 14075 एवं पडे व पडिया 17976 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2011–2012 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 207814 एवं मादाए 66036, बछड़े

तथा बछिया 77286, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 18943, मादाए 14075 एवं पडे व पडिया 17976 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2012–2013 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 212730 एवं मादाए 30508, बछड़े तथा बछिया 77664, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 50567, मादाए 15698 एवं पडे व पडिया 20242 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2013–2014 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 217377 एवं मादाए 77301, बछड़े तथा बछिया 88924, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 20419, मादाए 15738 एवं पडे व पडिया 20301 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2014–2015 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 219300 एवं मादाए 75480, बछड़े तथा बछिया 68947, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 20857, मादाए 15526 एवं पडे व पडिया 21252 की संख्या दर्शाया गया है।

सन् 2015–2016 में गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 203959 एवं मादाए 70757, बछड़े तथा बछिया 86552, भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 19164, मादाए 10750 एवं पडे व पडिया 20951 की संख्या दर्शाया गया है।

lkj.kh Ø- 1-10

fM.Mkjh ftyk e i'k/ku fodkl [k.Mokj

ftyk@ rglhy@ fodkl [k.M	गौ वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के)		cNM rFkk cfN;k	योग गौ वंशीय	भैस वंशीय (मीन वर्ष से अधिक उर्म के)		iM ,o ifM;k	;kx Hkl वंशीय
	uj	ekn,			uj	ekn,		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1. डिण्डौरी	34125	15624	13541	63290	2125	2651	6514	11290
2. अमरपुर	62365	6235	8546	77146	625	1234	1356	3215
3. समनापुर	21253	12546	11122	44921	1987	1204	2562	5753
4. बजाग	15621	4587	6214	26422	1623	1584	2234	5441
5. करंजिया	21254	3658	4521	29433	2982	1365	1892	6239
6. शहपुरा	30213	10214	18954	59381	7512	1458	3641	12611
7. मेहदवानी	19128	17893	23654	60675	2310	1254	2752	6316
;kx %&	**203959**	**70757**	**86552**	**361268**	**19164**	**10750**	**20951**	**50865**

vkj[k Ø- 1-10

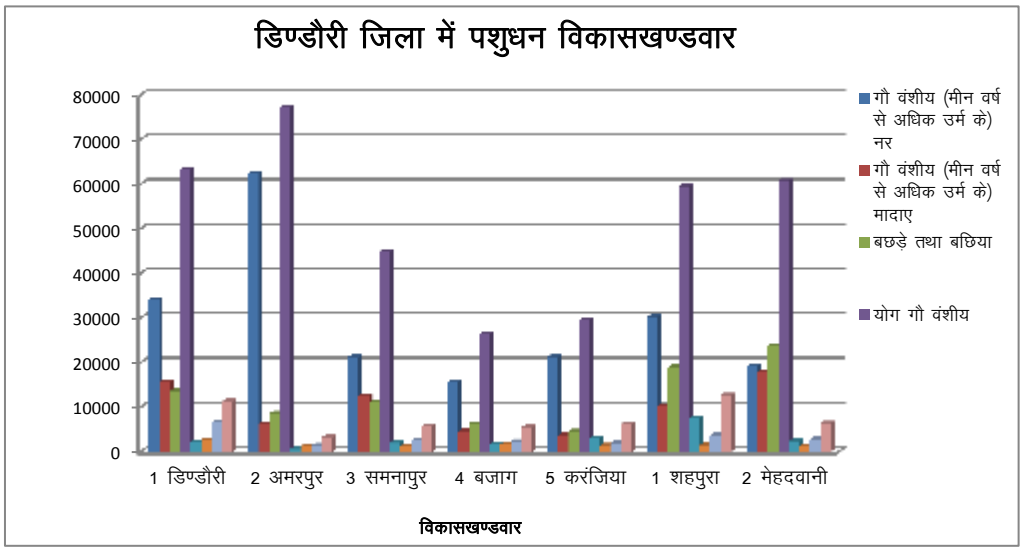

उपरोक्त सारणी के अनुसार जिला डिण्डौरी में पशुधनों का विकासखण्डवार आँकड़ों का समावेश किया गया है। डिण्डौरी विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 34125 एवं मादाए 15624, बछड़े तथा बछिया 13541, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 2125, मादाए 2651 एवं पडे व पडिया 6514 की संख्या दर्शाया गया है।

अमरपुर विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 62365 एवं मादाए 6235, बछड़े तथा बछिया 8548, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 625, मादाए 1234 एवं पडे व पडिया 1356 की संख्या दर्शाया गया है।

समनापुर विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 21253 एवं मादाए 12546, बछड़े तथा बछिया 11122, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 1987, मादाए 1204 एवं पडे व पडिया 2562 की संख्या दर्शाया गया है।

बजाग विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 15621 एवं मादाए 4587, बछड़े तथा बछिया 6214, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 1623, मादाए 1584 एवं पडे व पडिया 2234 की संख्या दर्शाया गया है।

करंजिया विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 21254 एवं मादाए 3658, बछड़े तथा बछिया 4521, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 2982, मादाए 1365 एवं पडे व पडिया 1892 की संख्या दर्शाया गया है।

शहपुरा विकासखण्ड में गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 30213 एवं मादाए 10214, बछड़े तथा बछिया 118954, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 7512, मादाए 1458 एवं पडे व पडिया 3641 की संख्या दर्शाया गया है।

मेंहदवानी विकासखण्ड गौ वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 19128 एवं मादाए 17893, बछड़े तथा बछिया 23654, भैस वंशीय मीन वर्ष से अधिक उर्म के) नर 2310, मादाए 1254 एवं पडे व पडिया 2752 की संख्या दर्शाया गया है।

lkj.kh Ø- 1-12

fM.Mkjh ftyk esa i'kq/ku ,oa dqDdqV ikyu

ftyk@ rglhy@ fodkl [k.M	vU; i'kq/ku						;kx	dqy i'kq/ku	dqDdqV lw[;k		
	HkkM	cdfj;k	?kksMk	x/ks	[kPpj	lwvj			eqxhZ ,oa efxZ;k	crd	;kx
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**
1 डिण्डौरी	0	10390	812	0	0	622	11824	11824	22414	398	22812
2 अमरपुर	682	3374	254	0	0	690	5000	5002	5161	3	5164
3 समनापुर	0	8930	58	6	0	1530	10524	10524	10520	0	10520
4 बजाग	21	20602	156	0	0	1209	21988	21988	11525	0	11525
5 करंजिया	0	10735	162	0	0	1056	11953	11953	16448	0	16448
1 शहपुरा	299 0	17260	191	0	0	1068	21509	21509	24770	0	24770
2 मेहदवानी	0	12150	256	0	0	1720	14126	14126	22420	0	22420

ftyk fM.Mkjh ¼ कृ"kd thou ½& डिण्डौरी जिला में सभी कृषकों के पास सामान रूप से जमीन उपलब्ध नहीं है। इन्हें पाँच भागों में विभाजित किया गया है। उपरोक्त साराणी में 1990–91 से 2010–11 के आँकड़े द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

कृ"kd thou esa ifjorZu ½& परिवर्तन प्रकृति का नियम है कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन हो रहे हैं भरण – पोषण के उद्देश्य से होने वाली कृषि अब परिवर्तित हो कर आर्थिक लाभ प्रदान करने वाली हो चुकी है। डिण्डौरी जिले में अर्जित प्राथमिक समंक द्वारा संग्रहण उपरोक्त तालिका में प्रादर्शित किया गया है।

lkj.kh Øekad 1-14

डिण्डौरी जिले में व्यक्तियों का व्यवसाय

क्र.	विकास खण्डवार	कृषि		मजदूरी		व्यवसाय		अन्य		कुल योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1.	डिण्डौरी	2	20%	3	30%	5	50%	0	0%	10	100%
2.	अमरपुर	6	60%	2	20%	2	20%	0	0%	10	100%
3.	समनापुर	5	50%	3	30%	1	10%	1	10%	10	100%
4.	बजाग	6	60%	2	20%	2	20%	0	0%	10	100%
5.	करंजिया	7	70%	1	10%	1	10%	1	10%	10	100%
6.	शहपुरा	5	50%	1	10%	2	20%	2	20%	10	100%
7.	मेंहदवानी	6	60%	2	20%	2	20%	0	0%	10	100%
dqy ;ksx		**39**	**56%**	**12**	**17%**	**15**	**21%**	**08**	**11%**	**70**	**100%**

vkjs[k Øekad 1.14

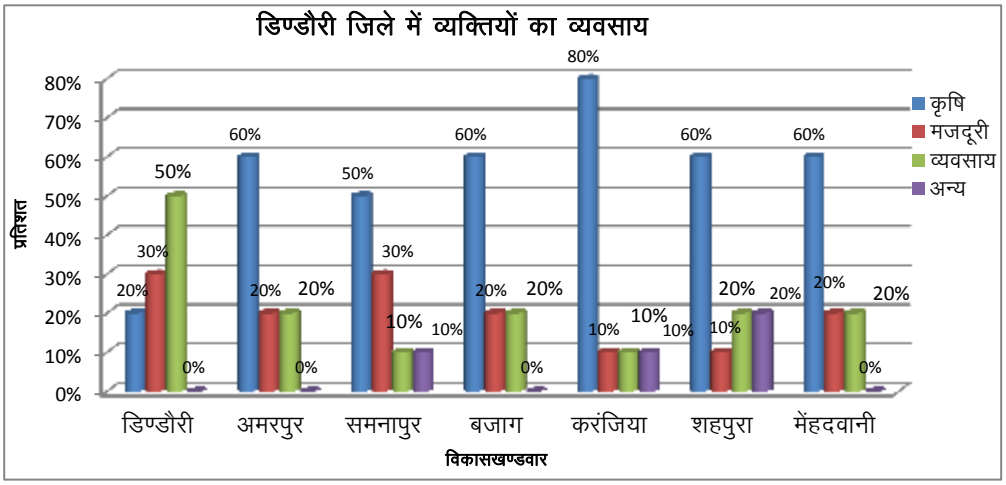

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है, कि डिण्डौरी जिले में 70 उत्तरदाताओं में से 39 अर्थात 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि कृषि करते हैं। तथा 12 अर्थात 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने जानकारी दी कि मजदूरी करते हैं। तथा 15 अर्थात 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने व्यवसाय करते हैं, तथा 08 अर्थात् 11 उत्तरदाताओं से पता चलता है कि डिण्डौरी जिले में अन्य कार्य भी करते हैं।

lkj.kh Ø- 1-15

fM.Mkjh ftyk esa कृf"k }kjk कृ"kdks dks thou esa ifjorZu

क्र.	विकास खण्डवार	हाँ		नहीं		निरूत्तर		कुल योग	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत	योग	प्रतिशत
1.	डिण्डौरी	8	80%	0	0%	2	20%	10	100%
2.	अमरपुर	8	80%	1	10%	2	20%	10	100%
3.	समनापुर	9	90%	1	10%	0	0%	10	100%
4.	बजाग	8	80%	0	0%	2	20%	10	100%
5.	करंजिया	8	80%	1	10%	1	10%	10	100%
6.	शहपुरा	8	80%	1	10%	1	10%	10	100%
7.	मेंहदवानी	9	90%	0	0%	1	10%	10	100%
dqy ;ksx		**58**	**83%**	**04**	**6%**	**09**	**13%**	**70**	**100%**

vkj[k Ø- 1-15

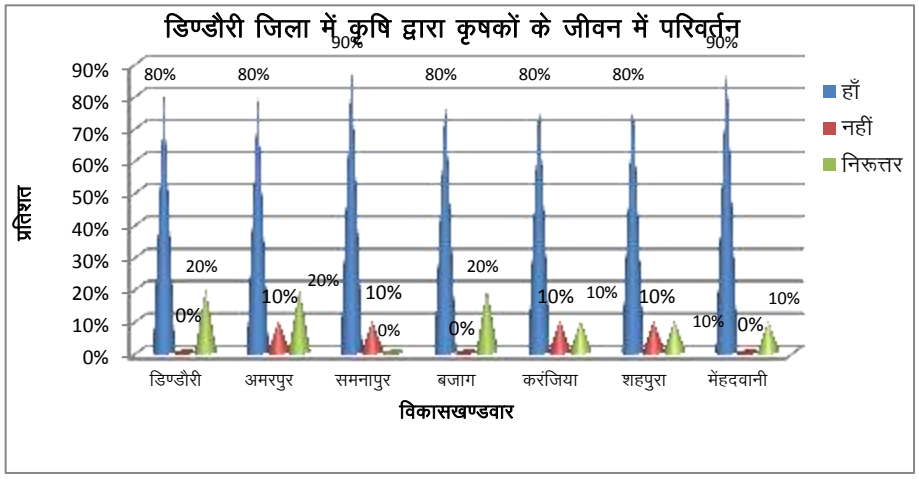

उपरोक्त सारणी के अनुसार स्पष्ट होता है कि कृषक द्वारा कृषि में परिवर्तन जिला डिण्डौरी में 83 प्रतिशत उत्तरदाता हाँ, 06 प्रतिशत नहीं, 09 प्रतिशत निरूत्तर हैं। जिसमें समनापुर एवं मेंहदवानी विकासखण्ड में 90 प्रतिशत उत्तरदाता हाँ और बाकी विकासखण्डों में 80 प्रतिशत उत्तरदाता हाँ उत्तर दिये हैं। इससे पता लगता है कि जो नवाचार कृषि आई है कृष्कों के लिए फायदे मंद है। बीजों में हाईब्रीड बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाईयाँ एवं कृषि यंत्रों के माध्यम से अधिक पैदावार उत्पादन कम समय में कर रहें हैं।

leL;k,a %&

1. कृषि से सम्बन्धी योजना का अभाव।
2. योजनाओं के क्रियांवयन की कमी।
3. जनकारी तथा जागरूकता की कमी।
4. पहाड़ी क्षेत्र में लागत की अधिकता होने से कृष्कों की समस्या।
5. डिण्डौरी जिला अधिकतर पहाड़ी क्षेत्र होने से रबी फसलों के लिये पानी की कमी।

lq>ko %&

1. डिण्डारी जिला पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर सरकार की योजना अधिक से अधिक लागू होना चाहिये जिससे कृष्कों को जल की कमी न हो कृषि क्षेत्र में।
2. डिण्डौरी जिला में जितने भी नदी एवं नाले हैं उनमें एनीकट बाँध बनानी चाहिऐ एवं बाँधों के पानी को सिर्फ कृषि कार्य के लिऐ ही उपयोग करनी चाहिऐ जिससे पानी की कमी न हो।
3. कृषि से सम्बन्धित योजनाओं को कृष्क तक पहुँचाने का प्रयास करनी चाहिऐ।
4. सरकार द्वारा योजनाओं का सुचारू रूप से क्रियांवयन होनी चाहिऐ।

fu"d"kZ %& मानव की आवश्यकताऐं असीमित है। मानव कभी संतुष्ट नहीं रहता है, अध्ययन क्षेत्र जिला डिण्डौरी की वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 704218 है। जिसमें कुल कृष्कों की संख्या 322341 पुरूष कृषक 165103 है एवं महिला कृषक 157238 हैं जिले में खेतीहर मजदूर पुरूष 25532 एवं खेती हर मजदूर महिला 26432 कुल 51964 खेती हर मजदूर हैं। यहाँ की प्रमुख फसलें गेंहू, धान, बटरी, अरहर, मसूर, चना, कोदों, कुटकी, मक्का आदि है।

डिण्डौरी जिला में प्रमुख फसल चावल का उत्पादन अधिक किया जाता है साथ में गेहूँ के उत्पादन को भी अधिक महत्व दिया जा रहा है क्योंकि खरीब फसलों के साथ साथ रबी की खेती की जा रही जिससे किसानों को अधिक आय प्राप्त होती है।

जिला डिण्डौरी में उन्नत बीज, रासायनिक खाद, पौध संरक्षण एवं बीजोपचार का प्रयोग किया गया वर्षवार सन् 1991 से 2016 के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 2000–2001 में उन्नत बीज 3382 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 3381.93 कि. ग्रा. दर्शाया गया है। रासायनिक खाद 3897 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 336000 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। पौध संरक्षण 337 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 2250.00 कि.ग्रा. दर्शाया गया है। बीजोपचार 2967 हेक्टेयर क्षेत्रफल, 356.00 कि. ग्रा. मात्रा दर्शाया गया है। जिला डिण्डौरी में कृषि पर कीटनाशको का

प्रयोग किया गया है वर्षवार 2011 से 2015 तक के आँकड़ों का समावेश किया गया है। सन् 2011 में कीटनाशक पाउडर 100 कि.ग्रा., तरल 1150 लीटर एवं कल्चर 55000 पैकेट प्रयोग किया गया दर्शाया गया है।

जिला डिण्डौरी में नवाचार से कृष्कों का जीवन स्तर में सुधार आया है। सरकारी योजना से मेंढ बंधान के द्वारा कृष्कों के खेत समतली करण से अधिक पैदावार होने लगा है इससे कृष्कों के पास अधिक अनाज होने से धान, गेंहूँ एवं अन्य अनाज सरकार को बेच देते हैं। उससे जो पैसा मिलता है उससे अपनी आवश्यकतायें पूरा करते हैं एवं अपने बच्चों को पाठशाला भेजने में सक्षम हो रहे हैं। जिला डिण्डौरी में 07 विकासखण्ड हैं जिसमें 10 महाविद्यालय खोले जा चुके हैं। जिससे अपने – अपने विकासखण्ड में खोले गये महाविद्यालयों में भर्ती हो करके उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहें हैं। इससे शिक्षा की स्तर थोड़े से सुधने की असार देखा जा रहा है परन्तु सरकार की एक कमी है जो पाठशाला एवं उच्च शिक्षा के लिये महाविद्यालय तो खोले जा चुके हैं परन्तु उनमें शिक्षकों की कमी है जिससे बच्चों को शिक्षा में कमी महसूस किया जा सकता है। कृष्कों के बच्चे अब अधिक से अधिक शिक्षा ग्रहण करने पाठशालाओं जाने लगे हैं, क्योंकि हर 10 कि. मी. के दूरी पर हाई स्कूल एवं हर गाँव मोहल्लों में प्रायमरी एवं मिडिल स्कूल एवं अर्द्धशासकीय पाठ शालायें खोले एवं बनाये गये हैं। शोधार्थी द्वारा अपने शोध पत्रिका में दर्शाया है।

lanHkZ xzaFk lwph %&

- तिवारी, राकेश कुमार (1980–81) ''साईंखेड़ा ग्राम के कृषकों का सामाजिक – आर्थिक अध्ययन'' अर्थशास्त्र स्नात्कोत्तर एम.ए. उत्राद्ध उपाधि हेतु अप्रकाशित शोध लेख, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (मध्य प्रदेश)।
- मिश्रा, दिनेश कुमार (2011) ''जनजातीय कृषि व्यवस्था का पर्यावरण पर प्रभाव'' पी–एच.डी. उपाधि हेतु अप्रकाशित शोध प्रबंध, भूगोल विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर (मध्य प्रदेश)।
- 'जिला योजना एवं सॉख्यिकी कार्यालय डिण्डौरी'।
- जैन डॉ. बी. एम., 'रिसर्च मैथ्डोलॉजी' साउथ एशियन स्टेगीज सेन्टर, राजस्थान वि. वि. जयपुर रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर।
- मरकाम प्रसन्न वदन (2.011–2012) 'जल संसाधन एवं सिंचाई विकास परियोजनाओं का एक भौगोलिक अध्ययन' (जिला डिण्डौरी के संदर्भ में) अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, एम. फिल. हेतु निर्देशक डॉ. लोकेश श्रीवास्तव, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)।
- माजिद हुसैन 'कृषि भूगोल' रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, नई दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, गुवाहाटी एवं कोलकाता।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k ,oa xkeh.k fodkl

vfuy dqekj ipkfj;k
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बालाघाट

v/;;u dk egRo %&प्रत्येक अध्ययन का अपना एवं अलग ही महत्व होता है कुछ अध्ययनों में केवल ज्ञानोपार्जन होता है, कुछ अध्ययन समाज को एक नया आयाम देते है। इस तरह मैने जो अध्ययन का क्षेत्र चुना है वह ग्रामीण विकास के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा ऐसी मेरी आशा है।

आज भारत वर्ष स्वतंत्रता की 71वीं साल गिरह मना रहा है 70 वर्ष के पश्चात भी देश की 74 प्रतिशत जनसंख्या गॉव में निवास कर रही है। और उसका 48 प्रतिशत गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा है।

ग्रामीण विकास के भाव में गांव के लोग शहर की ओर दौड़ रहे है जिसका दूषपरिणाम यह है कि दोनो स्थानों पर समस्या उत्पन्न हो रही है। आज स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जो भी कदम ग्रामीण विकास हेतु उठाये गये उन सभी में अपनी कुछ न कुछ कमियॉ रही है। औद्योगिकरण और यंत्रीकरण में सम्पन्न किसानों को और सम्पन्न बनाया एवं असमानता बढ़ी।

125 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले विशाल देश में अधिकांश किसान आज भी परम्परागत खेती कर रहे है। खेती ही नही अधिकांश किसान आज के दौर में पशुपालन और कृषि से जुड़े अन्य बहुतायार्थ व्यवसाय भी परम्परागत तरीके से कर रहे है।

आधुनिक तकनीकि एवं कृषि उपकरणों की मौजूदगी के बावजूद खास तौर पर तंग हाल छोटे किसान उनका लाभ नही उठा रहे है। वे घाटे की खेती करते हुये ऐसी दूषचक्र में उलझे हुये है कि ज्ञान और कौशल से वंचित रह जाते है।

ग्रामीण विकास के प्रति मेरा जो चिन्तन है उसका सूक्ष्म इस प्रकार है।

- कृषि संबंधी उद्योग नगरमुखी रहे है।
- सम्पन्न किसानों ने अपना शहरीकरण कर लिया है।
- सब्सिडी का फायदा बड़े किसानों को मिला है ।
- ग्रामीण विकास उपेक्षित रहा है।
- पंचायत राज्य में कोई विशेष अंतर नहीं आया है।
- भूर्तपूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी ने स्वयं स्वीकार किया हम 1 रूपये भेजते है। तो गांव तक 15 पैसे ही पहुचते है।
- ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए।
- मेरा गांव मेरा गौरव जैसे प्रयास होने चाहिए।

2018–19 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लिए 9 हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। फार्म लोन का टारगेट 10 लाख करोड़ एवं कृषि ऋण हेतु 10 लाख करोड़ करने की घोषणा की गई है। गांव के विकास के लिए 2018–19 में 33097 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। इसमें जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 412 करोड़ का एक विशेष कोष भी शामिल है।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k vk/kkfjr m|kx

lँचेत सिंह देशमुख
शोधार्थी, गोविन्दराम सेक सरिया अर्थ–वाणिज्य महाविद्यालय,जबलपुर (म0प्र0)

कृषि तथा उद्योग दोनों ही दूसरे के पूरक है। जिस तरह उद्योग कच्चे माल के लिए कृषि पर निर्भर है, उसी तरह कृषि भी यन्त्रों एवं उत्पादन के साधानों के लिए उद्योगों पर निर्भर है। किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के विकास का पर्याय उद्योग स्थापना से है। उद्योग का स्वरूप मुख्यतः भौगोलिक स्थिति एवं उपलब्ध संसाधन पर निर्भर होता है। कृषि ही एक ऐसा आधार है जहाँ देश के 5 लाख से अधिक गाँव में निवास करने वाली जनसंख्या भोजन हेतु कृषि पर निर्भर है। कृषि अनेक उद्योगों को कच्च माल भी प्रदान करती है।

वर्तमान में देश की लगभग 74% जनसंख्या कृषि पर जीवन निर्वाह कर रही है। औद्योगिक युग होने की दशा में देश का विकास बिना उद्योग स्थापना के असम्भव है। आज भी विश्व के अधिकांश देश कृषि पर निर्भर है। कृषि आधारित उद्योग की संकल्पना पूर्ण रूप से कृषि पर निर्भर है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात फसलों का व्यावसायीकरण एवं बाजारीकरण होने से प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि हुई है। जिसके फलस्वरूप कृषि आधारित उद्योग के विकास की गति में तेजी आई। कृषि की उत्पादकता बढ़ाने से औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि होती है, एवं औद्योगिक उत्पादन बढ़ने से कृषि के उत्पादन को बढ़ाने की प्रेरणा प्राप्त होती है। जिसके परिणामस्वरूप देश के आर्थिक विकास को गति प्राप्त होती है।

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए उद्योग एक मापदण्ड के रूप में प्रयुक्त होता है। अनके उद्योग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित होते है, ऐसी स्थिति में जब तक कृषि के पूर्ण विकास की व्यवस्था नहीं की जावेगी तब तक देश का आर्थिक विकास संभव नहीं है।

कृषि उद्योग ग्रामीण विकास की योजनाओं का एक महत्वपूर्ण भाग हैं कृषि उद्योगो का उद्भव निश्चित रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन लाने में तथा सामाजिक ढाँचे को सुदृढ करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत के प्रदेशों में कृषि आधारित प्रमुख उद्योग निम्न है। जहाँ पर विकास दिन–प्रतिदिन होता जा रहा है।

(1) कपड़ा उद्योग (कपास फसल पर आधारित)
(2) जूट उद्योग (जूट फसल पर आधारित)
(3) शक्कर उद्योग/गुड़ निर्माण (गन्ने की फसल पर आधारित)
(4) दाल उद्योग (दलहन फसलों पर आधारित)
(5) तेल उद्योग (तिलहन फसलों पर आधारित)
(6) कृषि उपकरण निर्माण उद्योग
(7) पोहा उद्योग

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय (MoFPI) द्वारा देश में कृषि उद्योग विकास हेतु बहुत सी नीतियों का क्रियान्वयन किया जाता रहा है। भारत में प्रसंस्करण नीतियों का उद्देश्य निम्न होना चाहिए।

(1) उत्पाद नुकसान में कमी।
(2) उच्च गुणवत्ता मानक प्रप्ति।
(3) प्रसंस्करण लागत में कमी करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न j.kuhfr;k¡ viukbZ tkuh pkfg,&

(1) कृषि आधारित उद्योगों के विकास एवं विस्तार हेतु राष्ट्रीय स्तर पर खाद्य प्रसंस्करण तकनीकी का एक नियोजित आधार पर मापदण्ड तैयार किया जाना चाहिए।
(2) शोध कार्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा मध्यम स्तर पर शोध एवं विकास कार्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए ताकि खाद्य–प्रसंस्करण तकनीकी कर क्रियान्वयन सभी स्तरों पर राष्ट्रीय आधार पर किया जाए।
(3) कृषि आधारित उद्योगों के आधुनिकीकरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। जिसके लिए उदार पैमाने पर वित्तीय मदद प्रदान की जानी चाहिए।

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

भोपाल संभाग में कृषि ऋण योजनाऐं एवं उनका कृषि विकास पर प्रभाव–एक विश्लेषण

oUnuk Ikuh
शोधार्थी (अर्थशास्त्र), शासकीय सरोजिनी नायडू, कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

iLrkouk :– कृषि भारत की अर्थव्यवस्था का केन्द्र बिन्दु तथा आर्थिक विकास की धुरी है। वर्ष 2011 की जनगणना के अुनसार देश की 83.31 करोड़ जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है तथा कुल जनसंख्या का लगभग 52 प्रतिशत भाग अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर है। कृषि और सहायक क्षेत्र सकल घरेलू उत्पादन में लगभग 15.7 प्रतिशत का योगदान देते है। ऐसी स्थिति में देश की उन्नति कृषि विकास पर ही निर्भर है।

कृषि के विकास में संस्थागत कारकों का विशेष महत्व है। संस्थागत ऋण में वे राशियाँ आती है। जो सहकारी बैंकों समितियों, वाणिज्य बैंकों तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा उपलब्ध करायी जाती है। राज्य सरकार राज्य सहकारी बैंकों तथा भूमि विकास बैंकों को अर्थिक सहायता प्रदान करती है। सहकारिता के अन्तर्गत प्राथमिक कृषि साख समितियाँ अल्पकालीन एवं मध्यमकालीन ऋण सुविधाएँ प्रदान करती है, तथा राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक दीर्घकालीन ऋण प्रदान करते है।

संस्थागत ऋण का मुख्य उद्देश्य सदा कृषकों के हित में कार्य करना एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना होता है। ताकि कृषकों का उत्पादन बढ़ने से अधिक आय प्राप्त हो सके।

वर्तमान में चिंताजनक तथ्य यह है कि कृषकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण ऋण जाल में फसे कृषकों में आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ रही है। जोकि कृषि विकास के नाम पर कलंक है। ऐसी स्थिति में आर्थिक एवं प्राकृतिक संकटों से सुरक्षा कवच प्रदान करने के लिए संस्थागत ऋण की सरल एवं उचित व्यवस्था होना अति आवश्यक है।

आज के संदर्भ में कृषि को प्रभावित करने वाले संस्थागत ऋण का गहराई से अध्ययन करना आवश्यक है। इस अध्ययन हेतु भोपाल संभाग के तहत भोपाल, सीहोर, रायसेन, राजगढ़, विदिशा जिले का चुनाव कर कृषि ऋण योजनाऐं एवं उनका कृषि विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भोपाल संभाग में कृषि ऋण योजनाऐं एवं उनका कृषि विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना

fo'y"k.k :– किसान क्रेडिट कार्ड योजना नाबार्ड द्वारा प्रमुख बैंकों से विचार विमर्श करके 1998–99 में लागू की गई थी। यह एक नवाचारी योजना है जो किसानों को ऐन जरूरत के वक्त पर लचीले ढँग से सहनीय और पर्याप्त ऋण उपलब्ध करवाती है।

de vo/kh okyk df"k _.k %& आम तौर पर यह ऋण फसल के मौसम में दिया जाता है। इसकी अवधि 12 महीने होती है। इसे फसल ऋण कहा जाता है। यह ऋण फसल उत्पादन से जुड़ी चीजे (इनपुट) खरीदने के लिए दिया जा सकता है। इस ऋण के लिए ऋण मांगने वाला या तो मालिक किसान होना चाहिए या काश्तकार या फिर लीज प्राप्त खेतिहर या किसानी का मूल/पैतृक अधिकारी मौखिक काश्तकार तभी ऋण पाने के योग्य होगे जब भू–स्वामी स्वयं सह ऋण मांगकर्ता बने। आम तौर पर चालू आधार फसल उत्पादन जरूरतों के लिए फसल ऋण नगद ऋण के बतौर दिया जाता है। खास मौसम में फसल लेने के हिसाब से कम अवधि वाला ऋण दिया जाता है। पुनः भुगतान की देय तिथियां फसल लेने और उन्हें बेचने के हिसाब से तय की जाती है।

e/;e vof/k okyk lkof/k df"k _.k %& ऐसे ऋण किसानों को 'कार्याधीन' आधार पर कृषि समान की खरीदी और मशीनरी या बैल वगैरह खरीदने के लिए दिए जाते है। आमतौर पर माध्यम अवधि वाले ऋण उसे 5 साल की अवधि के भीतर चुकाए जाते है।

भूमि विकास परियोजनाओं के लिए भी ऋण दिए जाते है और ये ऋण कृषकों को बेहतर उत्पादकता हासिल करने के लिहाज से मध्यम अवधि की वित्तीय सहायता के बतौर दिए जाते है। भूमिगत

और सतही पानी के स्त्रोतों के द्वारा सिंचाई सुविधाएँ निर्मित करने के लिए बैंक लघु सिंचाई ऋण योजना के तहत मध्यम अवधि के ऋण किसानों को देते है।

सावधि ऋण किसानों को ट्रेक्टर, ट्रेलर, पावर ट्रिलर, कम्बाइन हावैस्टर जैसी कृषि मशीनरी खरीदने के लिए दिए जाते है। छोटे व सीमान्त भूमिहीन किसानों को कृषि जमीन खरीदने के लिए लम्बी अवधि वाले ऋण दिए जाते है। सावधि ऋण वापस चुकाने की अवधि पाँच साल से ज्यादा होती है।

अपने ऋणों की अदायगी समय पर करने वाले किसानों को कृषि ऋणों पर वर्ष 2010–2011 में भी रियायती ब्याज ही देना था। ऐसे ऋणों की ब्याज पर 2 प्रतिशत की सब्सिडी इस वर्ष भी जारी रखने का फैसला केन्द्रीय मंत्रीमंडल की 30 जुलाई 2010 की बैठक में किया गया था।

Hkkiky lHkkx e: df"k _.k ekQh vkj _.k jkgr ;ktuk] 2008 dh ixfr %& भोपाल संभाग में केन्द्र सरकार की कृषि ऋण माफी और ऋण राहत योजना का क्रियान्वयन हुआ जिसके तहत जो कृषि ऋण 31.03.1997 और 31.03.2007 के बीज वितरित हुए थे और 31.12.2007 की तिथि पर अतिदेय रहे तथा 29. 02.2008 तक जिनकी चुकौती नही हुई थी। उन हेतु लघु और सीमान्त कृषकों को ऋण माफी तथा अन्य किसानों को अतिदेय राशि के 25 प्रतिशत तक ऋण राहत प्रदान की गई। योजना के अुनसार वे सभी कृषक फिर एक बार औपचारिक बैंकिग प्रणाली में सम्मिलित हो गए है, जिसमें कृषि में फसल क्रियाकलापों और निवेश को बढ़ावा मिलेगा। योजना की अवधि 31 दिसम्बर 2009 तक और शिकायत निवारक प्रणाली की समय सीमा 31 जनवरी 2010 तक बढ़ा दी गई थी। 29 फरवरी 2008 से 30 जून 2009 की अवधि के संबंध में ऋण राहत के तहत पात्र राशि पर बैंकों द्वारा ब्याज प्रभारित नही किया जाएगा। 01 जुलाई 2009 से निपटान की तिथि तक ऐसी पात्र राशि पर बैंक सामान्य ब्याज दर प्रभारित कर सकते हैं।

Hkkiky lHkkx d: fofHkUu ftyk e: df"k fodkl dh fLFkfr

rkfydk d& 1

Hkkiky lHkkx d: ie[k xg mRiknd ftys

(हजार मैट्रिक टन)

ftyk	Ok"k			vkSlr mRiknu e:	jkT; dh fgLlsnkjh प्रतिशत
	2009–10 उत्पादन	2010–11 उत्पादन	2011–12 उत्पादन		
सीहोर	401.1	327.2.	666.8	465.0	4.5
रायसेन	376.5	278.4	622.0	425.6	4.1

स्त्रोत– मध्यप्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2013

तलिका क – 1 से स्पष्ट है कि राज्य के प्रमुख गेहूँ उत्पादक में सीहोर जिला 4.5 प्रतिशत रायसेन जिला 4.1 प्रतिशत का योगदान देने वाले राज्य के प्रमुख गेहूँ उत्पादक जिले है।

rkfydk d-&2

Hkkiky lHkkx d: ie[k lks;kchu mRiknd ftys

(हजार मैट्रिक टन)

ftyk	Ok"k			vkSlr mRiknu e:	jkT; dh fgLlsnkjh प्रतिशत
	2009–10 उत्पादन	2010–11 उत्पादन	2011–12 उत्पादन		
सीहोर	433.9	563.3.	369.3	446.7	6.9

स्त्रोत– मध्यप्रेदश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2013

तालिका क्र–2 से स्पष्ट है कि राज्य के मुख्य सोयाबीन उत्पादक में सीहोर जिला 6.9 प्रतिशत का योगदान देने वाला राज्य का प्रमुख सोयाबीन उत्पादक जिला है।

rkfydk d-&3
Hkkiky lHkkx d iep[k [kk|kUu mRiknd ftys
(हजार मैट्रिक टन)

ftyk	Ok"kZ			vkSlr mRiknu e	jkT; dh हिस्सेदारी प्रतिशत
	2009–10	2010–11	2011–12		
	उत्पादन	उत्पादन	उत्पादन		
रायसेन	661.0	470.3	897.1	676.1	3.7
विदिशा	716.9	612.2	660.0	663.0	3.6
सीहोर	560.5	450.4	853.1	621.3	3.4

स्त्रोत– मध्यप्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण रिर्पोट 2013

तालिका क्र–3 से स्पष्ट है कि राज्य के प्रमुख खाघान्न उत्पादन में रायसेन जिला 3.7 प्रतिशत, विदिशा जिला 3.6 प्रतिशत में सीहोर जिला 3.4 प्रतिशत का योगदान देने वाले प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक जिले है।

rkfydk d-&4
Hkkiky lHkkx d iep[k vukt mRiknd ftys
(हजार मैट्रिक टन)

ftyk	Ok"kZ			vkSlr mRiknu e	jkT; dh fgLlsnkjh प्रतिशत
	2009–10	2010–11	2011–12		
	उत्पादन	उत्पादन	उत्पादन		
सीहोर	424.0	365.1	702.1	497.1	3.4
रायसेन	404.2	317.7	661.6	461.2	3.2

स्त्रोत– मध्यप्रदेश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण रिर्पोट 2013

तालिका क्र–4 से स्पष्ट है कि राज्य के कुल अनाज उत्पादन में सीहोर जिला 3.4 प्रतिशत, रायसेन जिला 3.2 प्रतिशत योगदान देते है। सीहोर, रायसेन जिला अच्छा उत्पादन करने वाले जिलों में शामिल है।

fu"d"kZ %& कृषि भोपाल संभाग की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि कृषि पर ही अन्य क्षेत्रों की विकास क्रिया निर्भर करती है। भोपाल संभाग में कृषकों द्वारा विगत वर्षा में ऋण के माध्यम से कृषि के लिए खाद, विद्युत पंप और कंबाइन हावेस्टर जैसे यंत्रों और उपकरणों का प्रयोग संभाग में काफी बढ चुका है। जो कृषि ऋण योजनाओं के माध्यम से कृषि विकास का सूचक है।

संभाग में कृषि बारिश पर निर्भर है और मानसून की अनिश्चितता को लेकर कृषि उत्पादन में कमी की हमेशा आशंका बनी रहती है। कृषि के गैर–लाभकारी हो जाने के कारण कृषक कृषि कार्य छोड़कर अन्य व्यवसाय करने के लिए मजबूर हुए है और काफी कृषक ऐसा कर भी रहे है। ऐसी स्थिति में संस्थागत ऋण कृषकों को आर्थिक सहायता प्रदान कर कृषि कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करता है।

संभाग में कृषि को विकसित करने के लिए जिला सहकारी केंद्रीय बैंकों द्वारा पर्याप्त मात्रा में और सुलभ ब्याज दर पर संस्थागत ऋणों की व्यवस्था की गई है। कृषि साख के क्षेत्र में एक प्रमुख उपलब्धि कृषि ऋण योजनाएँ का तीव्र विकास होना है। कृषि क्षेत्र में आर्थिक सहायता व सामाजिक सुधार से कृषि विकास को बढ़ाया जा सकता है।

अध्ययन में स्पष्ट है कि सीहोर, रायसेन, विदिशा जिले कृषि विकास की की दृष्टि से राज्य में महत्वपूर्ण योगदान देते है। किन्तु राजगढ़ एवं भोपाल जिला कृषि विकास की दृष्टि से पिछड़े हुए है।

कृषि विकास को कृषि ऋण योजनाएँ प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर रही है। साथ ही कृषि विकास में वृद्धि करने में संस्थागत ऋण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

lanHkZ xzaFk lwph %&

1. मध्यप्रेदश मानव विकास प्रतिवेदन 2007
2. मिश्र एस. के एवं पुरी वी.के. ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुम्बई, 2008
3. मध्यप्रेदश कृषि आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2013 योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, मध्यप्रेदश शासन
4. जैन डॉ.एस.सी. एवं माहेश्वरी डॉ.पी.डी. ''कृषि अर्थशास्त्र'' कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल 2014
5. संभाव्यतायुक्त ऋण योजना जिला सीहोर वर्ष 2012–13 राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक मध्यप्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल वर्ष
6. संभाव्यतायुक्त ऋण योजना जिला–रायसेन वर्ष 2011–12, 2012–13
7. संभाव्यतायुक्त ऋण योजना, जिला विदिशा वर्ष 2011–12, 2012–13
8. संभाव्यतायुक्त ऋण योजना, जिला भोपाल वर्ष 2011–12, 2012–13
9. संभाव्यतायुक्त ऋण योजना, जिला राजगढ़ वर्ष 2012–13

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k vkj xkeh.k fodkl

Dr. Sarika Garg
Associate Professor (Economic), Academic Counsellor and Assistant Coordinator of Ignou
Ginni Devi Girls Modi (P.G.) College, Modinagar

मानव सभ्यता के विकास के आरम्भ से ही कृषि लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन रही है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है पिछले दो दशकों से अधिक अवधि में औद्योगीकरण के संगठित प्रयास के बावजूद कृषि का गौरवपूर्ण स्थान बना हुआ है। देश की लगभग 72.5 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। जिसके कारण आज भी कृषि विश्व की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय तथा आय का सबसे बड़ा स्त्रोत है विकासशील देशों में प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा स्त्रोत, रोजगार एवं जीवन यापन का प्रमुख साधन औद्योगिक विकास, वाणिज्य एवं विदेशी व्यापार का आधार है। अतः जब तक हमारे देश के गांवो का विकास नहीं होगा तब तक हमारे देश का विकास सम्भव नहीं।

प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि ग्रामीणों की आय का प्रमुख स्त्रोत है तथा आजीविका का साधन है कृषि उत्पादन का ग्रामीणों के रहन–सहन के स्तर पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। अच्छी कृषि ग्रामीणों की आय एवं रहन–सहन के स्तर में वृद्धि करती है जबकि निम्न कृषि आय एवं रहन–सहन के स्तर को घटाती है। भारत की कुल जनसंख्या 72.2 प्रतिशत गांवों में रहता यहाँ लोगों की आजीविका का प्रमुख साधन कृषि है देश की कुल कार्यशील जनसंख्या का 52.1 प्रतिशत कृषि कार्यो में लगा है जिसमें 31.7 प्रतिशत कृषक तथा शेष कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करते है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से लोग कृषि पदार्थो के व्यापार एवं परिवहन, आदि में लगकर अपनी आजीविका कमाते है।

ग्रामीण भारत में कृषि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान देश की विशाल एवं बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना है इसके अतिरिक्त देश के लगभग 48 करोड़ पशुओं को चारा कृषि से ही प्राप्त होता है। अतः इस प्रकार मानव तथा पशुओं के जीवन का आधार कृषि ही है। ग्रामीण भारत ही नहीं सम्पूर्ण देश की आय रोजगार तथा अन्य आर्थिक तत्व कृषि क्षेत्र की गतिविधियों द्वारा महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित होते है अर्थव्यवस्था की स्थिरता, अस्थिरता गतिशीलता निष्प्रवाहता प्रगति और प्रतिगति का प्रमुख निर्धारक तत्व कृषि ही है। कृषि की प्रगति ग्रामीण भारत की प्रगति, राष्ट्रीय आय में वृद्धि तथा आर्थिक प्रगति का संकेत करती है। कृषि उत्पादन मे अस्थिरता, विशेषकर कभी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को झकझोर देती है। कृषि देश के अनेक छोटे बड़े देशों तथा घरेलू उद्योगों का आधार है। सूती वस्त्र चीनी, पटसन, चाय, काफी, रबड़, वनस्पति, घी, तेल आदि अनेक उद्योगों को कच्चा माल कृषि से ही प्राप्त होता है ग्रामीण तथा लघु उद्योगों में चावल, आटा, दाल, तेल आदि मिलों को कच्चे माल की आपूर्ति कृषि से ही होती है।

देश की परिवहन व्यवस्था भी कृषि की प्रगति से प्रभावित होती है। जब कृषि का उत्पादन बढ़ जाता है तो परिवहन के साधन की आय बढ़ जाती है और जब कृषि उत्पादन घट जाता है तो इनकी आय घट जाती है। भारत में विदेशी व्यापार में भी कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के कुल निर्यात का 9.1 प्रतिशत मात्रा कृषि पदार्थो तथा कृषि से सम्बन्धित पदार्थो का होता है। इसके साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से भी भारतीय कृषि का स्थान बहुत ऊंचा है। अनेक कृषि पदार्थो के उत्पादन में भारत को विश्व में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। औद्योगिक प्रगति का मुख्य आधार भी कृषि ही है। अच्छी फसल से कृषकों की कार्य शक्ति बढ़ती है। जिससे वे औद्योगिक निर्मित वस्तुओं की मांग करते है। इससे उद्योग निर्मित वस्तुओं की मांग व कीमते बढ़ती है। परिणामतः उद्योगों की प्रगति होने लगती है। जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कृषि पर आश्रित रहने के कारण भारत में कृषि का सामाजिक व राजनीतिक महत्व बहुत अधिक है और यह महत्व भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है कृषि की व्यवसायिक स्थिरता सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक स्थिरता को भी प्रभावित करती है।

अच्छी कृषि ग्रामीण खुशहाली तथा भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति का प्रतीक है जबकि खराब कृषि

ग्रामीण विपन्नता, कृषकों की ऋणग्रस्ता एवं भारतीय अर्थव्यवस्था की नकारात्मक प्रगति की ओर संकेत करती है। कृषि की समृद्धि सम्पूर्ण देश की समृद्धि को प्रतिबिम्बत करती है कृषि फसलों के निष्पादन से ही देश की आर्थिक सामाजिक प्रगति को गति मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के द्वारा ही कृषि की सम्पन्नता अपेक्षित है।

भारत गाँवों का देश है जहाँ कुल आबादी की का ज्यादा भाग गाँवों में निवास करता है। जब तक गाँवों का विकास नहीं होगा तब तक भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास सम्भव नहीं है। क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था में ग्रामीण उद्योगों का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। गाँवों के विकास के अभाव में भारत की समृद्धि सम्पन्नता व आत्मनिर्भरता अर्थहीन है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग स्वयव ने अपनी रिपोर्ट में ग्राम्य जीवन के महत्व को स्पष्ट करते हुये लिखा है–

''नगरों का विकास गाँवों से होता है। और नगरवासी निरन्तर ग्रामवासियों के परिश्रम पर ही पनपते है। जब तक राष्ट्र का ग्रामीण कर्मठ है तब तक देश की शक्ति और जीवन आरक्षित है। जब लम्बे समय तक शहर गाँवों से उन्नति, आभा और संस्कृति को लेते रहते हैं और बदले में कुछ नहीं देते तब वर्तमान ग्राम्य जीवन तथा संस्कृति के साधनों का ह्रास हो जाता है और राष्ट्र की शक्ति कम हो जाती है।''

गाँवों के विकास में ग्रामीण उद्योग की भूमिका को स्पष्ट करते हुये राष्ट्रीयता महात्मा गाँधी ने कहा था ''जब तक ग्राम्य जीवन को पुरातन हस्तशिल्प के सम्बन्ध में पुनः जाग्रत नहीं करते हम गाँवों का विकास एवं पुननिर्माण नहीं कर सकेगें। किसान तभी पुनः जाग्रत हो सकते है जब वे अपनी जरूरतों के लिए गाँवों पर ही निर्भर रहें न कि शहरों पर जैसा की आज।'' उन्होनें आगे कहा बिना ''ग्राम उद्योगों के ग्रामीण किसान मृत है, वह केवल भूमि की उपज से स्वयं को नही पाल सकता। उसे सहायक उद्योग चाहिए।'' ग्राम–उद्योग की परिधि में वे सभी उद्योग धन्धे आते है। जो ग्रामवासी अपने घरों के आस–पास पारम्परिक रीतियों अथवा जाति विशेष के कौशल का उपयोग करते हुए निष्पादित करते है। यही कारण है कि सामान्यता स्थानीय कच्चे माल, कौशल, पूँजी, तकनीक, उपभोग पर आधारित उत्पादन को ग्रामोउद्योग की संज्ञा दी जाती है। ऐसे उद्योग को कुटीर उद्योग, लघु उद्योग एवं कृषि आधारित उद्योग कहते है।

वर्तमान समय में देश के विकास और प्रगति में कृषि एवं ग्रामोद्योग का महत्वपूर्ण योगदान है। देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा इसी पर टिका है। कृषि एव सम्बद्ध क्षेत्र भारतीय अर्थव्यव्सथा की आधारशिला है यह न केवल देश की दो तिहाई आबादी की रोजी–रोटी एवं आजीविका का प्रमुख साधन है। बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन–शैली का आईना भी है। देश में खेती–बाड़ी के साथ पशुपालन, बागवानी, मुर्गीपालन, मछली पालन, वानिकी, रेशम–कीट पालन, कुक्कुट पालन व बत्तख पालन आमदनी बढ़ाने का एक अहम हिस्सा बनता जा रहा हैं। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त होता हैं। देश के कुल निर्यात मे 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता हैं। आज भी देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कृषि एवं सबद्ध क्षेत्रों में लगी हुई है। आर्थिक सर्वे में साल 2018–19 में देश की आर्थिक वृद्धि दर 7 से 7.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। कृषि सम्बन्धी आंकड़ों का अवलोकन करें तो कृषि विकास दर वर्ष 2016–17 में 4. 9 प्रतिशत भी वर्ष 2016–17 के आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रो का देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 17.8 प्रतिशत योगदान दे किसी समय में आयात का निर्भर रहने वाला भारत आज 27.568 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन कर रहा है। भारत गेहूँ, धान, दलहन, गन्ना और कपाल जैसी अनेक फसलों के चोटी के उत्पादकों में शामिल है। भारत इस समय दुनिया का सबसे बड़ा सब्जी और फल उत्पादक देश बन गया है। देश में 2.37 करोड़ हेक्टेयर में बागबानी फसलों की खेती की जाती है। जिससे 2016–17 में कुल 30.5 करोड़ टन बागवानी फसलों का उत्पादन हुआ। भारत विश्व में मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक व निर्यातक है।

भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारत 165 करोड़ टन के साथ विश्व दुग्ध उत्पादन में 19 प्रतिशत का योगदान देता है। कुक्कुट पालन में भारत विश्व में सातवें स्थान पर है। उत्पादन में भारत का चीन और अमेरिका के बाद विश्व में तीसरा स्थान है। देश में 6 लाख टन मांस का कुक्कुट उद्योग उत्पादन करता हैं। मुर्गीपालन बेरोजगारी घटाने के साथ देश की पौष्ठिकता

बढ़ाने का भी बेहतर विकल्प है। मौजूदा तौर पर भारत दुनिया का दूसरा बड़ा मछली उत्पादक देश है। वर्तमान स्थिति की बात करें तो मछली पालन की देश के सकल घरेलू उत्पाद में करीब एक प्रतिशत की हिस्सेदारी है। वर्ष 2015–16 में मछलियों का कुल उत्पादन 1.08 करोड टन था। भारत में खेती–किसानी आज भी जोखिम भरा व्यवसाय है जिसमें सालाना मौसम पर निर्भर करती है खेती में बढ़ती उत्पादन लागत व घटते मुनाफे के कारण युवाओं का झुकान भी खेती की तरफ कम होता जा रहा है। आज ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े स्तर पर युवाओं का शहरों की ओर पलापन हो रहा है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी व कम आमदनी की वजह से रोजगार के अवसर कम होते जा रहे है। ऐसे में कृषि आधारित व्यवसायों को रोजगार के विकल्प के रूप में अपनाया जा सकता है।

वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के साथ डेयरी किसानों की आय को भी दोगुना करने के लिए सरकार अनेक योजनाएं चला रही है। दुधारू पशुओं की उत्पादकता बढ़ाकर दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए अनेक उपाय किये जा रहे है। देश में पहली बार देशी नस्लों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु एक नई पहल ''राष्ट्रीय गोकुल मिशन'' की शुरूआत दिसम्बर 2014 में की गई। योजना के अन्तर्गत अब तक 503 करोड़ रूपये की राशि जारी की जा चुकी है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन के ही अन्तर्गत गोकुल ग्राम स्थापित करना अन्य घटकों के साथ शामिल है। योजना के तहत 18 गोकुल ग्राम विभिन्न 12 प्रदेशों में स्थापित किए गये है। गोकुल ग्राम देश प्रजाति के पशुओं के विकास के लिए एक केन्द्र के रूप में कार्य करते है और ये प्रजनन क्षेत्र में किसानों को पशुओं की आपूर्ति हेतु संसाधन का काम भी करते है। है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत राष्ट्रीय बोवाइन उत्पादकता मिशन की शुरूआत 825 करोड़ रूपये के आवंटन के साथ नवम्बर 2016 में की गई। इसका उद्देश्य दुग्ध उत्पादन एवं उत्पादकता में तेंजी से वृद्धि तथा दुग्ध उत्पादन व्यवसाय को अधिक लाभकारी बनाना है। देश में पहली बार राष्ट्रीय बोवाइन उत्पादकता मिशन के अन्तर्गत ई–पशुधर पोर्टल नवम्बर 2016 में स्थापित किया गया है। यह पोर्टल देशी नस्लों के लिए प्रजनकों और किसानो को जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पिछले कई वर्षो में बागवानी फसलों पर अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं का बड़ा उत्साहजनक परिणाम रहा हैं जिसके फलस्वरूप लगातार चार वर्षो से प्रतिकूल जलवायु की दशाओं में भी बागवानी फसलों तथा फलों के सकल उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने एवं पर्यावरण को शुद्ध करने के फलों के सकल उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने, रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने एवं पर्यावरण को शुद्ध करने में फलों एव बगीचों के महत्व को ध्यान में रखकर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत बागवानी मिशन परियोजना चलाई जा रही है। बागवानी मिशन को तकनीकी सहयोग एवं वैज्ञानिक परामर्श देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का बागवानी विज्ञान संभाग अपने 23 संस्थानों, 11 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं एवं दो अखिल भारतीय नेटवर्क अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से आवश्यक सहयोग दे रहा है।

देश में मत्स्य पालन क्षेत्र में भी अत्यधिक संभावना है। नीली क्रान्ति मिशन में अन्तर्गत वर्ष 2020 तक 1.5 करोड़ टन मत्स्य उत्पादन 8 प्रतिशत की वृद्धि दर से हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। रेशम उद्योग की असीम संभावनाओं को देखते हुए सरकार ने हाल ही में समेकित सिल्क विकास योजना को भी मजूरी दी है। यह योजना मंत्रालय केन्द्रीय रेशम बोर्ड के जरिए लागू हुआ। वर्ष 2017–18 से 2019–20 के तीन वर्षो के लिए 2161.68 करोड़ रूपये के कुल आवटन की मंजूरी दी गई है।

बजट 2018–19 में आपरेशन ग्रीन का ऐलान किया गया। वो भी नई स्पलाई चेन व्यवस्था से जुड़ा है। ये फल और सब्जियां पैदा करने वाले खासतौर पर टाप पानी टमाटर, प्याज और आलू उगाने वाले किसानों के लिए लाभकारी है।

''गोबर धन योजना से भी ग्रामीण क्षेत्रों को कई लाभ मिला गांव को स्वच्छ रखने में मदद मिली। पशु–आरोग्य बेहतर हुआ और उत्पादकता बढ़ी। बायोगैस से खाना पकाने और ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता बढ़ी किसानों एवं पशुपालकों को आमदनी बढ़ाने में मदद मिली और रोजगार के नए अवसर मिले।''

''मेरा गांव मेरा गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत देशभर में 20 हजार कृषि वैज्ञानिक किसानों के साथ सीधे जुड़े उनकी समस्याओं का समाधान कर रहे है। प्रौद्योगिकी और पारदर्शिता वर्तमान सरकार की पहचान बन गए है। सरकार ने अगले पांच वर्षो में किसानों की आमदनी दोगुनी करने का महत्वकांक्षी लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य की हासिल करने के लिए परम्परागत तरीकों से हटकर ''आउट–आफ–बॉक्स'' पहल की गई है। किसानों की आय बढ़ाने व ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए परम्परागत तकनीक के स्थान पर आधुनिक तकनीकों पर जोर दिया जा रहा है।

अतः सरकार की पूरी कोशिश है कि कृषि एवं ग्रामोद्योग के जरिए देश के किसान ज्यादा से ज्यादा आय अर्जित करें युवाओं को रोजगार मिले आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को उनका हक मिले और उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके। किसानों की आय बढ़ाने में कृषि एवं ग्रामीण विकास के अन्तर्गत ग्रामोद्योग के महत्व को स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री जी नरेन्द्र मोदी ने भी कहा है कि हरित क्रान्ति और श्वेतक्रांति के साथ हमें जैविक क्रांति, जलक्रान्ति, नीली क्रांति और मीठी क्रान्ति लाने पर भी जोर देना होगा। जिससे हमारे देश में अधिक से अधिक ग्रामीण विकास हो सके। क्योंकि ग्राम ही हमारी नींव है जिसे ओर मजबूत करना होगा।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k fodkl ,o xkeh.k fodkl

jkds'k dqekj xqIrk
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), डॉ सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
श्रीमती आशा रॉय
सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा
वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र), डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Lkkjka'k & भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां के लोगों का कृशि से सदियों पुराना संबंध है फिर भी यहाँ कृषि के पिछड़ेपन की स्पष्ट झलक दिखलाई पड़ती है। यद्यपि आयोजनकाल में किये गये प्रयासों के फलस्वरूप दीर्घकालीन गतिहीनता की स्थिति समाप्त हुई है एवं कई फसलों की उपज बढाने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि को समस्त उद्योगों की जननी, मानव जीवन की पोषक, प्रगति की सूचक तथा सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है। भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अधिकांश जनसंख्या के जीवन यापन का साधन है। वर्तमान में देश की 52 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से कृषि व्यवसाय में लगी है। विदेशी व्यापार की दृष्टि से भी भारत में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के कुल निर्यात का लगभग 9.9 प्रतिशत भाग कृषि पदार्थों तथा कृषि से संबंधित पदार्थों का होता है। (स्त्रोत– आर्थिक समीक्षा 2011–12, pp. A-88-89) इसी प्रकार भारत में कुल भूमि का 52 प्रतिशत हिस्सा कृषि योग्य है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी भारतीय कृषि को शीर्श स्थान प्रदान करता है। तीव्र आर्थिक विकास की ओर उन्मुख वर्तमान गतिशील विश्व के समस्त विकसित एवं विकासशील देश अपने उपलब्ध संसाधनों का अपनी परिस्थितियों एवं क्षमताओं के अनुरूप यथासम्भव अनुकूलतम उपयोग कर कृषि उत्पादों में परिमाणात्मक एवं गुणात्मक सुधार तथा प्रगतिशील एवं व्यवसायिक कृषि के विकास हेतु सचेत एवं सतत् प्रयासरत है। भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि राष्ट्रीय आय का सबसे बड़ा स्त्रोत, रोज़गार एवं जीवन यापन का प्रमुख साधन, औद्योगिक विकास, वाणिज्य एवं व्यापार का आधार है। भारतीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के लिए कृषि विकास पर इसलिए ध्यान दिया जाता है, क्योंकि कृषि क्षेत्र में पूंजी उत्पाद अनुपात अधिक ऊँचा नहीं है तथा कृषि विकास के लिए विदेशी पूँजी की उतनी आवश्यकता नहीं पड़ती जितनी की औद्योगिक विकास के लिए पड़ती है।

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है, वर्ष 1950–51 में सकल घरेलू उत्पाद में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का योगदान 56.46 प्रतिशत था जो वर्ष 2011–12 में घटकर 19.93 प्रतिशत हो गया है। भारतीय कृषि के अंतर्गत खाद्यान्नों के क्षेत्र में लगभग आत्मनिर्भरता की स्थिति है फिर भी यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि अन्य विकसित देशों की अपेक्षा अभी भी बहुत पिछड़ी है क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आज भी कृषकों का परम्परावादी दृष्टिकोण, दोषपूर्ण सामाजिक ढ़ांचा, जनसंख्या का कृषि पर अधिक भार, किसानों की निर्धनता तथा ऋणग्रस्तता, कृषि में दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था एवं कृषि अनुसंधान का परिणाम कृशकों तक नहीं पहुंच पाना प्रमुख है। आज भी कृषि में जोतों का आकार छोटा एवं भूमि व्यवस्था का ढ़ांचा कृषि को पश्चगामी कर रहा है। एक ओर हम नवीन हरितक्रांति की बात करते है जबकि अधिकांश भागों में उत्पादन की पुरानी तकनीक, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं साथ ही उन्नत शील बीजों कीटनाशकों तथा रासायनिक खादों का न्यून प्रयोग किया जाना है। सम्प्रति भारत में प्रति हेक्टेयर रासायनिक खादों का प्रयोग 144.14 कि.ग्रा. है जो अन्य विकसित देशों जापान (306.6 कि.ग्राम), फ्रांस (221 कि.ग्रा.) इत्यादि की तुलना में बहुत कम है इसके अतिरिक्त मिट्टी की गुणवत्ता में कमी, भूमि कटाव, जल भराव, बाढ़ की समस्या तथा कृषि एवं उद्योग के बीच परस्पर समन्वय का अभाव आदि ऐसी बातें हैं जो भारत में कृषि के उत्पादन को प्रभावित करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की दशा अत्यंत भोचनीय थी, किंतु वर्तमान में कृषि अनुसंधान एवं विकास हेतु कृषि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शोध संस्थाओं की स्थापना से भारतीय कृषि में उल्लेखनीय कार्य हो रहा हैं। कृषि में प्रति एकड़ उच्च उत्पादकता के लिए उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग किया जा रहा है। इसके लिए राष्ट्रीय बीज निगम तथा बड़े बड़े कृषि फार्मों की स्थापना की गई है। वर्तमान पंचवर्षीय योजनाओं तक सिंचाई की सुविधाओं में पर्याप्त विस्तार हुआ है। भारत की अंतिम सिंचाईं क्षमता का आकलन 140 मिलियन किया गया है। कृषकों के छोटे–छोटे और बिखरे खेतों को एक स्थान पर करने के लिए चकबन्दी कार्यक्रम लागू किया गया है। देश के विभिन्न स्थानों पर रासायनिक खाद बनाने के कारखाने स्थापित किए गये है तथा उर्वरकों के पर्याप्त मात्रा में आयात की व्यवस्था की गई है। भारत सरकार द्वारा उर्वरकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में सब्सिडी दी जा रही है। जिसका ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रभाव यह हुआ कि देश में रासायनिक उर्वरकों (N,P,K) की खपत वर्ष 1960–61 के 0.2 मिलियन टन से बढ़कर वर्ष 2010.11 में 28.12 मिलियन टन हो गई है। आज ग्रामीण अर्थव्यवस्था में फसलों को कीटाणुओं एवं रोगों से बचाने के लिए केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के द्वारा संचालित समन्वित कीट प्रबंध योजनाओं के अंतर्गत समन्वित कीट प्रबंध तकनीक के विभिन्न पहलुओं के बारे में लोगों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कृषि मूल्यों मे स्थायित्व लाने के लिए कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की स्थापना की गई है। किसानों को वित्त एवं साख की सुविधा प्रदान किए जाने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की शाखाएं खोली जा रही है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में परिवहन एवं विपणन के नेटवर्क में काफ़ी विस्तार हुआ है। इन सभी तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय कृषि अब सुनहरे पथ पर चलने के लिए अग्रसर हो गई है।

भारत का मूंगफली तथा चाय के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है जबकि चांवल, कपास, गन्ना तथा जूट में द्वितीय स्थान तम्बाकू के उत्पादन में तीसरा स्थान तथा प्राकृतिक रबर के उत्पादन में पाँचवा स्थान है। भारत का लाख के उत्पादन में विश्व में एकाधिकार है। इस प्रकार भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृशि, रोज़गार में योगदान, खाद्यान्न व चारे की आपूर्ति, उद्योगों का आधार, परिवहन के साधनों की आय का स्त्रोत, विदेशी व्यापार में कृषि की भूमिका, भूमि का सर्वाधिक उपयोग कृषि के लिए, राजस्व में योगदान, अंतर्राष्ट्रीय महत्व, सामाजिक एवं राजनैतिक महत्व जैसे कई अवसर उपलब्ध करा रही है।

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k lo/ku e u{k=k dk iHkko

ik- ekuoUn ik.M;
आचार्य एवं अध्यक्ष, (ज्योतिष विभाग), महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, करौंदी,
ब्रह्मस्थान जिला– कटनी (म.प्र.)

^^of"Veyh df"k lok of"Veyh p thoue^^

इस सिद्धान्त के अनुसार यह संसार पंच महाभूतों का परिणाम है प्राणीमात्र की आवश्यकतायें और अपेक्षायें इन्हीं पंचमहाभूतों के अन्तर्गत निहित है। इनमें ही एक महाभूत जल है क्योंकि कहा गया है ^^u tyu foukykdk lL;cht iztk;r^^ अर्थात् जल के बिना किसी भी प्रकार की कृषि अथवा बीजोत्पत्ति कि कल्पना किया जाना सम्भव नहीं है।

आकाश मण्डल में स्थित ज्योतिष सम्बन्धी विविध विशयक विधा को ''ज्योतिर्विद्या'' कहते हैं। यह विधा मानव समाज को दिक् देश एवं काल का ज्ञान कराती है। सांसारिक समस्त व्यापार इसी दिक्, देश, काल पर परिचालित हैं। इन तीन के ज्ञान के बिना व्यावहारिक जीवन पारिवारिक जीवन, कृषि सम्बन्धी ज्ञान की कोई भी क्रिया सम्यक् प्रकार समाहित नहीं की जा सकती है। मनुष्य का जन्म या प्राकट्य जिस नक्षत्र–ग्रह वातावरण के तत्व–प्रभाव विशेष में पोषित होता है उसमें उसी तत्व की विशेषत्व रहती है। इसका प्रभाव केवल मानव पर ही नहीं बल्कि वन्य, स्थूल एवं उदि्भज्ज आदि पर पड़ता है। कृषि कार्य के लिए जल का होना अत्यन्त आवश्यक है, जल वृष्टि तभी होती है जब चन्द्रमा जलचर नक्षत्रों पर होता है। यह जल मुख्यतः प्रकृति प्रदत्त वर्षा से ही सम्भव होता है, वह जल नदी, तालाब, कूप, नलकूप, बांध आदि के द्वारा प्राप्त होता है।

1. हम अपने दैनन्दनी में नाना प्रकार के घटनाओं से अवगत होते है जैसे– सूर्योदय पर ही कमल खिलता है और कुमुदिनी संकुचित हो जाती है।
2. सूर्य अस्त होता है चन्द्रमा का प्रकाश फैलते ही कुमुदिनी खिल उठती है।
3. ग्रहण काल में वनस्पति मुरझा जाती है।
4. पूर्णिमा के दिन समुद्र में ज्वार भाटा, बृहत रूप से उठता है।
5. प्राचीन काल से आज तक मनुष्य कृषि पर अवलम्बित रहा है, वह ज्योतिष शास्त्र में वर्णित सत्ताइस नक्षत्रों के सहारे कृषि (खेती) करता आ रहा है। इसके तहत शुक्ल पक्ष में खेतों में बीज डालना अर्थात् बुवाई करना और कृष्ण पक्ष में फसल की कटाई (मढ़ाई) काफी लाभदायक सिद्ध होती है। इसका कारण नक्षत्र के आधार पर शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी कम हो जाती है, जिससे हवा में नमी रहती है इस कारण बीज अंकुरण तेजी से होता है और मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ जाती है।
6. कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा और पृथ्वी की बीच की दूरी बढ़ जाती है। वायुमण्डल शुष्क हो जाता है। फसलों में नमी खत्म हो जाती है इसीलिए इस पक्ष में कटाई (मढ़ाई) काफी लाभदायक सिद्ध होती है। इस प्रकार कह सकते है कि नक्षत्रों, पक्षों, दिन व तिथि के अनुसार सनातन परम्परा से कृषकों द्वारा अपनाई गई पद्धति सहज एवं सर्वोत्तम रही है।

राशियों का विभिन्न मुख्य तत्वों से सम्बन्ध निम्नानुसार है –

राशि;k	i/kku rRo	iHkkfor ik/k Hkkx
कन्या, मकर, वृष	पृथ्वी	जड़
कर्क, वृश्चिक, मीन	जल	पत्ती
मिथुन, तुला, कुम्भ	वायु	फूल
मेष, धनु, सिंह	अग्नि	फल, बीज

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रत्येक घटना के घटित होने के पूर्व प्रकृति में कुछ विकार उत्पन्न हो जाते हैं जैसे– बादल का उठना, हवा का तीव्र गति से बहना आदि। एक सफल कृषक आषाढ़ के तपते हुये दिन में जब सब लोग घरों में धूप से बचने के लिए छिपे रहते है उस समय वह कृषक धान के बीजों को उपचारित करने में लगा होता है, उसके मन में तपती गर्मी को लेकर तनिक भी भय नही होता, वह आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में रोहिणी और चन्द्र का समागम जानकर खेत को जोतकर धान के बीज को रोपण के लिए तैयार करता है। वह यह जानता है कि रोहिणी

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

नक्षत्र में बपित बीज से उत्तम बेहन (रोपा) उत्तम एवं पुष्ट पौधा तैयार होगा। भारतीय ज्योतिष में रोहिणी नक्षत्र को चन्द्रमा की सत्ताइस पत्नियों में परम प्रिय पत्नी माना गया है, जो कि चौथा नक्षत्र है। रोहिणी का अर्थ है विकास अथवा उन्नति। शास्त्र के अनुसार दो बैलों के द्वारा खीचे जाने वाली बैलगाड़ी को प्रतीक चिह्न माना गया है पूर्व में बैलों से ही खेती होती थी, बैलगाड़ी के माध्यम से फसल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे। रोहिणी नक्षत्र के चार चरण वृषभ राशि में स्थित होते है वृषभ का अर्थ ही होता है बैल, इस राशि का स्वामी होता है शुक्र। कृषि की सुन्दरता, रचनात्मकता तथा व्यापार के साथ जुड़ा हुआ ग्रह है शुक्र। शुक्रवार दिन रोहिणी नक्षत्र में जैसे ही बीज खेत मे पड़ता है, उसका सृजन विकास तथा उन्नति होने लगती है। जब पौधे दस से पन्द्रह दिन के हो जाते है तब मृगशिरा नक्षत्र रूपी भयंकर ताप पौधों को तपाने लगता है। जहां सूर्य की असीम ऊर्जा पौधों को सुखा लेने को आतुर होती है वहीं किसान अपने परिश्रम और प्रयास से उसको पानी देकर नमी प्रदान करता है। कहा जाता है कि यदि मृगशिरा नक्षत्र में तपन ज्यादा होती है तो उस वर्ष वर्षा ज्यादा होती है। अतः किसान सुखद भविष्य को लेकर मृगशिरा का ताप सह लेता है। हमारे पूर्वजों ने लोकोक्तियों के माध्यम से वर्षा की जानकारी देने का अद्भुद प्रयास किया है जैसा कि उधृत है–

jkfgf.k o"kk ex ri dN&dN vknk tk;A

?kk?k dg ofg o"kk e Loku Hkkr u [kk;AA

बृहत्संहिता में बीजों के अंकुरण से वर्षा का ज्ञान बताया गया है।

oRr r ;kx·bfjrkfu ;kfu lUrhg chtkfu
/krkfu dEHkA

येशां तु योंऽशोऽb्रितस्तदंशास्तेशां विवृद्धिं
lefr ukU;%AA

वर्तमान में जिस वर्षा का पूर्व आकलन आज के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित मौसम विभाग द्वारा वर्षा का पूर्वानुमान लगाया जाता है इसी तरह हमारे भारतीय किसान अनादिकाल से ही नक्षत्रों के आधार पर वर्षा का पूर्वानुमान लगाकर कृषि कार्य किया करते थे जैसे–

रोहिणी व चन्द्र समागम के समय कुम्भ कलशों में रखें गये बीजों में से जिनके जितने अंश अंकुरित हों, उतने अंश के उसी अनुपात में उस वर्ष वर्षा की अभिवृद्धि होती है।

खरीफ की फसल का धान एक प्रमुख फसल है वैसे और भी फसलें है जैसे– बाजरा, मक्का, धनिया, अरहर, उड़द, ज्वार आदि। लेकिन विशेष रूप से वर्षा आधारित फसल धान ही है। कहा जाता है कि ''आदित्यात् जायते वृष्टि''।

अर्थात् सूर्य से तपन, तपन से ऊर्जा, ऊर्जा से वृष्टि आर्द्रा नक्षत्र से लेकर अनुराधा नक्षत्र तक धान की फसल में नक्षत्रीय ज्योतिष का बड़ा महत्व है। खेत की जुताई से बीज की रुपाई तक कृत्रिम पानी की सुविधा चाहे जितनी हो परन्तु निश्चित किये गये जलीय नक्षत्रों में यदि पानी नहीं बरसता तो कृषि हानि सुनिश्चित है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। पूर्व समय में हल द्वारा खेती होती थी जिसके लिए सर्वप्रथम खेत को जोतने के लिए शुभ मुहुर्त, शुभ दिन, शुभ नक्षत्र जो कि उस फसल के लिए उन्नत कार्य है जैसे–

मूल, विशाखा, मघा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिशा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, नक्षत्रों में प्रथम बार खेत की जुताई करना खेती के लिए उत्तम होता है। सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार उन्नत फसल के लिए उत्तम दिन माने गये हैं। सिंह, कुम्भ, कर्क, मेष, मकर, तुला, लग्न उत्तम लग्न है। ठीक इसी प्रकार बीज बपन के लिए मूल मघा, स्वाती, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, और अभिजित नक्षत्रों में सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार दिवसों में बीज बोने से फसल उत्तम पैदा होती है।

मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनाऽर्कं शनिं।

पापैर्हीनबलैर्विधौ जललवे शुके fO/kk ek l yAA

लग्ने देवगुरौ हलप्रवहणं शस्तं, न सिंहे घटे।

कर्काजैणघटे तनौ क्षयकरं रिक्तासु शष्ठ्यां तथा।।

एतेषु श्रुतिवारुणदितिविशाखोडूनि भौमं विना।

बीजोप्तिर्गदिता शुभा, त्वगुभतोऽष्टाग्नीन्दुरामेदवः।।

jkeU}fXu;xkU; lPNHkdjk.;lrk gyk·dkfT>rknA

शाद्रामाष्टनवाश्टभानि मुनिभिः प्रोक्तान्यसत्सन्ति pAA

शस्यरोपण में पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, श्लेषा नक्षत्रों में सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार धान आदि के पौधों की रोपाई करने से फसल अच्छी होती है। फसल की मढ़ाई के लिए पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा तथा रेवती रवि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र दिन प्रसस्त हैं।

सर्वप्रथम कृषि का ज्ञान हमें ऋग्वेद के प्रथम मण्डल से प्राप्त होता है जिसमें कि अश्विन देवताओं ने मनु को हल चलाना सिखाया, अपाला ने अपने पिता अत्रि से खेतों की समृद्धि के लिए प्रार्थना की है। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल में खेती की प्रकिया का वर्णन दिया है, यजुर्वेद में पांच प्रकार के चावल महाब्राहि, कृष्णव्रीहि, शुक्लव्रीही, आशुधान्य और हायन का उल्लेख है और अथर्ववेद में यह उल्लेख है कि सर्वप्रथम पृथुवेन्य ने ही कृषि कार्य किया था। शतपथ ब्राह्मण में कृषि से सम्बन्धित जानकारी मिलती है। इसी में खेत जोतने के लिए कर्शण, बोने के लिए (वपन), काटने के लिए कर्तन तथा माड़ने के लिए मर्दन का उल्लेख मिलता है।

गीता में भी अन्न के विषय में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि प्राणों को धारण करने के लिए जो खाया जाता है वह अन्न कहलाता है, अन्न पदार्थों की उत्पत्ति जल से होती है जल का आधार वर्षा है।

vUuknHkofUr Hkrkfu itU;knUu lEHko%A
;KkrHkofr itU;k ;K% deleHko%AA

अन्न जगत का प्राण है जो वर्षा पर आधारित है, वर्षा प्रकृति पर आधारित है और प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन इन्हीं सत्ताईस नक्षत्रों पर आधारित है। अतः प्रयत्न पूर्वक इन्हीं सत्ताइस नक्षत्रों के आधार पर वर्षा ऋतु का परीक्षण कर कृषि कार्य किया जाना सर्वोत्तम है।

lnHk xUFk :–

1. बृहत्संहिता।
2. मुहूर्तचिन्तामणि।
3. मत्स्यपुराण।
4. श्रीमद्भगवद्गीता।

ckyk?kkV ftyk कृf"k fodkl e ;=hdj.k o jklk;fud moZjdk dk Á;kx ,o mldk कृf"k mRiknrk ij ÁHkko ,d HkkSxksfyd v/;;u

'osrk fgjdu
शोधार्थी, भूगोल विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर

ÁLrkouk %& आधुनिक युग में गहन खेती होने के कारण विभिन्न जैविक उर्वरकों फसलों को आवश्यक पोषक तत्व पाने में समर्थ नही होती। पौधों में 17 ऐसे भोज्य तत्व है। जिन्हें पौधे मिट्टी से प्राप्त करते है। जैविक उर्वरक इन तत्वों को विशेष कर नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश को पूर्णतया प्रदान करने में समर्थ नहीं है। जैविक खादे प्रति वर्ष की फसल के कारण भूमि से ह्रास होने वाले उर्वरक तत्वों को पूरा नहीं कर पाती है, दूसरी ओर पशुओं की खादें अथवा अनय जैविक उर्वरकों में नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश का अनुकूलतम मिश्रण नहीं होता है भूमि की उर्वरता को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है। कि समय–समय पर इन तत्वों की कमी को पूरा किया जाए। अर्थात भूमि की उर्वरता तभी कायम रह सकती है। जबकि ह्रास होने वाले सभी तत्वों की पूर्ति की जाए।

''कृषि फसलों के उत्पादन या उपज में होने वाली वृद्धि को कृषि विकास कहा जाता है। कृषि विकास में फसलों की उपज या उत्पादन में वृद्धि करने के लिए रासायनिक उर्वरक, उन्नत बीज, कीटनाशक दवाईयाँ, सिंचाई, की व्यवस्था पशु शक्ति एवं उत्पादन के नवीनतम तकनीक की उपलब्धता में प्रयोग निर्भर है। जिससे वर्ष में दो या दो से अधिक फसलों का उत्पादन कर कृषि उत्पादकता में वृद्धि की जा सके।''

कृf"k mRiknrk dk vFkZ & कृषि उत्पादकता का अर्थ प्रति हेक्टेयर उत्पादन या प्रति उत्पादन–मूल्य का मुद्रा में प्रदर्शित करने से होता है। पहला उत्पादकता का मापक भौतिक इकाई से है जो भूमि उत्पादकता कहलाती है। दूसरा मौद्रिक इकाई में जो भूमि उत्पादकता कहलाती है। दूसरा मौद्रिक इकाई में जो श्रम उत्पादकता होती है। और तीसरी प्रति पूंजी इकाई की लागत पर उत्पादन, पूँजी उत्पादकता को बनता है। पहले मापक से विभिन्न फसलों की उत्पादकता की तुलना एक क्षेत्र में नहीं की जा सकती है। बल्कि यह मापक विभिन्न क्षेत्रों की उत्पादकता की तुलना के लिये उपयुक्त है। जबकि दूसरा मापक विभिन्न फसलों या अन्य इसमें सभी उत्पादन मुद्रा के रूप में परिवर्तित कर लिखे जाते है। कृषि उत्पादकता तथा भूमि उर्वरकता दोनों शब्द बिल्कुल ही भिन्न है। भूमि उर्बरकता से अर्थ किसी विशेष भूमि में उत्पादक तत्वों के होने से होता है। कि ये तत्व उक्त भूमि में कितनी मात्रा में है। जिससे भूमि के उर्वरा शक्ति का पता चलता है।

v/;;u {ks= & भौगोलिक दृष्टि से बालाघाट जिला सतपुड़ा की पर्वत श्रंखला से घिरा समुद्र सतह से 330 मीटर से अधिक ऊँचाई पर बसा है सतपुड़ा की पर्वत श्रंखलाऐं उत्तर–पूर्व की ओर अधिक ऊँची है। जो पश्चिम दिशा की ओर कम होती जाती है। जिले का कुल क्षेत्रफल 9245 वर्ग किलोमीटर है। बालाघाट जिला मध्यप्रदेश राज्य के दक्षिण भाग में 21°19′ से 22°24′ उत्तरी अक्षांश तथा 79°39′ से 81°03′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

मानचित्र क्रमांक 1

बालाघाट जिला कृषि प्रधान जिला है। साथ ही अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बाहुल्य भी है। बालाघाट जिले का एक–चौथाई से अधिक भू–भाग पहाड़ी एवं वनों से अच्छादित है। तथा विषम धरातल वाला जिला है। जिले में भूमि का कुल क्षेत्रफल 9245 वर्ग किलोमीटर है व शुद्ध सिंचित क्षेत्र 123460 वर्ग हेक्टेयर है। तथा जिसका कुल सिंचित क्षेत्र 145061

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

v/;;u d mn~ns'; %&

1. जिले में रासायनिक उर्वरक के प्रयोग में क्षेत्रीय विषमता का अवलोकन करना।
2. जिले के कृषि विकास में रासायनिक उर्वरक उपभोग का अनुमान लगाना।
3. जिले में उर्वरकों के प्रयोग से कृषि उत्पादकता में होने वाली वृद्धि को आकलन करना।

'kks/kÁfof/k %& प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्त्रोंतो एवं द्वितीयक आकड़ों का सकंलन किया गया है। प्राथमिक स्त्रोंतो के अंतर्गत साक्षात्कार एवं अवलोकन प्राविधियों का प्रयोग किया गया है।

led&lydu %& समंको के संकलन हेतु वार्षिक प्रविवेदन, पत्र–पत्रिकाएँ, शासकीय कार्यालयों के प्रतिवेदन एवं जिला सांख्यिकीय कार्यालय व भू–अधिक्षक जिला कार्यालय के प्रतिवेदन आदि का प्रयोग किया गया है।

ftys esa moZjdksa d s Á;ksx ,oa mRiknd rk esa of) %& कृषि विकास में यंत्रीकरण (कृषि तकनीकि) का तात्पर्य कृषि उत्पादकता बढ़ाने वाले तत्वों से है। जिससे भूमि की उर्वराशक्ति बढ़े एवं फसल का उत्पादन प्रभावित हो। कृषि यंत्रीकरण के अंतर्गत उन सभी आधुनिक एवं पुरात्तन तत्वों को समाहित किया जाता है। जिससे किसान को फसल उत्पादन में होने वाली असामयिक क्षति को रोका जा सके। इसके अंतर्गत उपयुक्त बीजों का विकास, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने वाली विधियाँ, पौध संरक्षण विधियों, बीजोपचार विधियाँ इत्यादि सम्मिलित है। इन तकनीकियों एवं विधियों के कारण उपलब्ध परिस्थितिकिय के अनुरूप फसलों एवं पशुओं की नस्लों का विकास किया गया है। जो कदाचित पहले प्राकृतिक बाँधाओं के कारण कृषि के लिए लाभप्रद नहीं समझे जाते थे।

जिले की कृषि अत्यन्त पिछड़ी हुई अवस्था में है। विषम धरातल वाले क्षेत्रों में आज भी प्राचीन विधियों (यंत्रों) का प्रयोग कृषि में किया जा रहा हैं जिसमें बैलों से जुताई, हंसियाँ, कुल्हाड़ी, फावड़ा, खुरपी, गोबर खाद तथा पशुधन आगतों का प्रयोग किया जाता है। जिससे कि कृषि विकास में उत्पादकता का स्वरूप निम्न स्तर का है।

rkfydk Øekad&1

ckyk?kkV ftys moZjdksa d s Á;ksx lca/kh mRiknrkvksa dk vfHker

Ø-	fodkl [k.M dk uke	lof{kr xzkeksa dh la[;k	lof{kr ifjokjksa esa mRiknrkvksa dh la[;k	jklk;fud moZjd		tSfod moZjd		xkscj [kkn		vU; ckn	
				संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	कटंगी	8	560	211	37.68	88	15.72	210	37.50	51	9.10
2.	वारासिवनी	8	640	388	60.62	37	5.78	198	30.94	17	2.66
3.	खैरलांजी	6	480	226	47.08	44	9.16	165	34.37	45	9.47
4.	लालबर्रा	6	420	287	68.33	22	5.23	97	23.09	14	3.35
5.	बालाघाट	8	560	286	51.07	74	13.21	166	29.64	34	7.08
6.	किरनपुर	6	480	195	40.62	26	5.42	221	46.04	38	7.92
7.	लांजी	6	420	188	44.76	27	6.42	186	44.28	19	4.54
8.	बैहर	8	640	165	25.78	31	4.84	414	64.68	30	4.70

9.	परसवाड़ा	8	560	132	23.57	26	4.64	387	69.10	15	2.69
10.	बिरसा	6	360	112	31.11	21	5.83	210	58.33	17	4.73
11.	बालाघाट	70	5120	2190	42.77	396	7.73	2254	44.02	280	5.48

L=kr& ग्रामीण सर्वेक्षण पर आधारित

तालिका से स्पष्ट होता है कि जिले में कृषक रासायनिक उर्वरकों के ही साथ गोबर की खाद का भी प्रयोग बहुतायत से करते है। सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ। कि 42.77 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रासायनिक उर्वरक के उपयोग को बताया, जबकि 44.02 प्रतिशत उत्तरदाता ही जैविक तथा केचुआँ खाद के उपयोग में अपनी सहमती व्यक्त की। सर्वाधिक रासायनिक उर्वरक का उपयोग वरासिवनी एवं लालबर्रा विकासखण्डों के किसान करते प्राप्त हुए, दोनों ही विकासखण्डों में क्रमशः 68.33 एवं 60.62 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रासायनिक उर्वरक का उपयोग किया, जबकि गोबर की खाद का उपयोग परसवाड़ा, बैहर एवं बिरसा विकासखण्डों में किया जाता है। इन विकासखण्डों में क्रमशः 69.10 64.68 एवं 58.33 प्रतिशत उत्तरदाता गोबर की खाद का उपयोग कर रहे है।

rkfydk Øekad&2

ckyk?kkV ftys moZjdksa dk iz;ksx ¼o"kZ 1980&2011½

Øa-	fodkl [k.M dk uke	1980&81		1990&91		2001&02		2010&11	
		क्षेत्रफल (हे.मं.)	मात्रा (टन में)	क्षेत्रफल (हे.मं.)	मात्रा (टन में)	क्षेत्रफल (हे.मं.)	मात्रा (टन में)	क्षेत्रफल (हे.मं.)	मात्रा (टन में)
1.	कटंगी	17302	226.35	29906	692.77	29113	721.55	38627	8640.61
2.	वारासिवनी	16475	632.66	30330	1745.12	29861	1621.10	38856	9512.36
3.	खैरलांजी	17421	222.44	27489	525.28	25316	1358.27	41997	8316.32
4.	लालबर्रा	19527	612.32	34533	1579.26	33146	1432.42	43009	8320.16
5.	बालाघाट	12424	237.35	24486	649.73	28727	916.58	42402	9360.32
6.	किरनपुर	13558	227.25	30934	552.66	31503	1036.35	46741	8364.16
7.	लांजी	875	26.55	15395	89.24	31346	2093.74	44553	8328.23
8.	बैहर	1216	13.26	4071	38.30	15039	5257.99	32434	2815.40
9.	परसवाड़ा	1375	6.21	6891	18.95	19543	221.80	33444	2844.11
10.	बिरसा	1655	7.24	4350	15.25	24258	407.95	32763	2844.11
11.	बालाघाट	101828	2211.63	208388	5906.56	267852	10067.75	394826	69345.78

L=kr %& उप संचालक कृषि कार्यालय बालाघाट

तालिका से स्पष्ट होता हैं कि जिले में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में निरन्तर वृद्धि की प्रवृत्ति पायी गई है–

1. वर्ष 1980–81 में जिले में 2211.63 टन रासायनिक उर्वरक का प्रयोग किया गया जो वर्ष 1990–81 में बढ़कर 5906.56 टन हो गया। इस प्रकार विगत 10 वर्षो में उर्वरको के प्रयोग में 167.56 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1980–81 में 101828 हेक्टेयर भूमि पर उर्वरकों का प्रयोग किया गया। जिसका क्षेत्रफल बढ़कर वर्ष 1990–91 में 208388 हेक्टेयर भूमि हो गया। इस प्रकार विगत 10 वर्षो में 104.64 प्रतिशत क्षेत्रफल में वृद्धि हुई। वर्ष 1980–81 में 2.17

किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरक का प्रयोग जिले में किया जा रहा था। जो वर्ष 1990–91 में बढ़कर 2.83 हो गया। इस प्रकार विगत 10 वर्षो में 30.41 प्रतिशत किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बढ़ा।

2. वर्ष 1990–91 में जिले में लगभग 5906.56 टन विभिन्न प्रकार के उर्वरकों का प्रयोग किया गया। जिसकी मात्रा बढ़कर वर्ष 2001 में 10067.75 टन हो गयी। इस प्रकार विगत 10 वर्षो में रासायनिक खादों के उपयोग में 70.45 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई। वर्ष 1990–91 में 208388 हेक्टेयर भूमि पर रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया गया। जबकि वर्ष 2000–01 में 267852 हेक्टयर भूमि पर विभिन्न प्रकार के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग किया गया। इस प्रकार वर्ष 1991–2001 के मध्य 1185.40 प्रतिशत क्षेत्रफल में वृद्धि हुई। वर्ष 1990–91 में 2.83 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग जिले में किया जा रहा था जिसकी मात्रा बढ़कर वर्ष 2001 में 70.45 प्रतिशत प्रति हेक्टेयर हो गयी।

leL;k,a %& प्रस्तुत शोध पत्रक की निम्नलिखत समस्याएँ है।

1. कृषकों में शिक्षा का अभाव
2. दोषपूर्ण भू–स्वामित्व व्यवस्था
3. कृषकों का भाग्यवादी एवं अप्रगतिशील दृष्टिकोण
4. खाद एवं उर्वरकों का समय पर प्राप्त न होना
5. आधुनिक कृषि यंत्रों एवं उपकरणो का अभाव
6. जिले में यातायात एवं संचार सुविधाओं का अभाव

l>ko %& कृषि की उत्पादकता को एक अपेक्षित स्तर तक बढ़ाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि भूमि का क्षेत्रफल बढ़ाने की सम्भावनाये बड़ी सीमा तक समाप्त हो चुकी है। बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए केवल यही उपाय रह गया है। कि प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ाया जाये कृषक को रासायनिक उर्वरकों का उपभोग करते समय सर्वप्रथम मृदा की जांच करना अवश्यक है मृदा (मिट्टी) में जिस पोषक तत्व की कमी पाई जाये उस पोषक तत्व का इस्तेमाल कृषक करें जो कि कृषि उत्पादकता में वृद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

fu"d"k %& बालाघाट जिला कृषि प्रधान जिला होने के साथ ही साथ अनुसूचित जाति एवं जनजाति बहुल्य जिला भी है। जो कि परम्परागत कृषि तकनीकियो एवं विधियों को अपनाये हुए है। वारासिवनी, लालबर्रा, कटंगी एवं लांजी विकासखण्डो में कृषि उन्न्त अवस्था में प्राप्त होती है। अधिक उन्नत एवं अधिक उत्पादकता होने का कारण किसानो द्वारा गोबर खाद, कम्पोस्ट खाद, जैविक खाद, के प्रयोग के साथ ही साथ यूरिया, पोटाश, नाईट्रोजन, फासफोरस आदि मिश्रित अनेको रासायनिक उर्वरकों का भी प्रयोग किया जाना है। वही दूसरी ओर बैंहर, बिरसा एवं परसवाड़ा विकाखण्डों में उत्पादकता का स्तर निम्न पाया जाता है। निम्न उत्पादकता का कारण विषम धरातल होने के साथ ही साथ कृषकों का जागरूक न होना तथा शिक्षा का निम्न स्तर मुख्य है जो कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग कम मात्रा में करते है।

lanHkZ xzUFk lwph %&

1. श्रीवास्तव, डॉ. दया शंकर (1993) : कृषि के परिवर्तनशील प्रतिरूपों का भौगोलिक अध्ययन, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली

2. उमाहिया कृष्ण कुमार (1993) : कृषि विकास की समस्याएँ, मित्तल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली

3. त्रिपाठी डॉ. बद्री विशाल (2008) : भारतीय कृषि (समस्याएँ, विकास एवं संभावनाये) किताब महल सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद

4. सिंह डॉ. राजपाल (2014) : ''कृषि अर्थशास्त्र'' भारती भण्डार, सुशील कॉम्पलैक्स, वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ

5. बालाघाट जिला सांख्यिकीय कार्यालय, बालाघाट

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

Ñf"k {k= e: eujxk dk ;kxnku

श्री राजेश तिवारी
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग), महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, करौंदी जिला कटनी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या की अजीविका का साधन कृषि एवं कृषि से सबंधित क्षेत्र है। कुल कृषि श्रमिको में 50 प्रतिशत से अधिक भागीदारी महिलाओं की है। देश की विशाल जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त कृषि से कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल बड़ी संख्या में लोगो को रोजगार और कृषि उत्पादों के निर्यात से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। कृषि के अंतर्गत फसल उत्पादन के अलावा पशुपालन बागवानी, मतस्य, कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल जूट, कपास रेशम आदि का उत्पादन जैसे सभी कार्यो को सम्मिलित किया जाता है। जो सीधे तौर पर भूमि से जुड़े है।

Ekujxk dk ifjp; :– महात्मां गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) जो की गरीबी को प्रभावी तरीके से दूर करने और ग्रामीण विकास की दिशा तीव्र करने के लिए केन्द्र सरकार ने इस महत्वकांक्षी कार्यक्रम को 7 सितम्बर 2005 को अधिसूचित किया। 2 फरवरी 2006 से इसे पहले 200 जिलो में शुरू किया गया तथा 1 अप्रैल 2008 को यह पूरे देश में लागू किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रत्येक वर्ष 100 दिनो का मजदूरी योग्य गारंटीशुदा रोजगार प्रदान करना है। और न्यूनतम वेतन अधिनियम 1948 के प्रावधान शामिल कर इसे लाभोन्मुख बनाया गया है।

eujxk dk Ñf"k ij ÁHkko :– भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। जिसमे कृषि का वर्षा आश्रित होना सबसे बड़ी बाधा है। यद्यपि कृषि की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक प्रसास किये गए है। विशेषकर लघु एवं सीमांत कृषको की कृषि में सुधार लाने में मनरेगा की अपार सभावनाए है।

मनरेगा समस्त मिटटी के कार्य भूमि विकास जल संरक्षण एवं संवधर्न पौधा रोपण एवं वानिकरण इत्यादि गतिविधियो से सबंधित है जिसके परिणामस्वरूप कृषि रकबे में भी सीमित वृद्धि हुई है। इसके साथ ही यह भी अपेक्षित था कि इससे सिंचाई की सुविधाओ में सुधार होगा जिससे उत्पादन में बढोत्तरी हुई एवं सकल कृषि उत्पादन में भी वृद्धि हुई इसके अलावा अन्य कारक है जो कृषि क्षेत्र में विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है वो है समय एवं आव यक वर्षा, सूक्ष्म वित्त, गुणवत्ता वाले कुषि उपकरणों एवं सामग्री की समय पर उपलब्धता। उपयोजनाओ द्वारा कृषि क्षेत्र में मनरेगा का निम्न कार्यो से योगदान रहा है।

1 dfiy /kkjk :– कपिल धारा उपयोजना में निजी भूमि पर सिंचाई सुविधाओ के विकास के लिए किये जाने वाले कार्य जैसे नवीन कूप भू–जल पुर्नमरण, खेत तालाब, मेसनरी चैक डेम, स्टॉप–डेम, आर.एम.एस. लघु तालाब का निर्माण कराया जाता है।

2 **भूमि शिल्प उपयोजना** :– इस उपयोजना में कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए भूमि सुधार के कार्यो से संबधित है। इसके तहत अनउपजाऊ भूमि को कृषि योग्य बनाने में सहायता प्रदान की जाती है। योजना में भूमि विकास के कार्य जैसे समतलीकरण और मेढ़ बंधान आदि कराये जाते है।

3 **शैलपूर्ण उपयोजना** :– इस उपयोजना के अंतर्गत ग्रामीणो को जलाऊ लकड़ी उपलब्ध कराने के कार्य किये जाते है। इसके साथ ही पशुओ हेतु चारा की उपलब्धता के कार्य भी होते है। इसके लिए वनस्पाति विहीन पहाड़ियो पर वर्षा जल को रोकने, टीलो पर वर्षा जल और मिट्टी कटाव को रोकने के कार्य किये जाते है। इसके तहत कंटर ट्रेंच और पहाड़ियो पर छोटी नालियो बनायी जाती है।

4 Uknu Qyk?kku mi;kstuk :– इस उपयोजना अतर्गत ग्रामीण क्षेत्रो में उद्यानिकी प्रजाती के पौधो जैसे आम, आवला, अमरूध, संतरा, नींबू, मौसबीं इत्यादी फलदार पौधे रोपित किये जाते है। जो पर्यावरणीय स्थिरता और पारिथितिकी संतुलन बनाने के साथ साथ ग्रामीणो की आय सृजन का स्थायी स्त्रोत भी उपलब्ध कराते है।

5 **रेशम उपयोजना** :– इस उपयोजना का उद्देश्य हितग्राही की निजी भूमि पर शहतूत प्रजाति के वृक्षारोपण को बहुउद्देशीय गतिविधियो मे शामिल करना है।

6 **वाटर शेड प्रोग्राम** :– श्रृंखलाबद्ध नालियों पर जल संरचनाएँ उपयोजना का उद्देश्य वर्षा ऋतु के बहकर व्यर्थ जाने वाले जल संरक्षण और संवर्द्धन करना।

miyfC/k;k :–

1. भैसदेही विकास खण्ड के डेडवाकुंण्ड गॉव के गंगा राम आदिवासी के पास एक हेक्टेयर जमीन थी। इस जमीन पर वे बरसाती फसल ले पाते थे पर उनके परिवार के लिए यह पूरी नही हो पाती थी। उन्हे पता लगा रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत सरकार बिना किसी कीमत के फलदार पौधे लगा रही है। नंदन फलोउद्यान योजना से ग्राम पंचायत ने उनकी जमीन पर 450 संतरे के पौधे लगाए। गंगा राम ने खुद मेहनत करके इन पौधो की देखभाल से पौधे संतरे से लद पड़े। गगांराम का संतरे के कारोबारी बनने का सपना पूरा हो गया।

2. dfiy/kkjk dwi ls fgjÅyky cus y[kifr – जिला बालाघाट के विकास खण्ड अंतर्गत ग्राम पचांयत रघोली में निवास करने वाले एक साधारण सा किसान हिरऊलाल पंचतिलक मनरेगा योजना के तहत निर्मित कपिलधारा कूप के चलते लखपति कृषक बन गये। उन्होने गर्मी के मौसम में कपिल धारा कूप उपयोजना द्वारा 400 क्विंटल से अधिक से अधिक पैदावार करके लखपति कृषक बन गये।

3. is;ty dwi ls cuk;k lkgknz dk okrkoj.k – मनरेगा से निर्मल नीर उपयोजना द्वारा बैतूल जिले के घोडाडोंगरी विकासखण्ड के ग्राम मलसिवनी में इस योजना के तहत पेयजल कूप का निर्माण कराया गया कूप बनने से जहाँ जॉबकार्ड धारी लोगो को रोजगार मिला वही पेयजल का पुख्ता इंतजाम हो गया।

ऐसी कई उपलब्धिया है। जिसके अंतर्गत कृषि क्षेत्र के लिए मनरेगा की महत्वपूर्णता निरन्तर बढती जा रही है।

lUnHkZ :–

1. ग्रामीण विकास मत्रांलय भारत सरकार की बेवसाइट www.Rural.in
2. मनरेगा की बेवसाइट www.Manrega.nic.in
3. मासिक पत्रिका कुरूक्षेत्र मार्च 2018
4. मासिक पत्रिका योजना मई 2017

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

e/; çns'k dh vFkZ0;oLFkk e: कृf"k fodkl dk ;kxnku

ufork jktqjdj
रिसर्च स्कोलर, B.U. Bhopal

ifjp; %& भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। कृषि भारतीय लोगों की अजीविका का मुख्य साधन है। लगभग 60**%** जनसंख्या कृषि पर निर्भर हैं आर्थिक जीवन का आधार, रोजगार का प्रमुख श्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन का माध्यम होने के कारण कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था कि रीड कहा गया है। 1960–61 में भूमि सुधार कार्यक्रम का सूत्रपात किया जिससे किसानो को भूमि पर आधकिर व भू–जोतो की अधिकतम सीमा, चकबन्दी जिससे कृषक वर्ग को लाभी हो सके। ताकि भारतीय कृषि की उत्पादन क्षमता में सुधार हो सके। भारत देश विश्व में विभिन्न कृषि उत्पादों का एक बड़ा उत्पादक है। उत्पादन की मात्रा की दृष्टि से भारत दुग्ध उत्पादन सर्वोच्च स्थान पर है आधुनिक अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र में प्रगति की और अग्रसर होने के लिए उत्पादन उत्पादकता, भंडारण, उधोगो एवं बाजार में एक साशक्त प्रणाली का कार्यन्वयन आवश्यक है।

राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में (1991) से वर्ष 2011–2012 के मध्य कृषि क्षेत्र का 15.77**%** योगदान है। भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास प्रक्रिया में यह एक महत्वपूर्ण अपेक्षित परिवर्तन है। एक अतिरिक्त कृषि एवं सम्बन्ध क्षेत्र 70**%** से अधिक जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराता है। हमारे राष्ट्र की उन्नति प्रमुखतः कृषि विकास पर निर्भर है। भारत में संरचनात्मक परिवर्तन के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 1990–91 के 30**%** से वर्ष 2010–11 में 14.4**%** के 9.02**%** से वर्ष 2013–14 में सकारात्मक एवं बढ़ती हुई विकास दर के साथ 22.43**%** की वृद्धि रही है।

v/;;u {ks= %& मध्य प्रदेश एक ऐसा राज्य है जहाँ प्राकृतिक संसाधन जिसमें वन, खनिज, पत्थर मौर नदियां प्रचुर मात्रा में है मध्य प्रदेश मुख्य रूप से एक कृषि प्रधान राज्य है। राज्य की लगभग 73**%** जनसंख्या ग्रामीण है। जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। मध्य प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा बड़ा राज्य है जनसंख्या की दृष्टि से देश का छठा सबसे बड़ा राज्य है। जनसंख्या आर्थिक, शक्तियां, पशुधन दबाव एवं विभिन्न प्रकार की सस्थाये जो भूमि उपयोग को औपचारिक या अनौपचारिक रूप से नियमित करती है। शिथिल होने के कारण हाल के वर्षो में राज्य में भूमि उपयोग में परिवर्तन में प्रभाव डाला है। जिससे विकास में तेजी आई है। जो पूर्णतया कृषि पर निर्भर लघु कृषक (27.15**%**) औसत सीमांत कृषक (40.45**%**) जो कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिक है। कृषि और संबंधित क्षेत्रों के विकास के लिए ठोस कदम उठाने के जरूरत है। ताकि कृषि मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में और ज्यादा योगदान है।

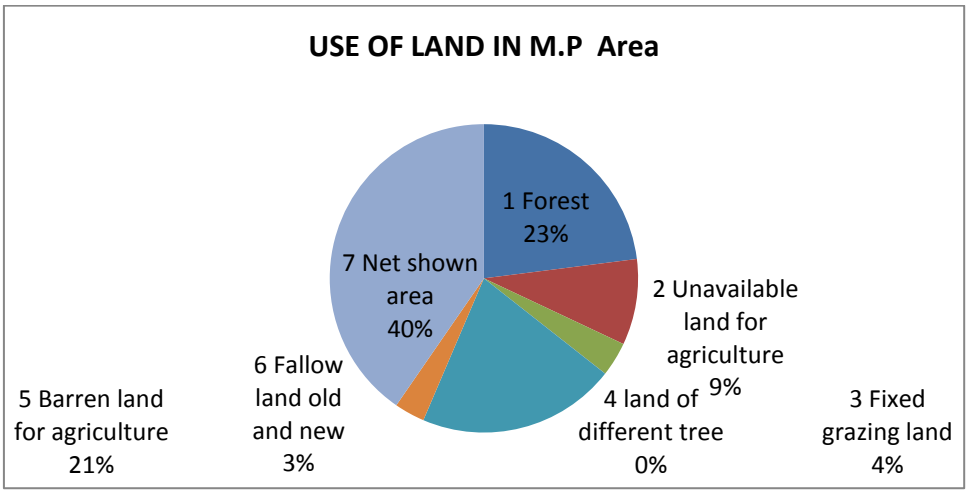

मध्य प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्र 308144 वर्ग कि.मी. है। जिसमें से शुद्ध बोया गया क्षेत्र लगभग 150.78 लाख हेक्टेयर (49.05%) है। सिर्फ 0.24 हेक्टेयर प्रति व्यक्ति भूमि ही विभिन्न कृषि गतिविधियां हेतु उपलब्ध है जिसमें खाद्यान तिलहन, दलहन और अन्य फसलों की खेती शामिल है।

e/; çns'k dh vFkZ0;oLFkk e: कृf"k dk ;ksxnku %& मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि और संबंद्ध सेवाए लगभग 44% हिस्सेदारी का योगदान करती है। और 78% सीधे कृषि से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार कृषि मध्य प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ है।

कृf"k e: e/; çns'k GDP e: l: कृf"k dk ;ksxnku 2011

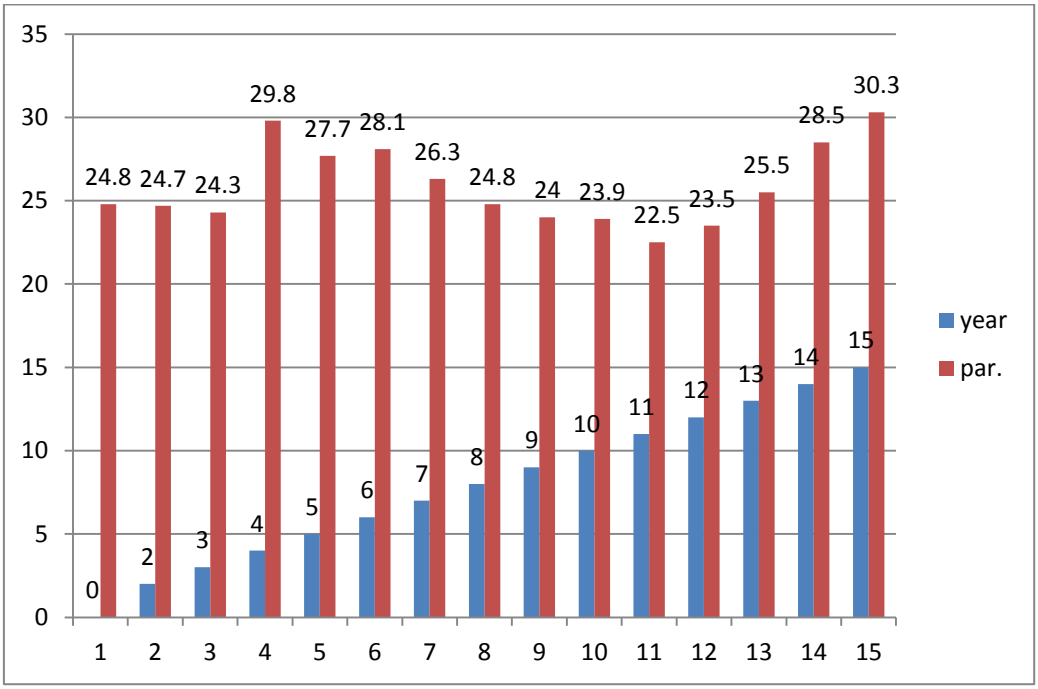

मध्यप्रदेश कृषि कि अर्थ व्यवस्था में कृषि योगदान में निम्न तालिका में दर्शाया गया है। अपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सकल घरेलु उत्पाद में कृषि का योगदान का अध्ययन करने पर पता चलता है। कि 2011 में सबसे कम 22.5% और 2015 में सबसे अधिक 30.3% तक है।

e/; izns'k e: d`f"k fodkl dh izo`fRr %& मध्यप्रदेश कि अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है म.प्र. कृषि विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन भी जरूरी है। जिससे देश व राज्य कृषि विकास पर निव है। जिससे विकास हो सके।

d`f"k fodkl dh o`f) nj %&

1993 – 94	–	02.06
1998 – 99	–	02.06
2004 – 05	–	04.13
2005 – 12	–	07.173
2008 – 13	–	10.82

उपयुक्त तालिका में दिखाई दे रहा है। कि कृषि विकास से वृद्धि दर बढ़ रही है 1993–94 मं (2.06%) थी और 2008 में 10.82% हो गई है अतः कृषि विकास कि योजनाओं का इसमें मुख्यतः योगदान है।

df"k fodkl dh pukfr;k %&

1. लघु एवं सीमांत कृषक से कृषि उत्पादन में प्रभावित।
2. तापमान में वृद्धि अनियामित वर्षा एवं जैव व अजैव प्रभाव के कारण परिवर्तन।
3. औद्योगिकरण शहरीकरण आवास एवं आधारभूत सुविधाओं के कारण कृषि भूमि में परिवर्तन।
4. कृषि क्षेत्रों में उच्च उत्पादन उत्पादकता में परिवर्तन।

I >ko %&

1. बीज खाद मशीनीकरण के उपयोग को बढाया।
2. शीत भंडारण प्रकोष्ठ को बढ़ाया।
3. कृषि में जल कि पूर्ति के माईकों सिंचाई कि पद्धति का प्रयोग कर सकते है।
4. जी.डी.पी. में कृषि प्रतिशत को बढाने के लिए व्यापारिक फसलों को प्रोत्सान करना चाहिए।

fu"d"k %& अतः हम कह सकते है कि भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था कि रीड है। कृषि विकास से कृषि क्षेत्र में नई तकनीको के प्रयोग से कृषि विकास में तेजी से वृद्धि देखी गई है जिससे मध्यप्रदेश में कृषि विकास हुआ है

I UnHk %&

1. कुमार प्रमिला एवं शर्मा श्री कमल 2005 कृषि भूगोल मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
2. कमलेश एस.आर 1996 विलासपुर संभाग में कृषि विकास का स्तर तक भौगोलिक अध्ययन वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर
3. डॉ. प्रमिला कुमार एवं श्री कमल शर्मा मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
4. जिला सांख्यिकी पुस्तीका

e/;in'k e: df"k fodkl % ,d fo'y"k.kkRed v/;;u

tkQj ftykuh
रसायनशास्त्र, शा.बिछुआ महा. छिंदवाड़ा

d'k ekgEen vlkjh
अर्थशास्त्र, अ.प्र. सिंह वि.वि., रीवा

iLrkouk %& भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। मध्यप्रदेश भारत के उन राज्यों में है, जहाँ कृषि उत्पादन बहुतायत में किया जाता है और वर्तमान में कृषि उत्पाद क्षेत्र में प्रयुक्त राज्यों में से एक है। मध्यप्रदेश में विभिन्न प्रकार की फसलें पैदा की जाती है। जिनमें गेहूँ एवं सोयाबीन प्रमुख है। यहाँ के कोसे उत्पादन भी प्रमुखतः से किया जाता है जिससे बनी चीजें निर्यात की जाती है। विगत कई वर्षों से मध्यप्रदेश के कृषि कार्यमय पुरस्कृति किया गया है। कृषि व्यवस्था में आधुनिक तकनीक, उन्नत किस्म के बीच एवं खाद्य सिंचाई को प्राथमिकता दी जाती है जिन कारणों से कृषि उत्पादन में आसातीत वृद्धि हुई है। जो राज्य के साथ–साथ देश के सम्पूर्ण आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हुई है।

'kk/k ifof/k %& शोध पत्र तैयार करते समय सांख्यकीय शोध प्रविधि एवं पत्रिकाओं का पर्याप्त प्रयोग किया गया है। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत के प्रमुख संकलन वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण तत्पश्चात् निष्कर्ष निकाला गया है निर्दशन का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार एवं अवलोकन पद्धति का भी पर्याप्त प्रयोग किया गया है।

mnns'; %&

- मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन का अध्ययन करना।
- मध्यप्रदेश कृषि विकास के कारणों का पता लगाना।
- कृषि विकास में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करना।
- कृषि उत्पादन में आने वाली बाधाओं को सुझाव पूर्वक प्रस्तुत करना।
- मध्यप्रदेश कृषि विकास में पर्याप्त अवसर प्राप्त है।
- मध्यप्रदेश में कृषि विकास के लिए पर्याप्त विकास नहीं किया गया है।
- मध्यप्रदेश कृषि विधिकरण पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है।
- कृषि कास्तकार में शासन द्वारा पर्याप्त बजट नहीं कराया गया है।

fo"k; fo'y"k.k %& आजादी के पश्चात् कृषि विकास के क्षेत्र में पंचवर्षी योजनाओं के माध्यम से योजनाएं तैयार की गई है। मध्यप्रदेश में भी अपनी योजनाओं में कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता में रखा गया है। इस क्षेत्र में शासन की योजनाओं को वृहद रूप में लागू कर तैयार कर आगे बढ़ाने का प्रयास किया गया है। कृषि विभाग उद्योग विभाग एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सम्भावित प्रयास किया गया है। उसी का परिणाम है कि मध्यप्रदेश आज कृषि क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश बन गया है। कृषकों में शिक्षा एवं जागरूकता तथा विभिन्न विधियों को अपनाएं जाने के कारण कृषि में पर्याप्त उन्नत हुई है। कृषि विपणन में भी सुधार होने के कारण कृषि उत्पाद को अपने उपज का उचित मूल्य प्राप्त होने लगा है। इसके लिए कृषि उपज मण्डियों की स्थापना की गई है। यहाँ पर कृषि उत्पादों को उचित मूल्य पर लेकर संचित रख–रखाव द्वारा सुरक्षित रखा जाता है तथा विभिन्न व्यावसायिक विक्रेताओं को उसकी बिक्री कर उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जाता है।

मध्यप्रदेश कृषि उत्पादन की पाँच वर्षों के दौरान बागवानी फसलों के क्षेत्र, उत्पादन और उत्पादकता का विवरण प्रस्तुत है।

ifjdYiuk %&

lkj.kh Øekad&1
ckxokuh Qlyksa dk {ks=] mRiknu vkSj mRikndrk 2017&18
¼{ks=&ehVj] mRiknu&,e-Vh-] mit&eh-@Vu@gs- esa½

Ø-	o"kZ	{ks=	mRiknu	mRikndrk
1.	2013—14	24.5	280.8	11.46
2.	2014—15	23.2	277.7	11.96
3.	2015—16	25.5	286.2	11.68
4.	2016—17	24.8	300.6	12.10
5.	2017—18 (प्रपत्र अनुमानत:)	24.9	305.4	12.3

स्त्रोत – अर्थशास्त्र सर्वेक्षण के आधार पर

lkj.kh Øekad&2
izeq[k Qlyksa dk {ks=] mRiknu ,oa mit
¼{ks=&yk[k gS-] mRiknu&fefy;u Vu] mit&fdxzk-½

Qly& {ks= ¼yk[k gs-½	2014&15	2015&16	2016&17
चावल	441.10	724.99	431.94
गेहूँ	314.65	304.18	305.97
मोटा अनाज	251.70	243.89	247.72
दलहन	235.54	249.12	294.65
गन्ना	50.66	49.27	43.89
कपास	128.19	122.92	188.45
पटसन	8.10	7.82	7.66
Qly&mRiknu ¼fefy;u Vu esa½	2014&15	2015&16	2016&17
चावल	105.48	104.41	110.15
गेहूँ	86.53	92.29	98.38
मोटा अनाज	42.86	38.52	44.19
दलहन	17.15	16.35	22.95
गन्ना	362.38	348.45	306.72
कपास	34.80	30.01	33.09
पटसन	11.13	10.52	10.60
Qly&mit ¼fdyksxzke½	2014&15	2015&16	2016&17
चावल	2891	2400	2550
गेहूँ	2750	8034	3216

मोटा अनाज	1703	1579	1784
दलहन	728	656	779
गन्ना	71512	76720	69886
कपास	462	415	519
पटसन	2473	2421	2490

2017–18 के आधार पर
स्त्रोत– अर्थशास्त्र सर्वे के आधार पर

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि समय के साथ–साथ मध्यप्रदेश में कृषि उत्पादन की पर्याप्त वृद्धि हुई है। यद्यपि मौसम की प्रतिकूलता शासन द्वारा पर्याप्त सहायता न मिलना कृषिको की अज्ञानता एवं अन्य अवरोधों के कारण कृषि उत्पादन में उतार–चढ़ाव आता रहा है।

leL;k,a %& मध्यप्रदेश में कृषि विकास के साथ–साथ कृषि उन्नत में बाधाएँ भी आती है जिनमें प्रयुक्त रूप से अति एवं अल्प वर्षा, ओले, पाला, समय पर बोनी, कीटों का प्रकोप, उत्तम बीजों का अभाव कृषि यंत्रों का पर्याप्त प्रयोग न होना आदि कई प्रकार के दोष है।

lq>ko %&

- कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता के तौर पर और सतर्कता के साथ लिया जाना चाहिए।
- शासन को समय–समय पर कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषिको को प्रशिक्षण व सुझाव भी देना चाहिए।
- मौसम से बचाव, उत्तम बीच एवं खाद की आपूर्ति समय पर की जानी चाहिए।
- शासन द्वारा कृषकों को लिए विभिन्न संचार माध्यमों से प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।
- भण्डारण व्यवस्था गाँव–गाँव में किया जाकर सुरक्षित भण्डार बनाये जाना चाहिए।
- तत्काल व्यापारियों को कृषि उत्पादन बेचकर कृषि उत्पादकों तक पहुँचाया जाना चाहिए।

fu"d"k %& कृषि मध्यप्रदेश की दृढ़ है इसकी उन्नत के लिए पर्याप्त प्रयास किये जाने चाहिए। कृषि की दशा बिगड़ जाने पर सम्पूर्ण आर्थिक दशा बिगड़ जाती है। अतः इसके लिए सतर्कता पूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिए।

lanHkZ xzUFk lph %&

- मध्यप्रदेश एक सामान्य परिचय, 2018
- प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2018
- इन्टरनेट

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k ,o xkeh.k fodkl

Mk- jktdekj xkre
मार्गदर्शन, स. प्राध्यापक गों.से.अर्थ वाणिज्य (स्वशासी)
vkjrh vfgokj
शोधार्थी, पी.एच.डी.(वाणिज्य)

lkjka'k :– हमारे देश में कृषि विकास के बिना ग्रामीण विकास की अवधारणा एक स्वप्न की तरह है कृषि विश्व की समस्त मानव जाति मे जीवन के लिए आधारभूत एवं अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति का अपरिहार्य आधार है। अति प्राचीन काल की सभ्यताओं से मिले अवशेषों से सिद्ध होता है कि भारत ही नही बल्कि विश्व की सभी सभ्यताओं एवं निवासियों की आजीविका का आधार कृषि ही रही है। यह कहने में कोई अति शंयोक्ति नही होगी कि कृषि का इतिहास मानव सभ्यता का इतिहास है इसी कारण कृषि को मानव सभ्यताओं की जननी कहा जाता है आज कृषि क्षेत्र में काफी को एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते है जिससे हम कृषि को एक व्यवसाय के रूप में अपना सकते है ग्रामीण विकास हेतु न केवल तकनीक का विकास करना बल्कि उसका प्रचार और प्रसार करना है स्तर पर कृषि भूमि संसाधन और ग्रामीण रोजगार से संबंधित तीन प्रमुख विभागों ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत इन तीन महत्वपूर्ण पहलों को संयुक्त रूप से अपनाया है ताकि इनका पहलों को संयुक्त रूप से अपनाया है ताकि इनका कियान्वयन साझा तौर पर हो जिससे विकास कार्यक्रमों का फायदा अंतत किसानों तक पहुंच सके।

भारत गांवो का देाा है और कृषि भारत की आत्मा है (महात्मा गांधी)

[kkt 'kCn – कृषि व ग्रामीण विकस पंचायती राज स्वसहायता समूह।

iLrkouk :– भारत कृषि प्रधान देश है जहां गांव के लोगो की आजीविका का साधन कृषि है भारत की प्राकृतिक दशा जलवायु तथा आधारित किया है मानव ने सबसे पहले अपनी आजीविका की खोज जमीन से की थी भारतीय कृषि केवल पेशा ही नही बल्कि जीवन थापन की प्रकिया है भारत में कृषि उत्पादन से बडें बडें उदोगों को संचालित किया जात है जिससे कृषि रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने रोजगार बनाए रखने तथा विदेशी अर्जित करने में अति महत्वपूर्ण है भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में जहां 68 प्रतिशत से ज्यादा आबादी ग्रामीण क्षे़त्रों में निवास करती है उत्पादकता बढाने और आर्थिक वृद्धि के लिए तकनीकी इनपुट वेहद आवश्यक है वर्षा जल का संग्रह कृषि वाले इलाकों में सिचाई के प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रधानमंत्री कृषि सिचाई योजना का स्तंभ समन्वित वाटरशेड प्रबंधन कार्यक्रम को पानी और पर डॉप मोर कृषि पानी की हर बंद से अधिक फसल शामिल है आज भारत में छः लाख से अधिक गांव है जहां कुल आबादी को दो तिहाई हिस्सा रहता है जबकि स्वंतत्रता प्राप्ति के समय यहां देश की आबादी का लगभग 85 प्रतिशत शाब रहता था। शहरी कारण की बढती दर के अतिरिक्त शहरी आबादी मे लगातार वृद्धि के लिए ग्रामीण लोगों का बडे पैमाने पर शहरों में रोजगार के अवसरों ओर रोजगारा के अवसरों और रहन सहन की बेहतर जा सकता है अधिकांश गांवों में अभि भी बुनियादी सुविधाओं पानी सफाई व्यवस्था बिजली खाना पकाने की स्वच्छ उर्जा सडकों स्वास्थ्य शिक्षा संचार की कमी है महात्मागांधी ने अपनी ग्राम स्वराज्य की कल्पना मे कहा है वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी अहम जरूरतों के लिए अपने पडोसी पर भी निर्भर नही रहेगा और फिर बहुतेरी जरूरतों के लिए जिनमें दूसरे का सहयोग अनिवार्य होगा वह पस्पर सहयोग से काम लेगा उनकी ग्राम स्वराज की संकल्पना को बाद मे भारतीय संविधान निर्माताओं ने मूर्त रूप देने का प्रयास किया जिसका स्वरूप पंचवर्षीय योजनाओं पंचायती राज व्यवस्था राष्ट्रीय आय एंव रोजगार वृद्धि के कारकों में शक्तिशाली सिद्ध हुआ।

'kks/k d mnns'; :–

1. ग्रामीण विकास हेतु भारतीय किसानों को कृषि तकनीकों के माध्यम से प्रेरित करना।

2. कृषि विकास हेतु खेतों एवं फसलों के लिए विभिन्न प्रेरक तत्व मौजूद है इसका अध्ययन करना।

df"k o xkeh.k fodkl %& भारत असल मे अपने गांवो मे बसता है विगत वर्षो मे सरकार द्वारा कृषि व ग्रामीण विकास पर जोर देने का प्रयास किया गया फिर भी कृशि पर निर्भर व गांवो में बसने वाले लोग सुविधाओं की कमी से जूझ रहे है और उपयुक्त स्वास्थ व शैक्षिक सुविधाओं के साथ ग्रामीण व सामाजिक आधार मूल संरचना के संबंध में विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत है वित मंत्री ने कृषि व ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदुढ करने के लिए 2022 तक किसानों की आय दो गुनी करने की प्रधानमंत्री की इच्छा जो एक महत्वांकाक्षी लक्ष्य है कम लागत पर अधिक उत्पादन पर जोर दिया है 86 प्रतिशत से अधिक लघु व सीमांत किसानों के हितों का ध्यान रखने व 1290 करोड रू में निवेश के साथ 42 मेगा फुड पार्क की स्थापना हेतु मोजूदा 22000 ग्रामीण हाट को ग्रामीण कृषि बाजार में अपग्रेड करने की वित मंत्रालय की घोषणा से कृषि की उत्पादकता बढाने मे काफी मदद मिलेगी मत्स्य पालव व पशु पालन करने वाले किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड प्रदान करने के उनके कार्यशील पूंजी अपेक्षाओं को पूरा करने व उनकी आय बढानें में मदद मिलेगी ग्रामीण विकास हेतु निम्न क्षेत्रो में किए गए सरकारी प्रयास।

1. ग्रामीण आवास
2. ग्रामीण स्वच्छता
3. ग्रामीण नवोन्मेश
4. विपनण सहयोग
5. कौशल निर्माण के लिए व्यापक आयोजन

ipk;rh jkt %& भारतीय संविधान मे अनुच्छेद 40 में कहा गया है राज्य ग्राम पंचायतों का गठन करने के लिए कदम उठाएगा और उसको ऐसी शक्तियॉ और अधिकार प्रदान करेगा जो उन्हें स्वायत शासन की इकाईयों के रूप में कार्य करने योग्य बनाने के लिए इकाईयों के रूप में कर्ा करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हो आजादी के बाद पंचायती राज व्यवस्था लागू करने के लिए वर्श 1952 में सामुदायिक विकास कार्यक्रम की स्थापना की गई किन्तु जागरूकता के अभाव में ग्रामीणों ने रूचि नही दिखाई 73 वां संविधान संशोधन पंचायती राज अधिनियम स्थानीय स्वशासन के इतिहास में यह एक ऐतिहासिक घटना है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार यदि हमारी कृषि असफल हो जाती है तो हम असफल हो जायेगे सरकार असफल हो जागी राष्ट्र असफल हो जाएगा हमारे पास कोई आशा नही होगी सिवास इसके कि हमें कृषि को सफल बनाना है।

पंचायती राज संस्थाओं ने ग्रामीण उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करने में योगदान दिया है केन्द्र सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं को स्थानीय स्तर पर लागू करने उससे अपेक्षित परिणाम दिखाने में पंचायते महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

Lolgk;rk leg %& राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन अगले पांच वर्षो मे देश भर के निर्धन परिवारों को स्वरोजगार से जोडेगा आज देश की उकरोउ महिलाएॅ स्वसहायता समूहों से जुडकर इस कार्यक्रम के माध्यम से रोजगार पा रही है। ग्रामीण विकास मंत्री ने छोटे छोटे ऋण देने वाली सूक्ष्म वित संस्थाओं के लिए कानूनी यप से प्रावधान किए जाने की आवश्यकता पर भी बल दिया ताकि वे स्वसहायता समूहों के कामकाज पर कोई प्रभाव डाले बिना अपना काम ठीक से अंजाम दे सूक्ष्म वित संस्थाओं और स्वसहायता समूहों हुए वित्तीय समावेशन का रास्ता खुल सकता है स्वसहायता समूहों को राष्ट्रीय पुरूस्कार प्रदान करने का उददेश्य सामुदायिक संस्थानों के असाधारण प्रदर्शन को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करना तथा समुदाय के गरीब सदस्यों में सम्मान की भावना जागृत करना है।

mi lgkj %& भारत देश कृषि प्रधान है जिसकी लगभग दो तिहाई आबादी गांवो में निवास करती है। कृषि विकास कार्यक्रमों एवं विभिन्न तकनीकों को सरकार द्वारा बढांवा देना चाहिए जिससे राष्ट्रीय आय मे वृद्वि के साथ साथ ग्रामीण जन विकसित हो सके मूलभूत सुविधाएॅ जैसे शिक्षा बिजली एवं विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामवासियों उपलब्ध कराना जिससे कृषि उत्पादन का स्तर बडें एवं ग्रामीण विकास समुचित स्तर पर हो प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा समय समय पर फसलों का निरीक्षरण करना एवं ग्रामीण

विकास की योजनाओं का प्रभाव ग्रामीण में देखना चाहिए एवं विचार विमर्श किया जाना चाहिए।

lanHk xzFk %&

1. जसवाल आर.एस.(2001) क्षेत्रीय ग्रामीण बैकों द्वारा प्रदत्त कृषि साख का विश्लेषण महाकौशल क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के विशेष संदर्भ में पृष्ठ
2. मरावी सदन महिला सशक्तिकरण में संवैधानिक प्रावधान की भूमिका एक अध्ययन Vol 3 Nov 2016 पृष्ठ.स 39.41
3. योजना मार्च 2018 पृ.स.3–5
4. कुरूक्षेत्र ग्रामीण विकास को समर्पित जुलाई 2018
5. कुरूक्षेत्र नवम्बर 2018 पृ.सं. 54

ISSN : 2394-3580 **Swadeshi Research Foundation** Vol. – 6, No. - 4 Feb. 2019

A Monthly Journal of Multidisciplinary

International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact factor-4.2 Research Journal

df"k ,oa i;kZoj.k

dq- jk/kk ikl h

शोधार्थी, गो. से. अर्थ वाणिजय महाविद्यालय (स्वशासी) जबलपुर

Mk- v'kksd lkuh

मार्गदर्शक, विभागाध्यक्ष वाणिज्य संकाय, हवाबाग महिला महाविद्यालय, जबलपुर

Lkkjka'k %& कृषि आजीविका का एक महत्वपूर्ण साधन है। क्योंकि यह खेती और पशुपालन के माध्यम से उत्पादों जैसे भोजन, खाद्य फाइबर और कई अन्य वांछित उतपादों का उतपादन करने की प्रकिया हे यह मानव उपयोग के लिए पौधों और जानवरों के विकास का प्रबंधन करने की एक कला है।

कृषि क्षेत्र में सुधार करके भी बेकारी की को कम किया जा सकता है सिंचाई साधनों में सुधार कृषि के यन्त्रीकरण, बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर, कृषकों को पर्याप्त सहायता व प्रशिक्षण देकर तथा कषकों को सहायक उद्योग–धन्धो (जैसे मछली पालन पशुपालन, मुर्गी पालन आदि) में प्रोत्साहन देकर कृषि के क्षेत्र में बेकारी को कम किया जा सकता है।

[kkst 'kCn %& कृषि एवं पर्यावरण विकास

iLrkouk %& कृषि भाब्द के लिए अंग्रेजी भाषा के ''एग्रीकल्चर'' ''फार्मिग'' और कल्टीवेशन जैसे व्यवहारवादी शब्दों का प्रयोग किया जाता है। विकास के प्रारंभिक चरण में कृषि जीवनयापन का ढंग मात्र होती थी परन्तु आज अनेक विकसित राष्ट्रों में कृषि खाद्यानों की पूर्ति के साथ–साथ उद्योगों को कच्चे मालों की पूर्ति के करती है अतः ऐसे देशों में कवि जीवन निर्वाहन स्तरकी सीढ़ी को पार करके औधोगिक व व्यापारिक स्वरूप प्राप्त कर चुकी है। विकासशील देशों में कृशि परम्परागत तकनीको पर की जाती है तथा कृषि का स्वरूप जीवन निर्वहन करना है। आम लोग कृषि के लिए खेती बारी शब्द का प्रयोग करते है। भारत गाँवों का देश है। और कृषि भारत की आत्मा है। ''भारत में कृषि की नयी–नयी तकनीकी बड़े नाटकीय रूप से सामने आयी प्रारम्भ से ही कृषि में परिवव्रन का प्रयास किये जा रहे है। कृषि की नयी तकनीकी के अन्तर्गत कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि प्राप्त करने हेतु उव्ररकों कीटनाशक, रसायनो एवं सिंचाइ साधनों का उपयोग किया जाने लगा है। इससे परिस्थितिकीय संतुलन विक्रत हो रहा है। कृषि उत्पादन में वृद्धि तो हो रही है। परन्तु इस वृद्धि की बहुत अधिक मात्रा में कीमत चुकानी पड़ रही है। भूमि की उर्वरक शक्ति का निरंतर क्षरण हो रहा है।

पर्यावरण शब्द दो शब्दों परि तथा आवरण से मिलकर बना है जिसमें परि शब्द का आशय चारों ओर से और आवरण शब्द का आशय घेरे या ढके हुए से होता है। अतः पर्यावरण से आशय मानव अथवा किसी जीवाधारी के चारा और पाये जाने वाले उस आवरण से है जिसमें रहकर जीव विशेष रूप से अपना जीवनयापन करना है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण से आशय उस समूची भौतिक व जैविक व्यवस्था से है। जिसमें जीवधारी निवास करते है। तथा वृद्धि कर अपनी स्वाभाविक प्रवृतियों का विकास करते है। पृथ्वी मानव का निवास क्षेत्र है। मानव जाति पृथ्वी पर स्वयं अकेले जीवित नहीं रह सकती है। क्योंकि मानव को अपनी खाद्य एवं आवश्यकताओ के लिए पृथ्वी के अन्य जीवधारियों पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः हम केवल मानव के पर्यावरण का अध्ययन न कर पृथ्वी पर मिलने वाले समस्त जीवधारियों के पर्यावरण का अध्ययन करते है।

पर्यावरण का अंग्रेजी पर्याय Environment शब्द से फ्रांसीसी भाषा के शब्द Enviorer से बना है। जिसका आशय समस्त परिवेश या परिस्थिति की से होता है। Enviorer मे वे समस्त दशाये व प्रभाव सम्मिलित होता है। जो जैव जगत को प्रभावित करता है।

पर्यावरण मे ऐसे समस्त सामाजिक, जैविक तथा भौतिक या रासायनिक कारकों का योग होता है। जो मानव के परिवेश से संबंधित होते है। मानवीय परिवेश का प्रत्येक तत्व एक संसाधन के रूप में होता है। जिसको मानव द्वारा उन्नत जीवन स्तर को जीने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार से उपयोग किया जाता है।

मानव का तात्कालिक हित उन स्थानो से जुड़ा रहता है। जिन पर यह निवास करता है। वायु जिसमें हम सांस लेते है। आहार जिसे हम ग्रहण करते है जल–जिसे हम पीते है। तथा संसाधन जिन्हें हम अपनी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ करने के लिए उपयोग में लाते है। पर्यावरण में समस्त भौतिक तथा जैविक परिस्थितियां सम्मिलित होती है। अतः पर्यावरण जीवों की क्रियाओं एवं प्रतिकियाओं को प्रभावित करने वाली समस्त भौतिक तथा जैविक परिस्थितियों का योग है। मिट्टी, जल, पौधो, वनस्पति खनिज आदि दशायें मानव को प्रभावित करती है। ये सभी पर्यावरण के अन्तर्गत सम्मिलित की जाती है।

mn~ns'; %&

1. कृषि में नयी–नयी तकनीको के प्रयोग का पर्यावरण पर प्रभाव।
2. पर्यावरण संरक्षण के लिए कृषि के नये नियमों की जानकारी प्राप्त करना।
3. कृषको को भू–संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करना।
4. पर्यावरण संरक्षण एवं जैविक खेती के लिए कृषको को जागरूक करना।

dfk i;kZoj.k %& कृषि एक ऐसी नवप्रवर्तन शैली और कृषि पद्धति है। जिसमें स्वदेशी जान के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान, आधुनिक उपकरण तथा प्रत्येक पहलु जैसे खेत की तैयारी, खेत का चुनाव, खरपतवार नियंत्रण, पौधे संरक्षण फसलोत्तर प्रबंधन, फसल की कटाई आदि जैसी महत्वपूर्ण कृषि पद्धतियों के उपयोग का कृषि कहते है। इस तरह की कृशि में संसाधनों का अनुकूलन होता है। जिसमें किसानों की दक्षता और उत्पादकता बढ़ती है। कृषि ने ना तो केवल भोजन की सामर्थ्य तथा जैव ईधन का उत्पादन को बढ़ावा है लेकिन हमारी पर्यावरणीय समस्याओं को भी बढ़ाया है। क्योंकि इस कृषि पद्धति में ज्यादा उपज देनी वाली विविधता के बीज और प्रचुर मात्रा में सिंचाई, जल, उर्वरक और कीटनाशको का उपयोग है।

Hk&{kj.k %& भूमि के कणो का अपने मूल स्थान से हटने एवं दूसरे स्थान पर एक़ होने की क्रिया को भू–क्षण या मृदा अपरदन कहते है कृषि में अत्याधिक जल आपूर्ति के कारण खेत के ऊपर की उपजाऊ मिट्टी का निश्कासन होता है जिसके कारण मिट्टी के पोषक तत्वों में लगातार कमी आने लगती है। जिसकी वजह से मिट्टी की उर्वरकता एवं उत्पादन में कमी हो जाती है। यह ग्लोबल वार्मिंग को भी प्रभावित करता है। क्योंकि अत्याधिक जल की कमी के कारण मृदा कार्बन वायुमण्डल में उत्सर्जित हो जाता है।

भूमि जन का प्रदूशित होना %& भूमि, जल, सिचाई के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत में से एक है कृषि में अत्याधिक नाइट्रोजन उर्वरक के प्रयोग से भूमि में नाईट्रेट को बढ़ावा मिलता है जो भूमि जल को दूषित कर देता है। इससे गंभीर बीमारियां हो सकती है जो ज्यादातर शिशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

ty vkj yo.krk %& कृषि के लिए जल निकासी का उचित प्रबंध करना बहुत महत्वूपर्ण है। लेकिन किसान उत्पादकता बढ़ाने के चक्कर में अत्यधिक जल आपूर्ति करने लगते है। जिसके कारण जल–जमाव हो जाता है। जो मृदा की लवणता को बढ़ाता है। और इस वजह से मृदा की उत्पादकता में कमी हो जाती है। जब किसी जलाशय या जलश्रोत को कृत्रिम या गैर कृत्रिम पदार्थों जैसे नाइट्रेटस और फॉस्फेट से समृद्ध किया जाता है तो सुपोषण कहलाता है। इसके कारण जल में बायोमास अत्याधिक हो जाता है। जिसके कारण जल में आक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है।

dhVuk'kd dk mi;kx %& कीटनाशकों को नष्ट करने और फसल उतपादन को बचाने के लिए कई कीटनाशको का उपयोग किया जाता है पहले कीटों को मारने के लिए आर्सेनिक, सल्फर, सीसा और पारा का इस्तेमाल किया जाता था फिर बाद में कीटनाशक DDT का इस्तेमाल किया जाने लगा लेकिन यह हानिकारक कीट के साथ लाभकारी कीट को भी नष्ट कर देता था ये कीटनाशक बायोड़िग्रे डेबल होते है जो मानव के खाद्य श्रंखला में जुड़ जाते है जो मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक है इसलिए आज के समय में कृषि के लिए जैविक खाद के इस्तेमाल पर जोर दिया जा रहा है।

इसलिए कृषि के लिए एग्रोनोमी के माध्यम से पौधों में संकरण कीटनाशको का इस्तेमाल और मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाने के लिए तकनीकी सुधार किये जा रहे है। जिससे कृषि उत्पादन को बढ़ाया जा सके

और साथ ही साथ मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़े।

एक्वाकल्चर के संबंध में, कई फॉस्फेट उपकरण उपयोग में हैं, जिसमें मछली के खेतों के लिए एक पर्यावरण विश्लेषण ग्रिड शामिल है जो कुल फॉस्फोरस निर्वहन पर आधारित है। इस ग्रिड का मुख्य उद्देश्य जलीय प्राप्त वातावरण की भार क्षमता के आधार पर मछली की खेती में फास्फोरस के पर्याप्त प्रबंधन को प्राप्त करना है। इसके अलावा, जलीय कृषि कार्यों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए, उपकरण उपयुक्त उपचार प्रणालियों और जलीय कृषि कीचड़ के पर्याप्त प्रबंधन के उपयोग के उद्देश्य से हैं। कुछ कृषि और जलीय कृषि गतिविधियाँ, जैसे मछली पालन और मछली पकड़ने के तालाब, जलीय पारिस्थितिक तंत्र के सामयिक या विसरित प्रदूषण के स्रोत हैं। प्रदूषण की मात्रा गतिविधि के प्रकार और ऑपरेशन के आकार और स्थान के अनुसार काफी भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, कुछ कृषि गतिविधियों में प्रत्यक्ष (जैसेः दूषित निर्वहन) और /या अप्रत्यक्ष (जैसेः मिट्टी का क्षरण) पानी की गुणवत्ता की हानि पर प्रभाव डालता है। कृषि गतिविधियों का संचयी प्रभाव कभी.कभी दबाव उत्पन्न कर सकता है जो प्राकृतिक गतिशीलता को महत्वपूर्ण तरीकों से बदलकर पारिस्थितिक तंत्र भार क्षमता से अधिक हो जाता है।

mi lgkj %& भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसकी लगभग दो तिहाई आबादी गांवों में निवास करती है। कृषि विकास कार्यक्रमों एवं तकनीको को सरकार द्वारा बढ़ावा देना चाहिए। एक सतत विकास के परिप्रेक्ष्य में और पानी, मिट्टी और जैव विविधता जैसे संसाधनों को संरक्षित करने के लिए, प्राकृतिक वातावरण और कृषि और जलीय कृषि सहित आर्थिक गतिविधियों के विभिन्न क्षेत्रों के विकास के बीच संतुलन होना चाहिए।

lUnHk xzFk %&

श्रीवास्तव लोकेश पाण्डेय अर्चना श्रीवास्तव ज्योति मिश्र दिनेश कुमार पर्यावरणीय अध्ययन मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी
राठी आर.एल.आधुनिक पर्यावरण विधि यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि. जयपुर
जैन एस. सी. ग्रामीण एवं कृषि विपणन कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
जोशी रतन पर्यावरण अध्ययन साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
www.jagranjosh.com
http://www.environnement.gouv.qc.ca